Reg. No. MAHHIN / 2008 / 26222

ISSN-2250-2335

समीचीन

(साहित्य-समाज-संस्कृति और राजनीति के खुले मंच की अर्द्ध वार्षिक-अव्यावसायिक पत्रिका)

पीयर रिव्यूड व यू. जी. सी. केयर लिस्ट में सम्मिलित जर्नल

शोध - मीमांसा अंक

32

• वर्ष-15 • अंक 32 • जुलाई - सितंबर 2022 • पूर्णांक 70 • मूल्य 100 रुपए

• प्रधान संपादक - देवेश ठाकुर • संपादक - डॉ. सतीश पांडेय

ISSN-2250-2335 Reg. No. MAHHIN / 2008 /26222

समीचीन

(साहित्य-समाज-संस्कृति और राजनीति के खुले मंच की त्रैमासिक-अव्यावसायिक पत्रिका)

पीअर रिव्यूड व यू. जी. सी. केयर लिस्ट में सम्मिलित जर्नल

प्रबंध संपादिका :
डॉ. रोहिणी शिवबालन
प्रधान संपादक-प्रकाशक :
डॉ. देवेश ठाकुर
संपादक :
डॉ. सतीश पांडेय
संयुक्त संपादक :
डॉ. प्रवीण चंद्र बिष्ट
डिजिटल संपादक :
डॉ. मनीष कुमार मिश्रा

संपादकीय-संपर्क :
बी-23, हिमालय सोसाइटी, असल्फा,
घाटकोपर (प.), मुंबई-400 084.
टेलिफोन : 25161446
Email: sameecheen@gmail.com
website-www.http//:
sameecheen.com

विशेष :
'समीचीन' में प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त विचार संबद्ध रचनाकारों के हैं। संपादक-प्रकाशक की उनसे सहमति आवश्यक नहीं है। सभी विवादों का न्याय-क्षेत्र मात्र मुंबई होगा। सभी पदाधिकारी पूर्णरूप से अवैतनिक।

परीक्षक विद्वत मंडल : (Peer Review Team)

1) डॉ. राम प्रसाद भट्ट
भारत-विद्या विभाग,
हैम्बर्ग विश्वविद्यालय, हैम्बर्ग, जर्मनी

2) प्रो. (डॉ.) देवेन्द्र चौबे
जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली

3) प्रो. (डॉ.) वशिष्ठ अनूप
हिन्दी विभाग, काशी हिंदू विवि., वाराणसी, (उ. प्र.)

4) डॉ. नरेन्द्र मिश्र
प्रो. हिंदी, मानविकी विद्यापीठ, इग्नू मैदानगढ़ी, दिल्ली 110068

5) प्रो. (डॉ.) करुणाशंकर उपाध्याय
प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, मुंबई विश्वविद्यालय, मुंबई

6) प्रो. (डॉ.) अनिल सिंह
अध्यक्ष, हिन्दी अध्ययन मंडल, मुंबई विश्वविद्यालय, मुंबई

7) प्रो. (डॉ.) सदानंद भोसले
प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, सवित्रीबाई फुले पुणे विद्यापीठ, पुणे

8) प्रो. (डॉ.) शरेशचंद्र चुलकीमठ
पूर्व अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, कर्नाटक विश्वविद्यालय, धारवाड़

9) डॉ. अरुणा दुबलिश
पूर्व प्राचार्य, कनोहरलाल महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय, मेरठ (उ. प्र.)

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक : देवेश ठाकुर ने प्रिंटोग्राफी सिस्टम (इंडिया) प्रा. लि., 13/डी, कुर्ला इंडस्ट्रियल एस्टेट, नारी सेवा सदन रोड, नारायण नगर, घाटकोपर (प.) मुंबई-400 086 में छपवाकर बी-23, हिमालय सोसाइटी, असल्फा, घाटकोपर (प.), मुंबई-400084 से प्रकाशित किया।

• वर्ष-15 • अंक 32 • जुलाई-सितंबर-2022 • पूर्णांक 70 • मूल्य 100 रुपए

सहयोग : एक प्रति रु. 100/-, वार्षिक रु. 400/-, पंच वार्षिक रु. 2000/-

सीधे समीचीन के खाते में भेजने के लिए : खाताधारक का नाम : समीचीन / sameecheen
A/C No. 60330431138, Bank of Maharashtra,
Dr. Ambedkar Road, Dadar, Mumbai. IFSC : MAHB0000045

17. दलित उपन्यासों में अतीत तथा समाजबोध - डॉ. मो. माजिद मियाँ 100-105
18. ध्रुवस्वामिनी में स्त्री-विमर्श - डॉ. ऐश्वर्या झा 106-111
19. पलायित श्रमिक वर्ग की अंतहीन पीड़ा और हिन्दी उपन्यास
- ओम प्रकाश 112-118
20. प्रयोगवाद के विविध वैचारिक स्वरूप की पृष्ठभूमि एवं परम्परा
- मनीष कुमार सिंह 119-122
21. इतिहास तिमिरनाशक में वैचारिकता - संजय कुमार 123-129
22. समकालीन हिन्दी कविता में अभिव्यक्त पीढ़ियों का अन्तर्विरोध
- डॉ. अखिल चन्द्र कलिता 130-135
23. सुधा ओम ढींगरा के कहानी संग्रह 'खिड़कियों से झाँकती आँखें' में संवेदना एवं मूल्य विघटन - योगेन्द्र सिंह (शोधार्थी),
- प्रो. नवीन चन्द्र लोहनी 136-142
24. समकालीन कविता का पर्यावरणीय संदर्भ
- डॉ. ऋषिकेश मिश्र 143-150
25. अज्ञेय की कथेतर रचनाओं में साहित्य चिंतन के तत्व
- कृष्ण कुमार साह 151-155
26. योग का विकास-एक भू-सांस्कृतिक दृष्टिकोण
- डॉ. चिन्ताहरण बेताल 156-163
27. ऑडियो विजुअल अनुवाद में रोजगार की नई संभावनाएँ
- नरेंद्र सिंह 164-170
28. झारखण्ड के आदिवासी समाज के मुद्दे और उनके समाधान में मीडिया की भूमिका - पंकज कुमार सहनी, शोधार्थी,
- प्रभात कुमार, शोधार्थी 171-178
29. प्राकृतिक संवेदना और नंदकिशोर आचार्य का काव्य
- डॉ. मुकेश कुमार शर्मा 179-187
30. देवनागरी लिपि को रोमन लिपि से मिलती चुनौतियाँ
- गजानन सुरेश वानखेडे 188-193
31. विजय कुमार संदेश की कविताओं में जीवन-विस्तार
- डॉ. अनिल कुमार सिंह 194-201

विजय कुमार संदेश के कविताओं में जीवन-विस्तार

डॉ. अनिल कुमार सिंह

पिछले एक दशक में हिंदी के उभरते हुए कवियों में विजय कुमार संदेश का नाम प्रमुखता से लिया जा सकता है। उनके दो काव्य संग्रह अंधेरे के विरुद्ध घोष और उजाले की ओर प्रकाशित हो चुके हैं। अंधेरे के विरुद्ध घोष संग्रह की कविताएँ जीवन के विभिन्न रूपों को प्रस्तुत करती हुई आशा के नए स्वरों को गुंजायमान करती दिखाई देती हैं। इन कविताओं में विद्रोह है, आशाएँ हैं, जीवन को नई दिशाएँ देने का संकल्प है और सबसे बड़ी बात यह है कि यह कविताएँ आज के संघर्षशील समय में व्यक्ति को नए सिरे से उठ खड़े होने की प्रेरणा देने वाली हैं। इस संग्रह की सबसे बड़ी उपलब्धि यही है कि इन कविताओं को पढ़कर पाठक जीवन के प्रति रागात्मक भाव से भर उठता है। जीवन में उसे कई विपरीत स्थितियों के होने के बावजूद जीने की संभावनाएँ नजर आती हैं और जीवन को डटकर जीने की प्रेरणा हासिल होती है।

इसमें कोई संदेह नहीं है कि आज का जीवन अत्यंत जटिल है। आज का मनुष्य विभिन्न प्रकार की जटिलताओं में सांस ले रहा है। बिल्कुल अलग तरह की सामाजिक, राजनीतिक प्रतिबद्धताएँ उसके सामने मुंह बाए खड़ी हैं। तकनीकी ने उसके जीवन को अत्यंत गतिमान बना दिया है और इस गति का मुकाबला करते-करते कई बार वह निराशा के और सफलताओं-असफलताओं के झंझावात में फँस जाता है और उसके भीतर गहरी निराशा पनपने लगती है। बढ़ते बढ़ते यह निराशा उसे जीवन राग से कहीं दूर ले जाती है। ऐसे में बड़ा जरूरी हो जाता है कि जीवन के सही संदर्भों से उसका परिचय कराया जाए और इन विपरीत परिस्थितियों से निकलने की प्रेरणा देने का काम किया जाए, जिसे विजय संदेश बखूबी निभाते हैं। उनकी इस संग्रह की कविताओं में आशा के दीप्त स्वर जगह-जगह भरे हुए मिलते हैं। आज के संदर्भों को लेकर उनके मन में कहीं कोई दुविधा नहीं है। इन सभी को समझते हुए जीवन में जिए गए बेहद संतुलित दृष्टिकोण का संदेश देते हुए वे कहते हैं कि -

श्रम और शक्ति का सही संतुलन / विकास का शिखर पथ है
बुद्धि और विवेक का सही संतुलन / ज्ञान का शिखर पथ है
धर्म और न्याय का सही संतुलन / चेतना का शिखर पथ है
प्रकृति और प्रगति का सही संतुलन / पर्यावरण का शिखर पथ है[1]

यही पथ जब भ्रष्ट होता है तो वैश्विक जीवन में विसंगतियां पैदा होती हैं। ऐसी कविताओं में कवि की दृष्टि संपूर्ण मानवता को आत्मसात करते हुए आगे बढ़ती है। वे किसी वर्ग, किसी जाति या किसी धर्म की बात नहीं करते बल्कि संपूर्ण मानवता केंद्र में होती है। उपर्युक्त इन्हीं संतुलनों के कारण सृष्टि का विकास क्रम सकारात्मक था परंतु इस संतुलन को बिगाड़ने के कारण सारी

समस्याएं पैदा हुई हैं। इन चंद पंक्तियों में कवि ने संपूर्ण विश्व की व्यथाओं का सारांश स्पष्ट कर दिया है। साहित्यकार सदा आशावादी होता है। साहित्य का धर्म ही है, समाज में आशा के दीपक को जलाए रखना और इसी आशा के साथ पुनः कवि कहता है -

हमने दैव-दुर्योग किन्हीं क्षणों में / यह संतुलन खोया है
परिणामस्वरूप आंसुओं की धार / सदियों रोया है
वह समय आ गया अब पास है / न हम खोएंगे न रोएंगे
भावी संततियों के लिए हर हाल में / संतुलन बनाएंगे।[2]

भारतीय संस्कृति में प्रकृति का साहित्यिक-सांस्कृतिक मान्यताओं और आम जीवन में अहम स्थान रहा है। भारतीयों का जीवन पूरी तरह से प्रकृति पर निर्भर रहा है और यहाँ मनुष्य के विकास के साथ जिस विज्ञान को विकसित किया गया, वह प्रकृति के अनुसार ही विकसित हुआ। उस समय के मनुष्य की किसी भी क्रिया या गतिविधि का पहला मानदंड यह होता था कि इसका प्रकृति पर क्या प्रभाव - दुष्प्रभाव पड़ेगा। उस अनुसार ही वह नए उपादानों को अपने जीवन का अंग बनाते थे। कवि विजय संदेश भी भारतीय परंपरा की इस प्रवृत्ति को जानते हैं और इसके महत्व से भलीभांति परिचित हैं। स्वयं उनका जीवन झारखंड की सुरम्य धरती पर बीता है और प्रकृति के प्रति एक अजनबी आकर्षण लगातार वे भी महसूस करते हैं।

प्रकृति के प्रति कवि की दृष्टि अत्यंत संवेदनामय है। प्रकृति को वे जीवनदायी शक्ति के रूप में देखते हैं। मनुष्य का सारा जीवन प्रकृति पर ही निर्भर है। इसीलिए प्रकृति के प्रति कवि के हृदय में अत्यधिक स्नेह का भाव है। प्रकृति ही है, जिसने मनुष्य को पहली बार व्यवस्थित होने का एहसास दिया। इसी एहसास को व्यक्त करते हुए संवेदनशील ढंग से कवि लिखता है-

जंगलों के घने पेड़ों से / चट्टानों पर उगे पेड़ों से
कंदराओं - गुफाओं से लगे पेड़ों से / उसे मिलती थी छाँह, प्राणवायु
ज्वर-पीड़ित होने पर / लघु पौधों से मिलती थी महौषधि
क्षुधा की होने पर अनुभूति / मिलते थे मीठे रसीले फूल- फल अमृत-सत्व
शाखा और पत्तों को कर एकत्र / पहली बार बनाया था उसने पर्ण रचित घर
पहली बार लगा उसे, यह है मेरा घर।[3]

मनुष्य और प्रकृति के सहज रिश्ते को कवि ने प्रकृति और मनुष्य कविता में अत्यंत संवेदनापूर्ण ढंग से चिन्हित किया है। यह कविता प्रकृति के प्रति उनके अगाध लगाव और समर्पण को अभिव्यक्त करती है। विजय संदेश मानवीय मूल्य और मनुष्य की अदम्य शक्ति पर विश्वास करने वाले कवि हैं। उनकी कविता में जीवन की अलग-अलग स्थितियों से संघर्ष करने का भावात्मक संदेश विद्यमान है। यह सकारात्मकता उनकी कविताओं को एक नया स्वर प्रदान करती है।

आरंभिक संघर्ष प्राकृतिक कठिनाइयों से विजय पाने के संघर्ष में किसी भी प्रकार की अमानवीय या शोषणकारी परिस्थितियाँ नहीं थीं। सभी मनुष्य किसी भी संकट को एक समान रूप से ग्रहण करते थे और उस संकट के विरुद्ध एक साथ ही संघर्ष का बिगुल भी बजाते थे। परंतु सभ्यता जैसे-जैसे विकास के लिए आगे बढ़ी, वैसे-वैसे मनुष्य में बेईमानी और शोषणकारी प्रवृत्तियों का भी जन्म हुआ। यहीं से सारी विसंगति शुरू हुई और जिन उद्देश्यों की पूर्ति के लिए मनुष्य ने समाज का निर्माण किया था, वे धीरे-धीरे खंडित होने लगे। समाज में कई प्रकार के वर्गों का निर्माण हुआ, जातियाँ चलन में आयीं। धर्म का विकास मानव जीवन के आध्यात्मिक उत्थान के लिए किया गया था परंतु इतिहास गवाह है कि इसका दुरुपयोग दीन-दुखी और कमजोरों के शोषण में किया जाने लगा। यह अत्यंत त्रासद स्थिति थी। कवि विजय संदेश इन विभिन्न स्थितियों के प्रति लड़ने का, संघर्ष करने का अद्भुत संदेश देते दिखाई देते हैं-

यही प्रकृति का नियम है / यही प्रकृति का विधान है /प्रकृति छाँटती है उसे /
जो महा अयोग्य है, / संघर्ष कराकर, वही / बनाती योग्य है।
योग्य जन जीता है / यही बाइबिल, यही कुरान / और यही गीता है।[4]

संपूर्ण प्रकृति और उसके विभिन्न उपादानों से कवि का गजब का जुड़ाव है। कवि प्रतीक रूप में उन्हें अपनी कविता में सम्मिलित करके मनुष्य को संघर्ष की अद्भुत प्रेरणा देता है। उसके लिए यह संघर्ष एक निरंतर चलने वाली प्रक्रिया है। उसके अनुसार यह संघर्ष एक दिये की तरह होना चाहिए जो सूर्य के सामने भी पूरी शक्ति से अपनी सामर्थ्य के अनुसार दीप्ति देने का प्रयास करता रहे और उसकी यह सामर्थ्य देखकर सूर्य भी चकित हो जाए -

चकित सूर्य / देखकर अदम्य साहस / शौर्य उसका /उसने लघुकाय दीये /
दिया अभय वरदान / कि जब तक धरती है / हवा है, जीवन है /ग्रह, नक्षत्र, चंद्र और तारे हैं/
तुम मेरे सह-यात्री बने रहोगे / करते रहोगे युद्ध / अंधेरे के विरुद्ध।[5]

जीवन के अंधेरों के विरुद्ध संघर्ष की प्रेरणा देने वाली ये पंक्तियाँ कवि के अदम्य संघर्ष और आशावाद को सूचित करती हैं। सूर्य को वे पुनर्जागरण के प्रतीक की तरह प्रयोग में लाते हैं। संघर्ष का अर्थ है - लड़ना - मरना और फिर उठ खड़े होना। यह संघर्ष अनवरत चलने वाला संघर्ष है। एक-दो पराजय से हमें थम नहीं जाना चाहिए। थमना मृत्यु से भी कहीं ज्यादा भयंकर है। यथास्थिति को स्वीकार कर लेना अत्यंत त्रासद है। अतः कवि का मंतव्य है कि स्थिति को बदलने का प्रयास करने के लिए लगातार संघर्ष चेतना का बने रहना और उस अनुरूप संघर्षों से गुजरना एक उदात्त प्रक्रिया है। एक अन्य कविता नया सवेरा में वे अपने आशावादी स्वर के अनुरूप सूर्य के माध्यम से संघर्षशील समाज के पुनः उठ खड़े होने और अपने संघर्ष को फलीभूत करने के प्रति अभिव्यक्त करते हैं -

कि तुम कल फिर आओगे लौटकर / हर अंधेरे के विरुद्ध

नई ऊर्जा, नई रोशनी / औ नया सवेरा लेकर।[6]

कवि अपने भावात्मक संदेशों के पीछे छिपी हुई निर्मम सच्चाई को भलीभाँति जानता है। शोषण जैसी प्रवृत्तियों का अंत करने वाले संघर्ष बलिदान और त्याग की अपेक्षा रखते हैं। हजारों वर्षों की दुष्ट प्रवृत्तियों और कुप्रथाओं को मिटा पाना इतना आसान नहीं है परंतु चुप बैठना भी उपयुक्त नहीं है। दुनिया के हर कोने में संघर्ष का यह स्वर किसी न किसी रूप में विद्यमान रहा है। यह संघर्ष उनकी लोक कथाओं और साहित्यिक परंपराओं में हमें स्पष्ट रूप से देखने को मिल जाता है। हर युग में न्याय और अन्याय का संघर्ष विद्यमान रहा है, और इतिहास गवाह है कि अन्याय सदा विजयी रहा है। इसीलिए कवि की आस्था न्याय की विजय पर है। इसके लिए वह धैर्य की अत्यंत आवश्यकता अनुभव करता है -

हर कदम के बढ़ जाने के साथ / लक्ष्य निरंतर करीब होगा, /थोड़े ही अंतराल में एक /
बड़ा-सा कारवां तुम्हारे साथ होगा, / उदीयमान सूरज की तरह / अपना प्रकाश स्वयं बनो,
धकेल कर हाशिए में अंधेरे को / दूसरों के लिए ज्योति-पुंज बनो।[7]

कवि उन सवालों से जूझता भी दिखाई देता है जो हमेशा से प्रासंगिक रहे हैं। जाति, धर्म, नस्ल आदि के भेदभाव मनुष्य के पैदा किए हुए हैं। प्रकृति ने तो सबको समान बनाया है। अपने संसाधनों को समान रूप से सबको दिया है। पर मनुष्य ने इन्हें अपनी कुत्सित आकांक्षाओं के लिए कब्जे में कर लिया है। कुछ लोगों को शोषितों में परिवर्तित कर दिया है और उनके हिस्से की धूप, हवा, जमीन सब कुछ पर कब्जा कर लिया है। कवि के सामने यह सभी सवाल उभरते हैं और वह कहता है -

एक सूरज, एक धरती / धरती घिरी क्षितिज से / क्षितिज से घिरी धरती में /
वही हवा है, वही प्रकाश है / वही आकाश है / वही ऋतु है, वही मौसम है
वही गंध है, वही सुवास है। / फिर क्यों धरती पर फर्क है /आदमी और आदमी में /
भेद है धर्म में, कर्म में / नस्ल में, जाति में / विभेद है।[8]

यह धरती हमेशा ऐसे ही काले बादलों से घिरी रही है। ऐसे ही आग की लपटों से घिरी रही है। हजारों वर्षों का इतिहास इस बात का गवाह है। कवि ने इतिहास के पन्नों को उलट कर इन सभी का जैसे मूल्यांकन किया है। कवि में इन सभी समस्याओं के प्रति एक गहरी इतिहास चेतना मौजूद है। उसका अध्ययन इनकी जड़ों पर प्रहार करने के लिए है। इन्हीं सामाजिक विभेदों के प्रति कवि ने इतिहास दृष्टि के अनुसार विचार किया है। वह कहता है -

इतिहास ने कहा - / मैंने देखी है सदियाँ / उथल-पुथल धरती की /
खिलती कलियाँ, मुरझाती कलियाँ अनुभव मेरा कहता हूँ तुमसे /
कि संघर्ष है भले ही वर्तमान तुम्हारा / पर उज्जवल है भविष्य तुम्हारा /
स्वाभिमान संचित पूँजी है / बीता कल थाती है।[9]

प्रकृति में सबकुछ बराबर से उपस्थित है। मनुष्य यदि उसका उपभोग विवेकपूर्ण ढंग से करे तो कोई भी समस्या आड़े नहीं आने वाली है। परंतु मनुष्य अत्यंत महत्वाकांक्षी प्राणी है। इसी के चलते उसने शोषण के विभिन्न तरीकों को ईजाद किया है। जातिवाद, धर्म आदि इसी प्रकार के उपकरण है, जिनका सहारा लेकर हजारों वर्षों से आबादी का एक छोटा सा हिस्सा आबादी के बड़े हिस्से को नियंत्रित कर रहा है। क्रूरता और शक्ति उसके अस्त्र हैं। जाति, वर्ण और धर्म के बंधन में बाँधकर उसने एक बड़ी आबादी को जैसे मानसिक रूप से इसलिए तैयार कर दिया है कि वह यथास्थिति को अपनी नियति मानकर जिये। कभी विद्रोह या अपनी नियति को बदलने का प्रयास भी न करे। परंतु यह छल बहुत समय तक चलने वाला नहीं है। जिस दिन शोषित वर्ग की चेतना जागेगी, उसका अंत निश्चित है। मनुष्य ने अपनी निहित बुराइयों के चलते न तो समाज को और न ही प्रकृति को स्वस्थ बनाए रखा। उसकी इन्हीं क्रूरताओं का संकेत करते हुए कवि कहता है -

सृष्टि के नियमों का / जब-जब बेजा इस्तेमाल हुआ / प्रगति विकास के नाम पर /
शोषण-दोहन का जब-जब / नया इतिहास बना, तब तब /
रौद्र हुई सृष्टि, उसकी भौहें तनी / कहीं धरती हिली / कहीं भूडोल हुआ /
तो कहीं पहाड़ की छाती फटी / कहीं पर्वत धराशायी हुए।[10]

आधुनिक सभ्यता के लिए विज्ञान को वरदान की तरह माना जाता है लेकिन जब यह विज्ञान संवेदना रहित हो जाता है, तो वह ध्वंसकारी बन जाता है। ज्ञान तो ज्ञान है, जैसे हाथों में पड़ेगा, परिणाम वैसे ही देगा। कल्याणकारी हाथों में पढ़ता तो सृष्टि का कल्याण होता परंतु ध्वंसकारी हाथों में पड़ गया तो आज पूरी सृष्टि परमाणु बमों के ऊपर बैठी दिखाई दे रही है। एक भी विस्फोट पूरी सृष्टि को, पूरी धरा को छिन्न-भिन्न करके रख देगा। इस जगह पर कवि कविता के महत्व को स्थापित करते हुए संवेदनशील बनाने की उसकी भूमिका को सराहते हुए दिखाई देता है। सचमुच बिना संवेदनशीलता के विज्ञान का उतना महत्व नहीं है। और यह संवेदनशीलता कविता के माध्यम से भलीभाँति पोषित होती है। कवि कहता है -

कविता केवल कुछ वर्णों की संगति नहीं / यह जीवन शैली है विवेक की
कविता केवल शब्दों की झंकृति नहीं / मधुर जीवन संगीत है यह मंन की
विज्ञान और कविता, कविता और विज्ञान / दोनों जरूरी है, गति-अगति के लिए
मनुष्य के मानसिक-आत्मिक विकास के लिए।[11]

इस संग्रह में कुछ कविताएँ डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर, श्योराज सिंह बेचैन और नेल्सन मंडेला जैसे व्यक्तित्व पर लिखी गयी हैं, जिससे उनकी वैचारिक आस्थाओं का भी पता चलता है। ऐसे संघर्षशील महामूर्तियों का समाज के लिए महत्व, और मनुष्यता के लिए उनके योगदानों को सदा याद रखना चाहिए, ऐसी कवि की धारणा है। ये व्यक्तित्व अपने संघर्षशील जीवन के

लिए जाने जाते रहे हैं। उन्होंने अपने लिए नहीं बल्कि पूरे समाज के लिए अपने को समर्पित कर दिया। उनका जीवन एक दीये की भाँति आरंभ हुआ था परंतु अपनी संघर्ष चेतना के कारण वे जीवन के अंत में एक विशाल सूर्य में परिवर्तित हो गए। डॉ. अंबेडकर के प्रति अपनी भावनाएँ व्यक्त करते हुए वे कहते हैं -

न्यायशास्त्र के तुम रथी / दर्शन में तुम-सा कोई नहीं।
तुम क्रांतिवीर, तुम कर्मवीर / धरती पर तुम-सा कोई नहीं /
आसमां का एक सितारा तुम्हारे नाम होगा / धरती का भूगोल - इतिहास साथ होगा
छेड़ी है जो जंग, मुक्ति की खातिर / सारे जहां का हाथ तुम्हारे हाथ होगा।[12]

हिंदी में दलित विमर्श करने वाले कई ऐसे साहित्यकार हुए जिन्होंने निम्न वर्ग से निकलकर अपने लिए जीवन की राहों का स्वयं निर्माण किया। वे विपरीत दिशा में बहने का प्रयास करते रहे और अंततः कामयाब हुए। उनके शत्रु भी मन के किसी कोने में उनके इस संघर्ष को सराहते हैं। ऐसे साहित्यकारों का जीवन सभी के लिए प्रेरणादायी है। इसी तरह के एक साहित्यकार श्योराज सिंह बेचैन भी हैं, जिनसे कवि बेहद निकटता महसूस करते हैं और निकटता के साथ-साथ प्रेरणा भी पाते हैं। अपने इस संग्रह में उन्होंने उनको समर्पित एक कविता लिखी है। उनके जीवन संघर्ष को अभिव्यक्त करते हुए विजय संदेश कहते हैं कि -

कैसे बिना माली की सुरक्षा-संरक्षा के / आंधी लू शीत ताप और बारिश की मार को
वह सहता हुआ, झेलता हुआ / पहुंच पाया यहां तक
उस छायादार वृक्ष में, एक आत्मविश्वास की छाया है
लिखने को इतिहास, खुद चल कर आया है।[13]

दुनिया में बहुत सारे महान व्यक्तित्व इस तरह के भी रहे हैं, जिन्होंने भले ही साहित्य- सृजन के क्षेत्र में विशेष ख्याति अर्जित नहीं की परंतु उनका जीवन ही उनका साहित्य है और बेहद प्रेरणादायी भी। ऐसे महान व्यक्तित्व तमाम विसंगतियों के प्रति अपना संघर्ष और विद्रोह दर्ज कराते रहे हैं। दुनिया को खूबसूरत बनाने के लिए इन सभी ने अपना जीवन दाँव पर लगा दिया है। उनका जीवन कठिन संघर्षों से तपकर सोना बना है। ऐसे ही एक व्यक्तित्व नेल्सन मंडेला भी हैं। दक्षिण अफ्रीका में अपने महान संघर्ष के लिए विख्यात डॉ. नेलसन मंडेला की मृत्यु पर श्रद्धांजलि देते हुए कवि उनके संघर्ष को याद करते हुए कहता है -

उस अफ्रीकी जेल का बंदी नंबर 46664 ने कहा था
कहा था नहीं, सिंहनाद किया था मनुष्य की आजादी और रंगभेद के खात्मे की खातिर
मैं दुर्वह से दुर्वह कुर्बानी देना चाहता हूँ / संघर्ष और शांति मेरे दो लक्ष्य हैं
लोकतांत्रिक समाज की परिकल्पना मेरा आदर्श है।[14]

विजय संदेश को हिंदी भाषा और साहित्य से गहरा प्रेम रहा है। हिंदी उनके लिए माँ के समान है। यद्यपि ब्रिटिश शासन में एक अजीब सा श्रेष्ठता बोध अंग्रेजी को लेकर भारतीय जनमानस में पैदा हो गया था। इसी के चलते वह अपनी भाषा को हेय दृष्टि से देखने लगा। बुद्धिजीवी वर्ग ने इस प्रवृत्ति को काफी हद तक प्रश्रय दिया परंतु यह धारणा धीरे-धीरे टूटने लगी। भारतीयों में हिंदी के प्रति संकुचित धीरे-धीरे समाप्त होने लगा है। कवि ने इसी प्रकार की अभिव्यक्ति करते हुए कहा है-

मेरे अंग्रेजीदाँ हिंदुस्तानी दोस्तों / केवल और केवल इस प्रश्न का उत्तर दो /
सुख में, दुख में, हर्ष या विषाद में जब होते हो / तब किस भाषा में बोलते हो?"[15]

भारत देश भाषाओं और संस्कृतियों का एक खूबसूरत गुलदस्ता है। अलग-अलग भाषाएँ और संस्कृतियाँ, अपने-अपने प्राकृतिक परिवेश और अपनी-अपनी प्रथाओं-परंपराओं के साथ जीवंत हैं। आजादी के पूर्व ये सभी भाषाएँ अपने-अपने विकास के साथ ही संपर्क भाषा के रूप में हिंदी को विशेष महत्व देती थीं। आजादी के बाद की कुत्सित राजनीति के चलते यह वातावरण परिवर्तित होने लगा। राजनीति के चलते भयंकर हिंदी विरोध कुछ राज्यों में प्रश्रय पाने लगा। इसके चलते अनावश्यक ढंग से हिंदी विरोध आरंभ हो गया। जबकि यह बात सर्वविदित है कि हिंदी को महत्त्व देने का अर्थ यह कदापि नहीं है कि अन्य भाषाएँ उससे कमतर हैं बल्कि हिंदी तो वह संपर्क भाषा है, जिसने भाषाओं के गुलदस्ते को एक साथ समेटकर रखा है। उसके इस महत्व को भलीभाँति समझते हैं और इसीलिए कहते हैं -

हम तमिल, तेलुगु, कन्नड़ और मलयाली हैं /
असमी - मिजो - नागा - मणिपुरी व अरुणाचली हैं
हम मराठी, पंजाबी, गुजराती, कश्मीरी, बंगाली या राजस्थानी हैं
किंतु याद रहे हर वक्त हमें/ सबसे पहले हिंदी और हिंदुस्तानी हैं।"[16]

वस्तुतः विजय कुमार संदेश का कविता संग्रह अंधेरे के विरुद्ध विविधताओं का महकता हुआ खूबसूरत गुलदस्ता है। इस संग्रह में बेहद नरम अंदाज में कवि ने न केवल समाज को आईना दिखाने का काम किया है बल्कि अपनी कविता के माध्यम से बड़े ही खूबसूरत ढंग से संघर्ष की प्रेरणा भी दी है। बिना किसी प्रकार की कटुता और हिंसा का समर्थन किए कवि ने मोहक अंदाज में पूरे समाज को उदात्त भावों से प्रेरणा दी है, संघर्ष करने की एक विशिष्ट मनोभूमि का निर्माण किया है। अपने इस रूप में यह कविताएँ अत्यंत आकर्षित करती हैं। इसके अतिरिक्त कवि की व्यक्तिगत संवेदनाओं को अभिव्यक्त करने की दृष्टि से भी अत्यंत विशिष्ट कविताएँ इस संग्रह में सम्मिलित हैं। पूरे समाज को लेकर कवि की जो एक विशेष दृष्टि है, वह इसमें अभिव्यक्त हुई है। अपने जीवन सफर में तमाम ऐसे व्यक्तित्व जिनसे कवि कहीं न कहीं

प्रेरणा पाता रहा है, उनके प्रति भी अपने निजी भावों को कवि ने अभिव्यक्त किया है।

संदर्भः

1. विजय कुमार संदेश - अंधेरे के विरुद्ध, संतुलन, पृष्ठ 48-49; क्लासिकल पब्लिशिंग कंपनी, नई दिल्ली संस्करण 2015
2. वही, पृष्ठ 48-49;
3. वही, पृष्ठ 36 5
4. वही, पृष्ठ 18
5. वही, पृष्ठ 15
6. वही, पृष्ठ 20
7. वही, उजाले का आगाज, पृष्ठ 22-23
9. वही, इतिहास और तुम, पृष्ठ 34;
10. वही, शून्य ने..., पृष्ठ 45;
11. वही, विज्ञान और कविता, पृष्ठ 41
12. वही, युगपुरुषः अम्बेडकर, पृष्ठ 72;
13. वही, माली फूल और फल, पृष्ठ 77
14. वही, क्रांतिवीर मंडेला के प्रति, पृष्ठ 79
15. वही, हिन्दी और हिंदुस्तानी, पृष्ठ 89
16. वही, हिन्दी और हिन्दुस्तानी, पृष्ठ 91

-प्रभारी प्राचार्य एवं अध्यक्ष, हिन्दी विभाग

सोनूभाऊ बसवंत महविद्यालय, शहापुर (महाराष्ट्र)

Impact Factor - 5.67

E- ISSN 2582-5429

AKSHARA

Multidisciplinary Research Journal
Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal
July 2022 Special Issue 06 Volume I

S.B. COLLEGE OF ARTS AND COMMERCE SHAHAPUR 1984

Akshara Publication

Chief Editor : Dr. Girish S. Koli, AMRJ
For Details Visit To - www.aimrj.com

E- ISSN 2582-5429
AMRJ
Akshara Multidisciplinary Research Journal
Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal
July 2022 Special Issue 06 Volume I
SJIF Impact- 5.67

Index

Sr No	Title of the Paper	Author's Name	Pg.No
01	A Study of Impact of Budget 2022 with Respect to Income Tax on the Tax payers of India Bangalore	Ishrath Anjum Geetha R	05
02	Visualization of *Charkha* in the Light of Non-violence : Gandhian Perspective	Dr. Yash Jain	10
03	Role of Women in Indian Freedom Struggle	Dr. Anil kumar Shrivastava	14
04	MYP Interdisciplinary Teaching and Learning	Dr. Deepika Rai	18
05	Conservation Type and Biodiversity a Significant System	Dr. Sunil Kumar Verma	22
06	Teacher Education: Quality Assurance and Its Indicators	Sunita Yadav	28
07	The New Emerging Trends in Higher Education	Dr. Dashrath D. Kamble	33
08	Understanding Marxism for Today and Tomorrow	Dr. Suryawanshi Parmeshwar Lakshmanrao	38
09	An Analysis of The Challenges faced by Unorganized Workers during the Covid-19 Lockdown in India	Dr. Mrs. Sangita S. More	42
10	The Unprecedented Colonial Architecture of Bundelkhand Region St. Peters Church -1840	Shireen Comfort	46
11	Purulia Chhau Dance: A Talk of Masked Folk	Manohar Kumar	52
12	थूथुकुड़ी : गुलामी से मुक्ति की दास्ताँ	डॉ. मधुलिका बेन पटेल	57
13	प्राचीन शिक्षा पद्धति की वर्तमान युग में प्रासंगिकता: नैतिक मूल्यों के संदर्भ में	डॉ. मोहिन्दर नाथ शर्मा	60
14	दलित आत्मकथा के अनुवाद की आवश्यकता	नर्मदा संजयसिंह ठाकुर	65
15	प्रेमचंद के उपन्यासों में गांधी दर्शन	मुजावर जैनु हमिद	70
16	कोल समाज के युवाओं में बढ़ती मद्यपान की प्रवृत्ति (सतना जिले के अमरपाटन तहसील के विशेष संदर्भ में)	संजय कुमार चौरसिया डॉ.विनोद कुमार रस्तोगी	72
17	छत्तीसगढ़ प्रांत के गोंडी लोकगीतों में निहित प्राकृतिक तत्त्व	रीना गोटें / डॉ.देशबंधु तिवारी	76
18	हिंदी के महिला उपन्यासकारों के उपन्यासों में चित्रित आत्मनिर्भर स्त्री	डॉ. रेशमा नदाफ	80
19	बाल अपराध के बदलते प्रतिमान	अमित कुमार सिंह डॉ. राजेश त्रिपाठी	85
20	राजनीतिक बदलाव में दलित साहित्य की महत्वपूर्ण भूमिका	डॉ. भारती वळवी (वाघ)	89
21	इनसोम्निया (अनिद्रा) पर योग का प्रभाव	शगुन डॉ. सुनील कुमार श्रीवास	92
22	वैश्वीकरण के दौर में मीडिया	प्रोफेसर अधीर कुमार, राकेश कुमार	96
23	शरद जोशी के प्रशासकीय सन्दर्भों पर आधृत व्यंग्य की प्रासंगिकता	डॉ. संतोष विजय येरावार डॉ. संदीप श्रीराम पाईकराव	100

AMRJ
Akshara Multidisciplinary Research Journal
E- ISSN 2582-5429
Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal
July 2022 Special Issue 06 Volume I
SJIF Impact- 5.67

07 The New Emerging Trends in Higher Education

Dr. Dashrath Dnyandev Kamble,
Assistant Professor, Department of English,
Sonubhau Baswant College of Arts and Commerce Shahapur Dist. Thane (Maharashtra)

Abstract:
*There is an emergence of new trends in all sectors in the world and the educational industry is not an exception to it. Teachers', students' and their parents' expectations, and educational institutions are in a changing rapidly. The change in teaching-learning is a demand of the present age. This research paper focuses on 'The New Emerging Trends in Higher Education.' The teaching-learning process in education has been very much influenced by the evolution of computer, internet, and multimedia educational technologies. Many educational institutions are trying to use different strategies to develop educational infrastructure to provide the best learning experience to the students because there is an emergence of new trends in education. Majority of students have android mobile phones loaded with huge internet data pack having wireless headphones and modern software such as Bluetooth, Wi-Fi, YouTube, WhatsApp, Google Chrome, Zoom app, Google Meet, Microsoft Team, phonepe, paytm, etc. The virtual reality in teaching-learning helps the students to experience the subject with better understanding to retain the knowledge as long as they can. The new trends in higher education are becoming popular in the 21st century. These emerging trends are - outcome-based education, **focus on skill development, artificial intelligence based proctoring in examination management and assessment system,** digital library, digitized smart campus, virtual reality, and **online education. The students love the new trends in education like bite-sized learning, personalized learning, increasing wellness programs, and flexible seating in the class etc. Really, the new trends in higher education are very useful for the students in this modern age.***

Key words: technologies, teaching-learning, understanding, digital, computer, internet, and virtual reality

Introduction:

There is a drastic change in the world in its different spares due to scientific inventions, climate change, and manmade or natural calamities. Every year, there is an emergence of new trends in all sectors in the world and the educational industry is not an exception to it. Teachers, students' and their parents' expectations, and educational institutions are in a changing rapidly. There is an emergence of new educational technology, smart teachers, and students having technological knowledge. Now education is in transition form due to changing demands and needs of the present generation students. Available modern educational technology made a great impact on students' perspective on education. The students and society demand outcome based learning. So, there is an emergence of new trends in teaching-learning process in education. The change in teaching-learning is a demand of the present age. Teachers, syllabus, and educational institutions must change rapidly using new trends in teaching-learning process as per the expectations of the students. Even COVID-19 pandemic has made a tremendous impact on teaching-learning process in education. So with the availability of digital teaching infrastructure, the teaching-learning trends are completely changed in the present age.

The New Emerging Trends in Higher Education:

The teaching-learning process in education has been very much influenced by the evolution of computer, internet, and multimedia technologies. The modern educational

Reg. No. 124726035RC0001 ISSN : 2562-6086

पुस्तक भारती रिसर्च जर्नल

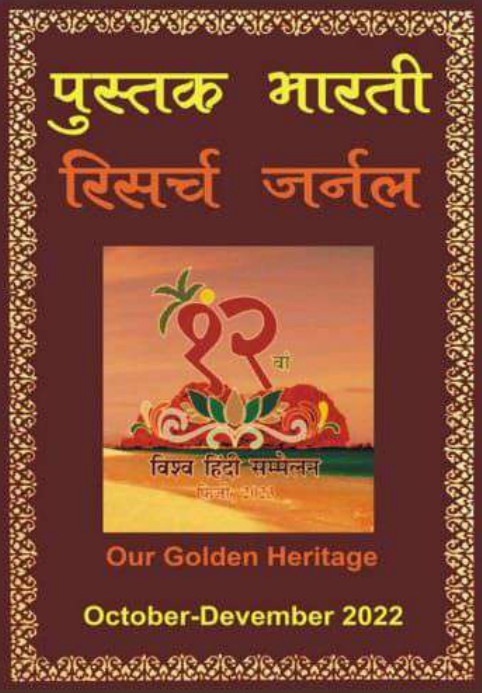

October-December 2022
Pustak Bharati, Toronto, Canada

पुस्तक भारती रिसर्च जर्नल
PUSTAK BHARATI RESEARCH JOURNAL
A Peer Reviewed Journal

त्रैमासिक शोध पत्रिका
वर्ष- 4, अक्टूबर –दिसंबर, 2022, अंक – 4

प्रधान संपादक : डॉ. रत्नाकर नराले
सह संपादक : डॉ. राकेश कुमार दूबे

रिव्यू कमेटी
डॉ. प्रो. तंकमणि अम्मा, तिरुवनन्तपुरम्
प्रो. हेमराज सुंदर, मारीशस
डॉ. करुणाशंकर उपाध्याय, मुंबई
प्रो. डॉ. शांति नायर, केरल
डॉ. सिराजुद्दिन नुर्मतोव, उजबेकिस्तान
प्रो. दक्ष्य मिस्त्री, बड़ोदा
प्रो. कृष्ण कुमार मिश्र, मुंबई

संपादक मण्डल
प्रो. सोमा बंद्योपाध्याय, पश्चिम बंगाल
प्रो. अरुणा सिन्हा, वाराणसी
प्रो. विनोद कुमार मिश्र, त्रिपुरा
प्रो. उमापति दीक्षित, आगरा
प्रो. उपुल रंजीथ हेवावितानागामगे, श्रीलंका
डॉ. मैरम्बी नुरोवा, ताजिकिस्तान
प्रो. दर्शन पाण्डेय, दिल्ली

परामर्श मण्डल
डॉ. तुलसीराम शर्मा, कनाडा
डॉ. मनोज कुमार पटैरिया, नई दिल्ली
डॉ. एन. के. चतुर्वेदी, जोधपुर
प्रो. नीलू गुप्ता, अमेरिका
डॉ. मृदुल कीर्ति, आस्ट्रेलिया
प्रो. कमलेश शर्मा, कोटा

संरक्षक मण्डल
डॉ. यशवंत पाठक, अमेरिका
श्री रतन पवन, अमेरिका
श्री पंकज पटेल, अमेरिका

पत्रिका का मूल्य / सदस्यता राशि संस्था के सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया, मंगारी के खाता संख्या 5144696109 (IFSC: CBIN0281306) में जमाकर उसकी सूचना मेल या नं. +91-7355682455 पर दें।

अनुक्रमणिका

संपादकीय
1. राष्ट्रीय एकीकरण में हिन्दी की भूमिका — 1
डॉ. पवन अग्रवाल
2. राजभाषा हिन्दी बनाम जनभाषा हिन्दी — 7
डॉ. प्रकाश उदय
3. काशी नागरीप्रचारिणी सभा : हिंदी की प्रथम अंतर्राष्ट्रीय प्रचारक संस्था — 15
डॉ. राकेश कुमार दूबे
4. वैश्विक स्तर पर हिन्दी की स्वीकृति एवं व्याप्ति — 23
प्रो. दिविक रमेश
5. विदेशों में हिन्दी का विकास — 30
डॉ. निशा झा
डॉ. राम कृष्ण झा
6. विदेशों में भारतीय संस्कृति की संवाहक हिंदी : मॉरीशसीय संदर्भ में — 36
डॉ. अलका धनपत
7. हिंदी का राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय स्वरूप — 41
पैड़ाला रवींद्रनाथ
8. ताजिकिस्तान में हिंदी का गठन और विकास — 45
डॉ. मैरम्बी नुरोवा
अलिख़ान लतिफोव
9. ऑस्ट्रेलिया में हिन्दी के प्रचारक : डॉ. दिनेश श्रीवास्तव — 51
मृदुला कक्कड़
10. हिंदी के वैश्विक विकास में प्रौद्योगिकी-अनुवाद का योगदान — 56
प्रो. (डॉ.) अर्जुन चव्हाण
11. विश्व हिंदी सम्मेलन : उपलब्धियाँ और प्रासंगिकता — 65
प्रो.(डॉ.) एस. तंकमणि अम्मा
12. संयुक्त राष्ट्र संघ की आधिकारिक भाषा के रूप में हिंदी के लिए प्रयास — 72
सुशील कुमार राम
13. विश्वभाषा की ओर अग्रसर हिंदी — 78
डॉ. अनिल सिंह
14. समकालीन भाषा, साहित्य और तकनीक — 82
डॉ. सत्यनारायण स्नेही

* प्रत्येक शोध-पत्र में व्यक्त विचार लेखक के अपने हैं। संपादक मंडल का उससे सहमत होना आवश्यक नहीं है।

13

विश्वभाषा की ओर अग्रसर हिंदी

डॉ. अनिल सिंह

'संस्कृति' को भाषा की विकसित अवस्था का द्योतक कहां जा सकता है। मनुष्य के रहन-सहन और बोली भाषा के कारण ही संस्कृति फलीभूत होती है। मानव जिस भौगोलिक परिवेश और प्रकृति के सानिध्य में जैसे- जैसे विचरण करता है, वैसे-वैसे उसकी बोली और भाषा निखरने लगती है। विविध बोलियों और भाषाओं को विकसित करने में धर्म के आध्यात्मिक एवं व्यावहारिक स्वरूपों की अहम् भूमिका रही है। जैसा कि हम सब जानते हैं कि अपनी सहजता, सरलता, ज्यादा से ज्यादा प्रयोग और व्यवहार में आत्मसात किए जाने के कारण बोधगम्यता व संप्रेषणीयता में सहज ही गहरी छाप छोड़ जाती है। बोली और भाषा ही वह सेतु है जो आस-पड़ोस से लेकर देश-विदेश तक जोड़ लेता है। निरंतर परिवर्तनशील होने के परिणामस्वरुप भाषा में हमें भिन्नता दिखलाई पड़ती है। इसीलिए भाषा के संदर्भ में कहा गया है "भाषा वह नीर के समान है जो अपनी संप्रेषणीयता और सहजता के चलते ही लोगों पर अपनी अमिट छाप छोड़ देती है। डॉ. भोलानाथ तिवारी की मान्यता है, "भाषा, उच्चारण अवयव से उच्चारित यादृच्छिक ध्वनि-प्रतीकों की वह व्यवस्था है जिसके द्वारा एक समाज के लोग आपस में भावों और विचारों का आदान प्रदान करते हैं।"[1] अतः मानव समाज का प्रत्येक व्यवहार एवं कार्य भाषा द्वारा ही संपन्न होता है।

मानव के विकास एवं प्रगति में भाषा का महत्वपूर्ण स्थान है। किसी ने कहा भी है "यह समस्त संसार अंधकार में लिपटा रहता, यदि शब्दों की ज्योति से दीप्त न होता।" साहित्य और संस्कृति को भली-भांति आत्मसात करने हेतु भाषा का गहन अध्ययन अत्यंत आवश्यक है। ध्वनि प्रतीकों की व्यवस्था एक तरह से भाषा ही है। "कोई भी भाषा प्रौढ़, परिनिष्ठित या साहित्यिक रूप ग्रहण कर लेने के उपरांत स्थिर होने लगती है और उसका अंतिम रूप निश्चित सा हो जाता है, पर उसी समय उसको जो रूप सामान्य बोलचाल के लिए प्रयोग में चल रहा होता है, उसका प्रवाह व्यापक होने लगता है। उसके प्रवाह में कोई अवरोध उत्पन्न नहीं होता और वह किसी पहाड़ी नदी की तरह अविच्छिन्न रूप से अपनी अपनी सहवर्ती बोलियों या आगंतुक भाषाओं के शब्द भंडार से ताल-मेल बिठा कर निरंतरता बनाए रखता है।भाषा के रूप स्थिर हो जाते हैं, पर भाषा अनंत होती है।"[2]

भाषा मात्र संप्रेषण का ही साधन नहीं है बल्कि मानवीय संवेदना की अभिव्यक्ति का एक सशक्त माध्यम है। व्यक्ति के रहन-सहन, बात व्यवहार और संस्कार उसके बोली और भाषा से जानी जाती है। मानव के विकास और प्रगति में भाषा की अहम भूमिका होती है। भाषा ही वह अपूर्व शक्ति है जो सहस्त्रों वर्षों से प्रवाहमान है। आंतरिक ऊर्जा से निष्पन्न होने के कारण ही प्रतिकूल स्थितियों में भी इसके प्रयोग और महत्व रूपी प्रवाह को बाधित नहीं किया जा सकता। मनुष्य एक सामाजिक प्राणी होने के नाते अपनी भावनाओं और जरूरतों को पूर्ण करने हेतु जिन भाषा संकेतों को अपनाने लगता है धीरे-धीरे आगे चलकर वही अभिव्यक्ति का एक मानक रूप में जाने जानी लगती है। डॉ. लक्ष्मीकांत पांडे ने भी भाषा की महत्ता को रेखांकित करते हुए कहा है "भारत के विभिन्न प्रांतों में विभिन्न भाषाओं के बोलने वाले पाए जाते हैं, फिर भी ऐसा नहीं है कि वह एक-दूसरे से अपरिचित है। कहीं न कहीं से किसी न किसी रूप में जैसे मानव-मानव का संबंध है, वैसे एक भाषा का दूसरी भाषा के साथ होता है और यही भाषा जब जनसंपर्क की भाषा बन जाती है तो हमारे सारे क्रिया-कलाप उसी भाषा में संचालित होने लगते हैं।"[3] अतः भाषा अभिव्यक्ति का एक सशक्त माध्यम ही नहीं अपितु संदेश संवाहक का भी कार्य करता है।

हम देखते हैं कि देश-विदेश में धड़ल्ले से बोली जाने वाली हिंदी भारत संघ की राजभाषा और राष्ट्र की संपर्क भाषा है। आज दोनों ही भाषा का दायित्व गुरुतर है। विकास के कारण संपूर्ण विश्व के देश एक-दूसरे करीब आए हैं कि अब कोई भी भाषा अन्य भाषाओं के शब्दों से परहेज नहीं कर सकेगी। हिंदी अपने देश की

हम देखते हैं कि देश-विदेश में धड़ल्ले से बोली जाने वाली हिंदी भारत संघ की राजभाषा और राष्ट्र की संपर्क भाषा है। आज दोनों ही भाषा का दायित्व गुरुतर है। राजभाषा हो या राष्ट्रभाषा दोनों को ही संवैधानिक मान्यता है। 'हिंदी' में ही व सामर्थ्य ज्यादा दृष्टिगत होता है जो श्रव्यमयता व भाषित शब्दों की ओर हमारा ध्यान आकृष्ट कर एक तरह से हमें नई शक्ति दी है। हम सब इस बात से भली-भांति अवगत हैं कि जिस हिंदी भाषा कि आज हम बात कर रहे हैं, उसका प्रारंभिक रूप एक तरह से मौखिक ही था। जो भावनाओं और अनुभूतियों के एक तरह से मूर्तिमान रूप ही है।

हिंदी के संदर्भ में व्यावहारिक रूप से विचार करते हुए डॉ. विजय कुलश्रेष्ठ ने ठीक ही लिखा है, "भाषा सामाजिक वस्तु है और उस के माध्यम से ही सभी सामाजिक व्यवहार संपन्न होते हैं। यदि भाषा का समाज के विविध कार्यों में उपयोग न किया जाए तो वह भाषा सीमित दिशाओं में ही विकास कर पाएगी। हमारे देश में आधुनिक प्रयोजनों के लिए आज जिस हिंदी को अपनाया गया है, उसके आधार निम्नांकित प्रकार्य है - 'हिंदी एक अंतर्राष्ट्रीय भाषा है।' 'हिंदी भारतीय भाषाओं के लिए अग्रणी है।' 'हिंदी निजी क्षेत्र में प्रयोजन परक भाषा के रूप में अपनी उपयोगिता सिद्ध करती है।"[4] अतः हिंदी का लक्ष्य स्पष्ट रूप से परिलक्षित होता है।

संस्कृत से हिंदी का जन्म होने के नाते ही संस्कृत भाषा से बहुत से शब्दों का हिंदी में आना स्वाभाविक है। जन सामान्य की आवश्यकतानुसार भाषा में शब्दों के नव निर्माण की प्रक्रिया चलती रहती है। राज्यसत्ता के परिवर्तन से भी नए-नए शब्दों का आगमन होता है। अरबी-फारसी अंग्रेजी के शब्द आज हिंदी भाषा में घुल मिल गए हैं, उसके लिए सभ्यता के विकास के साथ-साथ राजनीतिक, सांस्कृतिक भी उत्तरदायी है। भाषागत परहेज के संदर्भ में डॉ.माधव सोनटक्के ने ठीक ही कहा है "जब भिन्न-भाषी राष्ट्र, प्रान्त, जाति या क्षेत्र एक दूसरे के संपर्क में आते हैं तो दोनों ही एक दूसरे से कुछ-न-कुछ शब्द लेते हैं। हिंदी में देशी तथा विदेशी भाषा के कई शब्द आए हैं, आ रहे हैं, वह इसी कारण आज संचार माध्यमों के विकास के कारण संपूर्ण विश्व के देश एक-दूसरे के इतने करीब आए हैं कि अब कोई भी भाषा अन्य भाषाओं के शब्दों से परहेज नहीं कर सकेगी। हिंदी अपने देश की राष्ट्रभाषा है, अतःभारतीय अन्य भाषाओं के शब्द उसमें प्रयुक्त होने सहज नहीं अनिवार्य भी हुआ है।"[5]

हिंदी में ही वह दमखम है जो हिंदुस्तान की राष्ट्रभाषा हो सकती है। हिंदी को ही यह गौरव प्राप्त होना चाहिए। हिंदी अपनी सार्वभौमिकता सरलता, सर्वप्रिय और व्यापकता के कारण ही आदान-प्रदान की दृष्टि से भी सर्वथा उपयुक्त है। इसीलिए हिंदी ही बोलचाल की भाषा होनी चाहिए। भले आज अंग्रेजी शिक्षण संस्थाएं जोर पकड़ रही है, अन्य भाषा भाषियों के बीच भी उनका बोलबाला बढ़ रहा हो। भारत ही नहीं संपूर्ण विश्व में हिंदी ही बोलचाल की भाषा के रूप में निरंतर सम्मान की दृष्टि से देखी जा रही है। महात्मा गांधी ने भी राष्ट्रभाषा के लक्षणों को इंगित करते हुए कहा था "भाषा वही श्रेष्ठ है इसको जनसमूह सहज में समझ ले। देहाती बोली सब समझते हैं। भाषा का मूल करोड़ों मनुष्य रूपी हिमालय में मिलेगा उसमें ही रहेगा। हिमालय में से निकलती हुई गंगा जी अनंत काल तक बहती रहेगी, ऐसे ही देहाती हिंदी का गौरव रहेगा और जैसे छोटी सी पहाड़ी से निकला हुआ झरना सूख जाता है वैसे ही संस्कृतमयी तथा फारसीमयी हिंदी की दशा होगी।"[6]

प्रौद्योगिकी की दृष्टि से ही नहीं हिंदी आंतरिक शक्ति से अर्थात हर दृष्टि से एक समृद्ध भाषा है। हिंदी का प्रयोग करने वालों की संख्या दिन पर दिन बढ़ती ही जा रही है। जिस भाषा का व्याकरण विज्ञान-सम्मत होगा और जिस भाषा की लिपि कंप्यूटर की लिपि होगी, वही भाषा संपूर्ण विश्व में लोकप्रियता और ख्याति प्राप्त करेगी। भारत में निजीकरण की प्रक्रिया आरंभ होने के बाद जिस तरह से अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भाषाई वर्चस्व की रक्षा करने की चिंता हुई, ऐसे में एक बार लगा कि जैसे हिंदी फिर पिछड़ जाएगी क्योंकि अंतरराष्ट्रीय परिस्थितियों में अंग्रेजी को विस्थापित करना बल्कि इसके बारे में सोचना भी असंभव था। परंतु अपनी भाषायी गरिमा की रक्षा हेतु उस प्रतियोगिता की होड़ में अपने को योग्य प्रतिद्वंदी के रूप में

उपस्थित करना जरूरी हो जाता है। भाषा यदि परिस्थितियों के मुताबिक अपना विकास नहीं करेगी तो निश्चित तौर पर वह धीरे-धीरे समाप्त होने की ओर बढ़ जाएगी और हिंदी जैसी समृद्ध भाषा, जिसने कि हजारों वर्षों में अपने इस रूप को प्राप्त किया है और वह समर्थ है, कि किसी भी तरह की परिस्थितियों में वह अपने को ढाल

संप्रेषणीय होने के नाते हिंदी न केवल बोल
है बल्कि उसे लोकप्रिय भाषा का दर्जा भी
हिंदी अब न केवल भारत की राष्ट्रभा
विश्वभाषा की अधिकारिणी है। वैश्विक स्तर
भविष्य को निखारने और संवारने हेतु समयानुकूल उन
रूपों में ढलना होगा। भूमंडलीकरण के इस दौर में हिंदी

उपस्थित करना जरूरी हो जाता है। भाषा यदि परिस्थितियों के मुताबिक अपना विकास नहीं करेगी तो निश्चित तौर पर वह धीरे-धीरे समाप्त होने की ओर बढ़ जाएगी और हिंदी जैसी समृद्ध भाषा, जिसने कि हजारों वर्षों में अपने इस रूप को प्राप्त किया है और वह समर्थ है, कि किसी भी तरह की परिस्थितियों में वह अपने को ढाल सकती है। इन्हीं संदर्भों को हमारे सामने रखते हुए डॉ. मणिक मृगेश लिखते हैं, "भले ही आपकी कंपनी का निजीकरण हो जाए, लेकिन यदि आपने अपने को ऑलराउंडर बना लिया है तो आपका कुछ नुकसान नहीं होगा। समयानुकूल हमें अपने को परिवर्तित करना होगा।..... हिंदी से जुड़े लोगों को हिंदी विभाग के साथ-साथ मानव संसाधन व मानविकी विभागों के कामकाज में दक्ष होते रहना पड़ेगा। फिर आपका कोई भी निजीकरण बाल बांका नहीं कर पाएगा। आप कह सकेंगे कि हमें कोई भी विभाग सौंप दिया जाए, करेंगे।..... इसलिए निजीकरण से डरने की कोई बात नहीं है। निजी क्षेत्रों में भी भविष्य उज्जवल है।"7 कहने का अर्थ यह है की दुनिया में परिवर्तन एक निश्चित नियम है और इस परिवर्तन के साथ-साथ खुद को समायोजित करना और उसके लिए अपने को तैयार करना जरूरी प्रक्रिया का हिस्सा है। हमें भी इस बात का ध्यान रखना होगा। यह न केवल अपने अस्तित्व के लिए आवश्यक है बल्कि भाषाई अस्मिता को व्यापक बनाने के लिए भी जरूरी है।

हिंदी एक पुरानी भाषा ही नहीं बल्कि जीवंत भाषा है। उसकी जड़ें काफी गहरी है और धरा में काफी दूर तक फैली हुई है। कोई भी भाषा बोलचाल में ज्यादा से ज्यादा प्रयोग लाए जाने पर ही निखरती है। कुछ लोग भली-भांति हिंदी जानते हैं, समझते हैं, पढ़ते लिखते हैं, इसके बावजूद भी आपस में मिलने पर हिंदी में बोलना अपना डिवैल्यूवेशन समझते हैं। भले ही गलत सही अंग्रेजी में बात करेंगे, मानो अंग्रेजी में बात करना एक तरह से स्टेटस समझते हैं। हिंदी के प्रति ऐसी धारणा रखने वालों की सोच एक तरह से हिंदी के प्रति उनकी कुंठित मानसिकता को उजागिर करता है।

अपनी वैज्ञानिक लिपि, सरलता, सहजता और संप्रेषणीय होने के नाते हिंदी न केवल बोलचाल की भाषा है बल्कि उसे लोकप्रिय भाषा का दर्जा भी प्राप्त हो रहा है। हिंदी अब न केवल भारत की राष्ट्रभाषा है अपितु विश्वभाषा की अधिकारिणी है। वैश्विक स्तर पर हिंदी के भविष्य को निखारने और संवारने हेतु समयानुकूल उन रूपों में ढलना होगा। भूमंडलीकरण के इस दौर में हिंदी को अपनी खुशबू और स्वाभिमान को बनाए रखने हेतु तत्पर रहना होगा। वैश्विक स्तर पर जिनका संबंध सीधे-सीधे बाजार से है वह भी अब मजबूरन हिंदी की शिक्षा दे रहे हैं। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर वही भाषा टिक सकती है जिसकी सामाजिक, सांस्कृतिक भाषा के साथ-साथ धर्म तथा दर्शन भी सशक्त हो तभी वह गैर समूह को खींच पाने में पूर्णत: सफल हो सकेगी। उक्त सभी वैशिष्ट्य हिंदी में परिलक्षित होता है। इसी का परिणाम है कि आज विश्व के अन्य देशों में हिंदी बोली, समझी और पढ़ी जा रही है। संचार माध्यमों और हिंदी फिल्मों व संगीत की भूमिका भी हिंदी को लोकप्रियता प्रदान करने में महत्वपूर्ण रही है। फिजी, त्रिनिदाद, गयाना, मॉरीशस, सूरीनाम आदि देशो ने हिंदी को अपनाया है। वही अमेरिका कनाडा, सिंगापुर ब्रिटेन, फ्रांस, नेपाल, चीन, जापान, कोरिया आदि देशों के रह रहे अप्रवासी भारतीय अपनी भाषा और संस्कृति का छोड़ नहीं पाए हैं। आज भी हिंदी को विश्व भाषा बनाने का वास्तव में मुख्य श्रेय यदि किसी को दिया जाना चाहिए तो वे है - प्रवासी भारतीय।

आज भी भारत के इलाहाबाद, काशी हिंदू विश्वविद्यालय, दिल्ली आदि विश्वविद्यालयों में अन्य देशों के विद्यार्थी यहां हिंदी पढ़ने के लिए आया करते हैं। विश्व मंच पर हिंदी की अहम भूमिका है। दुनिया का शायद ही कोई कोना बचा हो जहां हिंदी न पहुंची हो। वैसे भी हिंदी के बिना आब किसी की भी दाल गलने वाली नहीं है। हिंदी के बिना हमारा कोई भी कार्य संपन्न नहीं हो पाएगा। आज हिंदी पूरे विश्व में सर्वाधिक बोली और समझी जाने वाली भाषा है। हिंदी हमारी जान, मान और सम्मान ही नहीं बल्कि 'हिंदी' हमारी अस्मिता की एक विशिष्ट पहचान है। हिंदी भाषा भारत का अस्तित्व ही नहीं बल्कि उसकी एक लंबी और समृद्ध परंपरा है। हिंदी

में ही समूचे विश्व को 'वसुधैव कुटुंबकम' के सूत्र में बांधे रखने की शक्ति है तो वह हिन्दी में ही है। इस प्रकार कहा परिस्थितियों में उसने अपनी उपयोगिता और जीवतता को बनाए रखा है। हिन्दी बोलने वालों की संख्या दिन पर

में ही समूचे विश्व को 'वसुधैव कुटुंबकम' के सूत्र में बांधे रखने की शक्ति है तो वह हिन्दी में ही है । इस प्रकार कहा जा सकता है विभिन्न भाषाओं की समृद्धि के बावजूद हिंदी भाषा का रथ जिस गति से बढ़ रहा है निश्चित ही आने वाले दिनों में विश्व भाषा के रूप में जानी जाएगी।

अनेकता में एकता का नारा बुलंद करने वाले भारत का सांस्कृतिक समन्वय बेजोड़ है। हिन्दी के माध्यम से ही वैश्विक स्तर पर भी भारतीय संस्कृति अपनी आभा फैलाये हुए हैं। इस प्रकार हम देखते हैं कि हिन्दी स्वयं में विश्व सम्माज को समाहित किए हुए है।

आज का युग सूचना क्रांति का युग है और ऐसे समय में बहुत सारी वैश्विक स्थितियां बदल रही हैं। चाहे संस्कृति हो या भाषा, भारी परिवर्तन देखने को मिल रहा है। ऐसे समय में हिंदी को यदि सर्वसम्मत ढंग से आगे बढ़ाना है तो कुछ बातों का ध्यान रखा रखना अत्यंत आवश्यक हो जाता है। इन्हीं आवश्यकताओं पर बल देते हुए डॉ. हरिमोहन लिखते हैं, "जहां तक हिंदी का प्रश्न है सूचना युग में हिंदी भाषा अपनी जगह बना रही है। सूचना-क्रांति के इस युग में कोई भी भाषा, संक्षेप में कहें तो, 'विश्व भाषा' उसी स्थिति में बन सकती है, जब वह (1) नित नई प्रौद्योगिकी के साथ चल सके, (2) तकनीकी और पारिभाषिक शब्दावली का निर्माण कर सकें, नई शब्दावली को ग्रहण कर उसका प्रयोग बेहिचक कर सके, (3) इतनी लचीली हो कि तमाम तरह के संरचनात्मक एवं अर्थों के दबाव को झेल सके, (4) इतनी सामर्थ्यवान हो कि दुनिया भर के परिवर्तनों से टूटे-बिखरे और मरे नहीं; जीवंत बनी रहकर उन परिवर्तनों को आत्मसात कर सके, (5) मशीन और मनुष्य के बीच सहजतापूर्वक संबंध स्थापित कर सके, (6) विश्व की बड़ी आबादी द्वारा प्रयोग में लाई जा सके।"

इस तरह हिंदी का भविष्य उज्जवल है। हिंदी में समय के साथ चलने की सामर्थ्य है, उसमें लचीलापन कितना है, यह तो हम सभी जानते हैं। कठिन से कठिन परिस्थितियों में उसने अपनी उपयोगिता और जीवंतता को बनाए रखा है। हिन्दी बोलने वालों की संख्या दिन पर दिन बढ़ती ही जा रही है। हिन्दी का प्रयोग और व्यवहार निश्चित ही हिन्दी को विश्व भाषा के रूप में स्थापित करने के लिए सतत गतिशील है । आज कंप्यूटर क्रांति के दौर में वह कंप्यूटर के अनुरूप भाषा भी बन चुकी है और विश्व के कई देशों में इसका प्रयोग हो रहा है। इस तरह हम कह सकते हैं कि यह हमारे लिए अत्यंत सुखद है कि हिंदी विश्व भाषा बनने के पथ की ओर अग्रसर है।

संदर्भ:

1. भोलानाथ तिवारी, भाषा-विज्ञान, किताब महल, इलाहाबाद, सं 2012 पृ. 4
2. हरिश्चंद्र पाठक, हिंदी भाषा इतिहास और संरचना, तक्षशिला प्रकाशन, दिल्ली, सं 2017, पृ. 13
3. लक्ष्मीकांत पाण्डेय, संचार माध्यमों में हिंदी का प्रयोग, ज्ञानोदय प्रकाशन, कानपुर, सं 1999, पृ. 1
4. विजय कुलश्रेष्ठ, प्रयोजनपरक हिंदी, पंचशील प्रकाशन, जयपुर, सं 2011, पृ. 1
5. माधव सोनटक्के, प्रयोजनमूलक हिंदी, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, सं 2008, पृ. 183
6. कै.भाटिया, मो.चतुर्वेदी, हिंदी भाषा विकास और स्वरूप, प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली, सं 2018 पृ.147
7. मणिक मृगेश, भूमंडलीकरण, निजीकरण व हिन्दी, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, सं 2012, पृ.14-15

प्र. प्राचार्य
हिंदी विभागाध्यक्ष एवं संयोजक,
हिंदी अनुसंधान केंद्र
एस.बी.महाविद्यालय,शहापुर-ठाणे
महाराष्ट्र, भारत

14 समकालीन भाषा, साहित्य और तकनीक

डॉ. सत्यनारायण स्नेही

MRP - ₹500/-

INTERNATIONAL JOURNAL OF
MULTI DISCIPLINARY RESEARCH AND TECHNOLOGY
IJMRT ISSN 2582-7359 Peer reviewed
Impact Factor 6.328

NATIONAL SEMINAR on GENDER BIAS AND RIGHTS : MAINSTREAMING GENDER EQUALITY

MKLM's

B.L. Amlani College of Commerce & Economics
M.R. Nathwani College of Arts

Recognition of 2(f) under UGC Act 1956,
Affiliated to University of Mumbai, Vile Parle (W), Mumbai - 56

Organize

Western Regional Centre - ICSSR

Sponsored

NATIONAL SEMINAR

on

GENDER BIAS AND RIGHTS : MAINSTREAMING GENDER EQUALITY

01st October 2022

Editor-in-Chief : Dr.Jitendra K Aherkar

Western Regional Centre - ICSSR, New Delhi

Sponsored

National Seminar

On

Gender Bias and Rights: Mainstreaming Gender Equality

1st October 2022

International Journal of Interdisciplinary Research and Technology
ISSN 2582-7359
Peer Reviewed Journal
Impact Factor: 6.328

Index

S. No.	Content	Page No.
1.	**THE SOCIO-ECONOMIC STATUS OF WOMEN IN INDIA- A CRITICAL ANALYSIS** *MR. ATUL KRISHNA GHADGE*	1
2.	**A SURVEY ON IMPACT OF COVID-19 PANDEMIC ON WORK LIFE BALANCE OF WOMEN PROFESSIONALS IN MUMBAI** *MS. MEDHAVINI KHARE, MS. SHILPA SAWANT*	5
3.	**ACHIEVING GENDER QUALITY: WOMEN'S VOICES DURING CONTEMPORARY TIMES** *GEETA SAHU*	9
4.	**UNDERSTANDING THE RAKSASI MOTHER- A STUDY OF CHETAN DATAR'S DANCE DRAMA '*MATA HIDIMBA*'** *DR KIRTI Y. NAKHARE*	13
5.	**WOMEN RIGHTS MATTER** *GARIMA SINGH*	18
6.	**FEMINIST ECONOMICS: PROBLEMS, PRINCIPLES, PRESENT DEBATES & PERSPECTIVES** *DR. ANKUSH L. MORE*	21
7.	**ALCOHOL USE DISORDER AND PSYCHOLOGICAL WELL-BEING AMONGSANITARY WORKERS IN VARADHARAJAPURAM SLUM, COIMBATORE** *DR. P. NATHIYA*	26
8.	**FEMININE ROLE IN BHABANI BHATTACHARYA'S *SO MANY HUNGERS!*** *MS HEMANGI NANA SAINDANE*	31
9.	**SUFFERINGS REGARDING GENDER BIASNESS: A TRANSGENDER PERSPECTIVE.** *SUDESHNA PAUL*	35
10.	**GENDER DISCRIMINATION AND EMPLOYMENT HOPE IN INDIAN WOMEN** *GRISHMA ASHAR*	39

11.	**GROWTH MINDSET TOWARDS GENDER MAINSTREAMING** *DR. RENI FRANCIS*	**44**
12.	**SUSTAINABLE ROAD TRANSPORTATION IN INDIA: TRENDS AND POLICY** *DR. RANI TYAGI*	**48**
13.	**COVID-19 PANDEMIC- GENDER IMPLICATIONS OF THE GLOBAL CRISIS** *DR. JAYA CHERIAN*	**51**
14.	**LEGAL PROTECTION OF WOMEN-NATIONAL AND INTERNATIONAL PERSPECTIVE** *DR SHAIKH ANISUR RAHAMAN*	**54**
15.	**THE INFLUENCE OF MUSIC IN MOOD REGULATION AMONG YOUNG ADULTS** *MS. MEGHAVEE G. MESHRAM*	**60**
16.	**COVID-19 AND IT'S IMPACT ON WOMEN: A CASE STUDY OF ASSAM** *DR. TRAILOKYA DEKA*	**65**
17.	**IMPACT OF SOCIAL MEDIA ON WOMEN IN CURRENT SCENARIO** *DR. KAVITA LALCHANDANI*	**69**
18.	**ADVERTISEMENT AND ITS ROLE IN CHANGING PERCEPTION BRINGING TRANSGENDER INTO MAINSTREAM** *DR. SAGARIKA DASH*	**74**
19.	**PARTICIPATION OF WOMEN IN INDIAN LABOUR FORCE: ISSUES AND CHALLENGES** *DR. SRINIVASA RAO DOKKU, DR. RAJESH C. JAMPALA,*	**83**
20.	**POLITICAL PARTICIPATION OF RURAL WOMEN IN THE PANCHAYATI RAJ SYSTEM OF ODISHA: ISSUES AND IMPLICATIONS** *KIRTTIMAYEE SARANGI, DR. IRINA DEVI*	**93**
21.	**A STUDY ON SEXUAL ANXIETY AMONG YOUNG ADULTS** *MR. NARESH W. PATIL*	**98**
22.	**RAISING VOICE FOR GENDER EQUALITY THROUGH EDUCATION :** **THE STORY OF EDUCATIONAL INSTITUTES OF ARYA SAMAJ IN HARYANA** *PARVEEN, DR. TAPENDRA SINGH SHEKHAWAT*	**103**

23.	**ROLE OF IMPACT OF SELF HELP GROUPS (SHGS) BANK LINKAGE PROGRAMME ON PSYCHOLOGICAL EMPOWERMENT OF WOMEN IN INDIA: WITH REFERENCE TO KRISHNA DISTRICT, ANDHRA PRADESH** *DR. P. ADI LAKSHMI,DR. RAJESH C. JAMPALA,DR. SRINIVASA RAO DOKKU*	**107**
24.	**PERCEPTION OF STUDENT TEACHERS TOWARDS WOMEN ACHIEVERS' SUCCESS STORIES** *MS. SUREKHA CHIDAMBARANATH*	**115**
25.	**THE STUDY OF GENDER STEREOTYPES AND ITS AFFECT OVER INDIAN RURAL SCHOOLS & SOCIETY** *ADITI BHUSHAN*	**119**
26.	**WOMEN, VACCINATION AND COVID-19 IN INDIA: CHALLENGES & ISSUES** *GURPINDER KUMAR*	**129**
27.	**HAPPIER CURVE IN GENDER SENSITIVITY OF BOLLYWOOD: A STUDY OF SELECTED WOMEN ORIENTED HINDI MOVIES** *DR. VIKAS RAJPOPAT, POOJA RAJPOPAT*	**135**
28.	**LAWS PROTECTING WOMEN FROM GENDER DISCRIMINATION IN INDIA: A CRITICAL ANALYSIS** *DR. SONIA ANEJA*	**139**
29.	**GENDER & WOMEN EMPOWERMENT** *DR. DHARMESH M. MEHTA*	**145**

Feminist Economics: Problems, Principles, Present Debates & Perspectives

Dr. Ankush L. More
H.O.D. & Professor
UG & PG Department of Economics
Sonubhau Baswant College of Arts & Commerce
Shahapur, Dist. Thane-421601 (M S)

Abstract
Economics is one of the most influential disciplines. By changing the way, the world is understood, economics has indeed changed the world. The principles of economics have charted out the course of policies, impacting countless lives in myriad ways. However, these principles are based on highly reductionist and sexist assumptions.
One way in which economics can be sexist is by not counting unpaid work, much of which is carried out by women in the household, such as cooking, cleaning, and care work. These activities may be purchased as services in the market, but remain difficult to impute value to. Another way in which economics can be sexist is by conceiving the household is an altruistic joint utility maximize, that is, as an entity which works towards the best interests of all its members. What remains invisible in such a conception of the household is the various negotiations between members with conflicting interests and differential decision-making powers.
Economics generally assumes that all individuals are equal, in terms of the choices that they can make, and ascribes rationality to individual utility maximization. This assumption fails to take into account the differential social positions of individuals, which may constrain their choices or give them power over others. These are but a few of the dilemmas in mainstream/textbook economic thought. Sexism in economics does not end here. Even at the professional level, economics can be extremely sexist, by devaluing the contributions of women

Key Words
Feminist, Economists-Economics, Reductionist, Sexist, Women Empowerment, Gender Budgeting, Austerity, Labour and Training.

Introduction
Feminist economist and economics analyses the interrelationship between gender and the economy. Thereby, feminist economics also takes the unpaid, non-market intermediate part of the economy and society into account and examines the driving forces behind common dichotomies such as economic-social, productive-reproductive, masculine-feminine, paid-unpaid or public-private. Moreover, feminist economics analyses patriarchy and capitalism as interrelated forms of dominance. Against this background, questions arise about the distribution and disposal of property, income, power, knowledge and the own body. Since liberal and constructionist research traditions exist alongside critical ones within feminist economics, it cannot be considered a coherent paradigm. Yet, all of these approaches deal with reproductive labour and care. Furthermore, feminist economics analyses the relationships between state policy, science, language, growth and gender relations. Feminist economics criticizes that economics is blind with respect to women's experiences and highlights that woman are hardly represented in the economic discipline, which in turn affects scientific findings. Hence, feminist economics point out the fact that scientific findings, common ideas, and society as a whole are all formed by power relations. For instance, the analysis of gender relations has only

slowly entered the field of economics even though the women's movement has been being active for centuries.

Main Problems as well as Central Questions focused on by Feminist Economics and Economist are

1. Why have housework and care not been recognized as work in economics since the 19th century and why are they not dealt with in economic theories?
2. Which dynamics drive and emerge from the widespread dichotomies economic-social, productive-reproductive, male-female, paid-unpaid, public-private?
3. What are women's current situation with respect to labour-market participation and wage income and what are the social processes behind this situation?
4. Why does the image of a rational, egoistic, objective, utility maximizing homo economic us rather correspond to a masculine stereotype and what does this mean for scientific findings?
5. What is the gender specific effects of macroeconomic policies and how would discussions on macroeconomic aspects, such as public spending, growth or international trade look if economics was not blind with respect to gender relations?

The Principles of Economics are Based on Highly Reductionist & Sexist Assumptions

Feminist Economics is committed to addressing these dilemmas by working through gender issues. It entails a reworking of the principles of economics, and the dismantling of various assumptions. Some of the methodological legacies of feminist economics includes the dis aggregation of macroeconomic data by sex, the recognition and incorporation of gender roles (including productive and reproductive activities) resulting in gender-aware policy and planning and gender budgeting, and the formulation of indices such as the Gender Empowerment Measure (GEM), and the Gender-related Development Index (GDI).

Eighty years ago, Sadie Alexander raised questions that mainstream economics continues to struggle with, such as the devaluation of household work. In 1970, Ester Boserup was writing about the role of women in economic development. Her writings paved the way for the UN decade for women between 1975 and 1985. In her groundbreaking 1988 book, if women Counted: A New Feminist Economics, Marilyn Waring criticizes the exclusion of housework and care work from the realm of productive economic activity, and the devaluing of nature. Nobel Laureate Amartya Sen too has widely written on gender, family and feminist economics.

The Present Debates and Analyses in Feminist Economics

The Present debates in feminist economics are presented in this section; the examples comprise contributions from different perspectives of feminist economics.

1. Time Budget Studies: Time budget studies and gender budgeting are two central instruments of analysis in feminist economics. In the debate on unpaid labour, time budget studies provide an insight into how people allocate their time between employment, unpaid reproductive labour, leisure etc. Those studies are relevant from a gender perspective since they do not measure monetary flows, but the time spent, as an indicator of economic wealth; they enable the calculation of the share of unpaid labour in GDP. For instance, a study by the German Statistical Agency presents the time spent on these different categories of activities by women and men in Germany during 2012 and 2013. In comparison with the data for 2001 and 2002, both genders spent less time on unpaid labour. Yet, women still spent two thirds of their time on unpaid labour, while men spent less than a half.

2. Gender budgeting: Gender budgeting analyses the gender-specific impacts of public income and spending. An example would be to study the impact of taxes or public spending on childcare on the economic situation of women. Haidinger and Knittler call gender budgeting the currently most-influential concept and instrument of feminist economics. Gender budgeting is a commonly known and accepted concept, which for instance is part of Austria's constitution.

3. Gender and Austerity: In the wake of the financial and economic crisis, which started in the late 2000s and is still present in many parts of the world, a broad research field gained the attention of feminist economics. A central research question developed in this context: what impact did the recession, rescue measures, austerity and their economic and social consequences have on women and gender relations? Although occupations in which men are over-represented were affected more severely by the recession, austerity programmes during the second wave of the crisis had a greater negative impact on women. Public institutions and government assistance faced cuts and thereby relied on the compensation of caring activities in the private sphere, which means that care is again increasingly carried out at home. Moreover, a conservative roll-back can be observed in several EU-member states. Consequently, achievements in gender equality are at issue. At the same time, critical feminist economics have questioned whether the crisis has opened the door for anti-capitalist interventions. In this context, the term multiple crisis illustrates that the financial and economic crisis, the environmental crisis and the crisis of social reproduction are not separate phenomena but different faces of capitalism in crisis.

4. Women and Development: This is a broad field of research in feminist economics. The role of women in and repercussions on women of globalization and economic development are analyzed as well as the marketization of the subsistence economy. Often, micro credits or women in rural areas are the central object of analysis. A further important aspect is women's rights and the consideration of gender in the context of development strategies-currently with regards to the new UN sustainable development goals (see gender budgeting). The field also includes critique of the term development. See, for example, the special issue of Feminist Economics on Land, Gender, and Food Security 2014, 20(1); and the special issue of Gender & Development 2016 24(1) on the Sustainable Development Goals.

5. Care Economy and the Global Care Chain: The term global care chain was first used by Arlie Hochschild (2000). It describes complex processes which, generally speaking, emerge from the entrance of women in western industrial countries into the labour market. This development results in the employment of female migrants as domestic workers or caregivers, while their children are then taken care of by the family. These dynamics prompt questions about the marketization of reproductive activities, working hours, division of labour between genders, employment decisions or the public provision of care. Time budget studies are often used for the analysis of the care economy. There are also analyses on global inequalities, sex work, the feminization of migration or the role of remittances to countries of origin (e.g., the special issue of Feminist Economics on Gender and International Migration 2012, 18(2), forthcoming 2016 special issue of Feminist Economics on sex work and trafficking).

The Present Perspectives of Feminist Economics

Feminist Economics in itself is very diverse, but in particular three perspectives can be highlighted which are similar to currents in feminist theory:

1. Liberal Feminist Economics: this perspective strives for gender equality which can be reached by equal access to the labour market and institutions. Structures enable individuals to realize their

individual potentials. Liberal feminist economics analyses barriers to access for women, wage differentials or the effects of political and economic instruments on women and their economic decisions.

2. Constructive Feminist Economics: this perspective questions attributions of gender identities and perceives the latter as modifiable. Those identities influence economic decisions, structures and processes. At the same time processes and structures have repercussions on identities and other spheres. A central role is assigned to gender performative. For instance, the question arises whether women reproduce gender inequalities and stereotypes if they exercise a labour perceived as 'female' and thereby meet social expectations.

3. Critical Feminist Economics: this perspective refers to the material foundations, rather than to identities, to analyses inequalities. Marxists connected to Silvia Federici and Mariarosa Dalla Costa started a discussion on unpaid reproductive labour and its role in the production process by the wages-for-housework debate in the 1970s. A central aspect of the debate was the critique of the Marxist labour theory of value, which does not account for the reproductive labour carried out by women. Like wage labour, housework is considered to be an exploitative relation. Up to the present day, critical feminist economists expound the problems of the interdependence of capitalism and gender inequalities as well as the necessity of reproductive labour for the capitalist production process

Conclusion

A further central criticism of feminist economics addresses the neoclassical conception of the individual, the homo economic-us, who acts rationally and is utility maximizing on the market and represents a male, white subject. In contrast, feminist economic sees individuals as embedded in social and economic structures, which determine their impossibility as well as possibility for action. Furthermore, the concept of the homo economic-us assumes the existence of an irrational, female and emotional (among other characteristics) other, who is assigned to the 'female', or the so-called 'private' sphere. A further point of departure for critique by feminist economics is the division between the spheres of the market and the household. On the market, productive (male) actions take place; in the 'private' sphere, unproductive (female) activities occur. First, this perspective marks unpaid activities as unproductive and as not generating value. Second, it neglects the role of reproductive activities in the production process. This also has consequences for macroeconomic aggregates, since those activities are not accounted for in national accounts. This is the reason why, for feminist economics, indicators such as the GDP are not suited for measuring wealth.

On the whole, globalization presents a number of challenges to feminist economic and political philosophers who seek to develop conceptions of justice and responsibility capable of responding to the lived realities of both men and women. As globalization will most certainly continue, these challenges are likely to increase in the coming decades. As we have outlined above, feminist economic and political philosophers have already made great strides towards understanding this complex phenomenon. Yet the challenge of how to make globalization fairer remains for feminist philosophers, as well as all others who strive for equality and justice

References

1. Bauhardt, C., G. Çağlar (2010): Gender and Economics. Feministische Kritik der politischen Ökonomie. Wiesbaden: VS Verlag für Sozialwissenschaften.

2. Biesecker, A., C. Wichterich, and U. von Winterfeld (2012): Feministische Perspektiven zum Themenbereich Wachstum, Wohlstand, Lebensqualität. Kommissionsmaterialie M-17(26)23.
3. Çağlar, G. (Hrsg) (2009): Gender and Economics. Feministische Kritik der politischen Ökonomie. Wiesbaden: VS Verlag für Sozialwissenschaften, 18-48.
4. Code, L. (2014): Feminist Epistemology and the Politics of Knowledge: Questions of Marginality. The SAGE Handbook of Feminist Theory, 9-25.
5. Code, L. (1981): Is the sex of the knower epistemologically significant? 12(3-4), 267-276.
6. Federici, S. (2012): Aufstand aus der Küche. Reproduktiosarbeit im globalen Kapitalismus und die unvollendete feministische Revolution, Reihe: Kitchen Politics, Band 1, Münster: Edition Assemblage.
7. Federici, S. (2011): Feminism and the Politics of the Commons. Veröffentlicht in The Commoner, 24.01.2011. http://www.commoner.org.uk/?p=113
8. Ferber, M. A. (2003): A feminist critique of the neoclassical theory of the family. Women, family, and work: writings on the economics of gender: 9-24.
9. Ferber, M. A. und Nelson, Julie A. (Hrsg.) (1993): Beyond Economic Man. Feminist Theory and Economics. Chicago: University of Chicago Press.
10. Habermann (2010): Hegemonie, Identität und der homo oeconomicus. Oder: Warum feministische Ökonomie nicht ausreicht. In: Bauhardt, C. und G. Çağlar (Hrsg.): Gender and Economics. Feministische Kritik der politischen Ökonomie. Wiesbaden: VS Verlag für Sozialwissenschaften, 151-173.
11. Habermann, F. (2008): Der homo oeconomicus und das Andere. Baden-Baden: Nomos.
12. Haidinger, B. und Knittler, K. (2014): Feministische Ökonomie: Intro. Mandelbaum.
13. Haraway, D. (1988): Situated knowledges: The science question in feminism and the privilege of partial perspective. Feminist studies 14(3), 575-599.
14. Harding, S. (1991): Whose Science? Whose knowledge? Thinking from women's lives. Itaca, NY: Cornell University Press.
15. Hartsock, N (1998): Marxist Feminist Dialectics for the 21st Century. Science & Society, 62(3), 400–413.
16. Haug, F. (2008). Die Vier-in-einem-Perspektive: Politik von Frauen für eine neue Linke. Argument-Verlag.
17. Hochschild, A. R. (2000): Global Care Chains and Emotional Surplus Value', in Hutton, W. and Giddens, A. (eds): On the Edge: Living with Global Capitalism. London: Jonathan Cape.
18. Howie, G. (2010): Between Feminism and Materialism - A Question of Method. New York: Palgrave Macmillan.
19. Karamessini, M., and J. Rubery (2013): Women and austerity: The economic crisis and the future for gender equality. Vol. 11. Routledge.
20. Knapp, U. (2002): Beschäftigung und Geschlechterverhältnis. In: Maier, F./Fiedler, A. (Hrsg.): Gender Matters-Feministische Analysen zur Wirtschafts-und Sozialpolitik, fhw- Forschung 42/ 43, Berlin, S. 11-60.
21. Haug, F. (2011): Arbeit jenseits vom Wachstum - die Vier-in-Einem Perspektive. In: Rätz, W., von Egan-Krieger, T. Passadakis, A, Schmelzer, M. und Vetter, A. (Hrsg.): Ausgewachsen! Ökologische Gerechtigkeit. Soziale Rechte. Gutes Leben, 121-129, Hamburg: VSA.
22. Longino, H. E., K. Lennon (1997): Feminist epistemology as a local epistemology. Proceedings of the Aristotelian Society, Supplementary Volumes 71: 19-54.
23. Mader, K. (2013): Feministische Ökonomie-die »Krisengewinnerin«? Oder: »Beyond the Economic Man« in der Krise? Kuswechsel 4/13: 6-16.
24. Mader, K., J. Schultheiss (2011): Feministische Ökonomie-Antworten auf die herrschenden Wirtschaftswissenschaften? In: “Kritik der Wirtschaftswissenschaften”, PROKLA 164, 41(3). Verlag Westfälisches Dampfboot, 405-421.
25. Nelson, J. A. (1995): Feminism and economics. The Journal of Economic Perspectives 9(2): 131-148.
26. Power, M. (2004): Social provisioning as a starting point for feminist economics. Feminist Economics 10(3), 3-19.
27. Pujol, M. (1995): Into the Margin! In Edith Kuiper and Jolande Sap (eds.), Out of the Margin: Feminist Perspectives on Economics. Routledge 17-34.
28. Singer, M. (2010): Feministische Wissenschaftskritik und Epistemologie. In: Becker, R. und B. Kortendiek (eds.): Handbuch Frauen-und Geschlechterforschung: Theorie, Methoden, Empirie, 292-301, Wiesbaden: VS Verlag für Sozalwissenschaften.
29. Statistisches Bundesamt (2015): Arbeitszeit von Frauen: ein Drittel Erwerbsarbeit, zwei Drittel unbezahlte Arbei. Pressemittleiung vom 18.05.2015 – 179/15. Wiesbaden.
30. Staveren, Irene van (2010): Feminist Economics: Setting out Parameters. In: Bauhardt, C., and G.
31. Waring, M., G. Steinem (1988): If women counted: A new feminist economics. San Francisco: Harper & Row.

डाक-पंजीयन म.प्र./भोपाल/4-472/2021-23
पोस्टिंग दिनांक : प्रतिमाह दिनांक 2 से 3, पृष्ठ सं. 152
प्रकाशन दिनांक : 1 से 1 प्रतिमाह

अक्षरा 213

साहित्य की मासिकी

मूल्य 50/-
41 वाँ वर्ष
दिसम्बर 2022

स्तंभ
रमेश दवे, कुसुमलता केडिया

आलेख
करुणाशंकर उपाध्याय, आनंद कुमार सिंह, दिनेश कुमार माली, महेंद्र प्रसाद कुशवाहा, हेमंत जोशी आदि

संस्मरण
हरभजन सिंह मेहरोत्रा, शैलेश पंडित

लेखक की कलम से
उद्भ्रांत

ललित निबंध
सुमन चौरे

कहानी
निर्मला तिवारी आदि

शोध आलेख
माया दुबे, कुलविन्दर कौर आदि

समीक्षा
स्मृति शुक्ल, कमलेश पारे आदि

अक्षरा

213

यू.जी.सी. द्वारा मान्यता प्राप्त
41 वाँ वर्ष

मनोज श्रीवास्तव
प्रधान सम्पादक

जवाहर कर्नावट
प्रबंध सम्पादक

जया केतकी
सम्पादन सहयोग

सुधा बाथम
अक्षर-संयोजन

वार्षिक सदस्यता शुल्क : 500 रुपए
दस वर्षीय सदस्यता शुल्क : 5000 रुपए
एक प्रति 50 रुपये
विदेशों के लिए : एक अंक : 10 डॉलर, वार्षिक : 120 डॉलर
चेक या ड्राफ्ट 'म.प्र. राष्ट्रभाषा प्रचार समिति- 'अक्षरा' के नाम देय
ऑनलाइन पेमेंट के लिये- इंडियन बैंक, हिन्दी भवन शाखा, भोपाल
Ac/ No. 50413818696, IFSC- IDIB000T610

सम्पर्क : म.प्र. राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, हिन्दी भवन, श्यामला हिल्स, भोपाल - 462002 (म.प्र.)
दूरभाष : 0755- 2660909, 2661087, ई-मेल - myakshara18@gmail.com
hindibhawan.2009@rediffmail.com
वेबसाइट - www.akshara.page, www.madhyapradeshrashtrabhasha.com

अनुक्रम - अंक 213, दिसंबर 2022

सम्पादकीय

समय और विचार -31

आलोचना में हास्य-रस क्यों नहीं /**रमेश दवे**/11

स्वयं ज्ञान सम्पन्न रहकर ज्ञानियों का ही संग करना आवश्यक/**कुसुमलता केडिया**/13

प्रेमचंद का मानसरोवर/ **कमल किशोर गोयनका (गतांक से आगे)**/17

आलेख

उद्भ्रांत का काव्य : एक विमर्श/**करुणाशंकर उपाध्याय**/22

विखंडित समय का महाकवि उद्भ्रांत / **आनंद कुमार सिंह**/26

उद्भ्रांत की कविताओं में 'स्त्री-विमर्श' / **दिनेश कुमार माली**/39

हिंदी के ज़रूरी गद्यकार : उद्भ्रांत / **महेंद्र प्रसाद कुशवाहा**/48

सत्य कहउँ लिखि कागद कोरे / **बन्धु कुशावर्ती**/54

स्वयंप्रभा : सूत्र और सार्थकता / **अनिल सिंह**/59

सत्यम् ब्रूयात्-संदर्भ उद्भ्रांत जी की आत्मकथा / **अवध बिहारी श्रीवास्तव**/63

मानव से लेकर मानवेतर अस्तिमताओं की काव्याभिव्यक्ति / **बली सिंह**/66

कविता में नया प्रयोग : अनाद्यसूक्त / **रामधनी द्विवेदी**/71

कविता का अनंत यात्री / **हेमंत जोशी**/73

उद्भ्रांत की लम्बी कविताएँ / **राकेश शुक्ल**/75

देवदारु-सी लम्बी, गहरी सागर-सी / **भोलानाथ कुशवाहा**/78

'मैंने जो जिया' एक आत्मकथा से गुज़रना / **शहंशाह आलम**/81

रमाकांत की कहानी उद्भ्रांत की जुबानी/ **धीरंजन मालवे**/84

संस्मरण

गुरु और चेले सा सम्बन्ध / **हरभजन सिंह मेहरोत्रा**/88

उद्भ्रांत के साथ दो कदम / **शैलेश पंडित**/91

लेखक की कलम से

कविताएँ / **उद्भ्रांत** /96

स्वयंप्रभा : सूत्र और सार्थकता

- अनिल सिंह

शिक्षा - एम.ए., पीएच.डी.।
रचनाएँ - चार पुस्तकें प्रकाशित कतिपय सम्पादित।
सम्मान - राष्ट्रीय एवं अंतराष्ट्रीय सम्मानों से सम्मानित।

'स्वयंप्रभा' कवि रमाकांत शर्मा 'उद्भ्रांत' द्वारा लिखा गया प्रसिद्ध खंडकाव्य है। इसकी रचना सन् 1990 में हुई थी। परंतु इसका पुस्तकाकार प्रकाशन सन् 1998 में ही संभव हो पाया। यद्यपि इसके प्रथम दो सर्ग-'मरु' और 'माया' जनसत्ता पत्र में तथा अंतिम सर्ग 'महाकाश' साहित्यअमृत पत्रिका में सन् 1998 से पहले ही छप चुके थे और काफी चर्चित भी रहे। प्राचीन भारतीय पौराणिक विषयों का आधार ग्रहण कर वे कई महाकाव्यों की रचना भी कर चुके हैं जिनमें 'अभिनव पांडव', 'अनाद्यसूक्त', 'त्रेता', 'प्रज्ञावेणु राधामाधव' एवं 'वक्रतुंड' प्रमुख हैं। 'स्वयंप्रभा' खंडकाव्य भी प्राचीन भारतीय संस्कृति के आधार ग्रंथ 'रामचरितमानस' के एक प्रसंग को आधार बनाकर रचा गया है।

किसी कवि को रचना की प्रेरणा कहाँ और कैसे मिल जाए, यह जाना नहीं जा सकता। जीवन के छोटे-से-छोटे प्रसंग को वह अपनी कल्पनाशक्ति से विकसित कर नवीन संदर्भों के अनुकूल बनाता है और इस हेतु वह प्राचीन वाङ्मय का भी आश्रय लेता है। कवि उद्भ्रांत को भी इस खंडकाव्य को रचने की प्रेरणा 'रामचरितमानस' का पाठ करते हुए अनायास ही हुई थी। वे लिखते हैं, 'मैं श्री रामचरितमानस का नियमित पाठ-अध्ययन किया करता था। किसी ऐसे ही पाठ के दौरान निगाह उस तपस्विनी नारी पर अटक गई, जिसका नाम तक लिखना तुलसी बाबा भूल गए थे और चंद दोहों-चौपाइयों में ही उसके उस असाधारण कार्य-व्यापार की झलक दिखाकर उन्होंने इतिश्री कर ली थी, जिसके कारण सीता जी की खोज में निकले हनुमान, जाम्बवंत, अंगद, नल-नील सहित-क्षुधा और प्यास से पीड़ित, काल के गाल में समाने को आतुर पराक्रमी वानर-समूह में, उसके आश्रम के फल-फूल खाकर और उसी आश्रम के पवित्र सरवर में स्नान कर नए जीवन का संचार हुआ; और जिसके तपोबल ने उन्हें उस दुर्गम आश्रम से निमिष मात्र में ही प्रक्षेपित करते हुए समुद्र के तट तक, सीता का हरण करने वाले दशानन से मरणांतक युद्ध कर अपने प्राणों को होम देने वाले गिद्धराज जटायु के उस वयोवृद्ध, अपाहिज भाई-सम्पाती के निकट पहुँचा दिया, जिसने प्रकृति-प्रदत अपनी दूरदृष्टि से सीता जी की झलक प्रत्यक्ष करते हुए रावण-वध के श्रीराम के कार्य को सुगम बना दिया।' (स्वयंप्रभा - उद्भ्रांत; पृ. 8)

इस कथन में कवि जिस तपस्विनी नारी के महत्व की ओर इंगित कर रहे हैं, वह कोई और नहीं 'स्वयंप्रभा' ही थी। 'स्वयंप्रभा' के इस प्रसंग पर दृष्टि टिकते ही कवि उद्भ्रांत को न केवल स्वयंप्रभा के संदर्भ में शोध की प्रेरणा मिली बल्कि उसके महत्व को स्थापित करने के लिए उन्होंने खंडकाव्य ही रच डाला।

कवि उद्भ्रांत का यह खंडकाव्य आधुनिक हिंदी परंपरा की चली आती एक धारा का अटूट हिस्सा है। इस परंपरा के अंतर्गत प्राचीन पुराकथाओं की आधुनिक संदर्भों में नई व्याख्या की गई है और इन व्याख्याओं की महाकाव्य-खंडकाव्य के रूप में पुनरुद्भावना की गई है। मैथिली शरण गुप्त द्वारा रचित 'साकेत, जयद्रथ वध, भारत भारती', नरेंद्र शर्मा द्वारा रचित 'द्रोपदी, उत्तरजय', धर्मवीर भारती की 'कनुप्रिया', केदारनाथ

मिश्र प्रभात की 'ऋतम्भरा', दिनकर की 'उर्वशी', 'रश्मिरथी', नरेश मेहता की 'संशय की एक रात', मोहनलाल महतो वियोगी की 'आर्यावर्त', डॉ. विनय द्वारा रचित 'एक पुरुष और' तथा कुँवर नारायण द्वारा रचा गया 'आत्मजयी' ऐसे ही काव्य ग्रंथ हैं। कवि उद्भ्रांत ने न केवल स्वयंप्रभा पर शोध करके उनकी पहचान उजागर की बल्कि आधुनिक संदर्भों से जोड़ते हुए स्वयंप्रभा को आधुनिक काव्य-चेतना का भी महत्त्वपूर्ण हिस्सा बनाया।

किसी भी कृति की रचना के पीछे कृतिकार के कुछ निश्चित उद्देश्य होते हैं। इस रचना के पीछे भी कवि उद्भ्रांत के कुछ मंतव्य हैं, जिनके कारण वे स्वयंप्रभा खंडकाव्य की रचना हेतु प्रेरित हुए। इन उद्देश्यों को निम्नलिखित वर्णन से समझा जा सकता है। पहला और सबसे महत्त्वपूर्ण उद्देश्य यह था कि रामकथा में स्वयंप्रभा के चरित्र के महत्व को जो सम्मान मिलना चाहिए था वह पूर्व के कृतिकारों के द्वारा नहीं दिया गया। चाहे वाल्मीकि कृत 'रामायण' की बात हो या तुलसीदास कृत 'रामचरितमानस' हो, दोनों ही ग्रंथों में अत्यंत संक्षिप्त विवरण के साथ रामकथा के इस महत्त्वपूर्ण बिंदु की पूर्ति कर दी गयी। जिसका उल्लेख करते हुए कवि उद्भ्रांत लिखते हैं कि 'वाल्मीकि रामायण में स्वयंप्रभा से संबंधित चंद श्लोक ही मिलते हैं। बाबा तुलसीदास तो 'नानापुराणनिगमागमसम्मत' और व्यापक फलक वाले थे। उन्होंने अपने शताधिक वर्षों वाले सुदीर्घ जीवन का आधे से अधिक हिस्सा तो संपूर्ण देश के विभिन्न स्थलों की घुमक्कड़ी और अध्ययन करते हुए- जीवन का और विभिन्न ग्रंथों का भी-व्यतीत किया था। उन्होंने भी अपने वृहदाकार महाकाव्य के अंतर्गत दो दोहों और चार चौपाइयों में ही स्वयंप्रभा का नामरहित वर्णन करते हुए इतिश्री कर ली थी।' **(स्वयंप्रभा - उद्भ्रांत; पृ. 10)**

रामकथा का अध्ययन और मनन करते हुए कवि को यह बात ठीक नहीं लगी अत: उन्होंने स्वयंप्रभा के चरित्र को सही सम्मान दिलाने के लिए इस खंडकाव्य की रचना की। अपने से पूर्व के रचनाकारों की इस भूल पर आश्चर्य प्रकट करते हुए और स्वयंप्रभा प्रकरण के महत्व की ओर इंगित करते हुए कवि उद्भ्रांत इस महत्त्वपूर्ण प्रसंग की उपेक्षा पर आश्चर्य व्यक्त करते हुए कहते हैं, 'कल्पना तो कीजिए कि अगर स्वयंप्रभा-प्रकरण की यह महत्त्वपूर्ण कड़ी रामकथा से अलग कर दी जाए, तो बाबा तुलसीदास सीता जी की खोज के उस अपरिहार्य बानक को सार्थकता का जामा पहनाते हुए अपनी कथा के निर्णायक लक्ष्य रावण-वध तक पहुँचते हुए-रामावतार का औचित्य सिद्ध करने के-अपने पूर्व-निर्धारित आदर्श-बिंदु तक कैसे पहुँच सकते थे?' **(स्वयंप्रभा - उद्भ्रांत; पृ. 8-9)**

मेरुसावर्णि ऋषि की पुत्री ब्रह्मवादिनी स्वयंप्रभा अपने पिता के आश्रम में ही रहकर यज्ञ, तप और स्वाध्याय में रत रही। ब्रह्मवादिनी संज्ञा का अर्थ ही है ऐसी कन्या-जो आजन्म अविवाहित रहकर तप, यज्ञ और स्वाध्याय में ही जीवन अर्पित कर दे। कवि के अनुसार स्वयंप्रभा ने विष्णु की तपस्या की थी, जिससे प्रसन्न होकर उसे वरदान मिला था कि राम अवतार के समय उसे मां सीता की खोज में सहायक बन कर अपने जन्म को सार्थक करते हुए अंतिम क्षणों में राम के रूप में दर्शन मिलेगा। इसी में उसके जीवन की सार्थकता निहित थी। कवि उद्भ्रांत ने इसी के अनुरूप अपनी काव्य-विषयवस्तु का विकास किया है।

स्वयंप्रभा खंड काव्य की रचना के पीछे कवि उद्भ्रांत के मंतव्य एकदम स्पष्ट रहे हैं। एक तरफ वे भारतीय वाङ्मय के उपेक्षित एक पात्र के महत्व को स्थापित करना चाहते हैं और दूसरी तरफ वे आधुनिक संदर्भों में पर्यावरण प्रदूषण की समस्या, सकारात्मक जीवनमूल्यों का महत्व, मनुष्य में बढ़ रही राक्षसी मनोवृतियों पर प्रहार, संघर्षशीलता की सराहना जैसी उद्देश्यपूर्ण संभावनाओं से भी इस खंडकाव्य को समृद्ध करते हैं।

इस खंडकाव्य की मुख्य विषयवस्तु को गति देते हुए इसमें कवि ने कण्डु ऋषि की अंतर-कथा का सन्निवेश किया है। जिसके माध्यम से पर्यावरण के महत्त्व को बताने की कोशिश कवि ने की है। हम सब जानते हैं कि आधुनिक काल में आज के समय पर्यावरण प्रदूषण की समस्या बहुत ही भयानक रूप में हमारे सामने आ चुकी है। जल, वायु, पृथ्वी, आकाश यह चार तत्व अत्यंत ही प्रदूषित स्थिति में देखे जा सकते हैं। वर्तमान समय में बोतलबंद पानी का बिकना पूरी मनुष्यता के लिए बड़ी ही शर्मनाक बात है। प्लास्टिक तथा अन्य कचरों से पृथ्वी का प्रदूषण स्तर बहुत ज्यादा बढ़ गया है तथा तमाम

गैसीय अपशिष्ट, आकाश और वायु में सम्मिलित हो जाने से वह भी अत्यंत प्रदूषण की स्थिति में हैं। न साँस लेने को शुद्ध वायु है, न पीने को शुद्ध जल और जीवनदायी पृथ्वी भी कितनी अशुद्ध हो चुकी है कि उसमें पैदा होने वाले अनाज और फल भी प्रदूषित हैं। हम अंदाजा लगा सकते हैं कि मनुष्य जीवनदायी हर परिस्थिति को अपने प्रतिकूल बना चुका है। लगातार वृक्षों की कटान भी इसके लिए अत्यंत जिम्मेदार है। हमें अगर इस पृथ्वी को निर्जन होने से रोकना है, तो मनुष्य को अपनी गतिविधियों को पर्यावरण के अनुकूल बनाना होगा और इसके संरक्षण के लिए हर तरह का सार्थक प्रयास करना होगा अन्यथा भविष्य में आने वाली पीढ़ियों के लिए एक जीवित-मृत्यु के अतिरिक्त विरासत में हम कुछ और नहीं छोड़ पाएँगे। पुत्रशोक से संतप्त कण्डु ऋषि के श्राप के कारण तो राक्षसों का सर्वनाश हुआ था, जिसके कारण वह पूरी धरती निर्जन और वनस्पति-विहीन हो गयी। परंतु मनुष्य तो स्वयं अपने विनाश से शापित है। वह अपने ही हाथों अपने अज्ञान के कारण पूरी प्रकृति को नष्ट करने पर आमादा है। कवि उद्भ्रांत ने पर्यावरण की इस समस्या का काव्य में हृदय विदारक चित्रण किया है –

'पेड़-पौधे-वृक्ष / जो हैं बहुत आवश्यक
प्रकृति के संतुलन के हित
उन्हें वे रौंदते –
देते उखाड़। / नए पौधों को लगाने की
भला क्या सोचते वे?' (स्वयंप्रभा-उद्भ्रांत; पृ. 34)

असुरों की इस दुष्टता का परिणाम अत्यंत भयानक हुआ। ऋषि कण्डु का शाप असुरों को तो नहीं समाप्त कर सका पर उसके कारण वह क्षेत्र निर्जन, प्रदूषित और वनस्पति से रहित हो गया। वनस्पतियाँ वायु को शुद्ध कर मनुष्य को साफ-सुथरी प्राणवायु उपलब्ध कराती हैं। जब वे ही नहीं रही तो परिणाम बताते हुए कवि उद्भ्रांत कहते हैं –

'भर गई दुर्गंध / उस वातावरण में।
फैलने /बीमारियाँ फिर लगीं
ऋषि-मुनि आश्रमों में। / फेंफड़े छलनी लगे होने
हृदय पर घात होता; / दृष्टि होवे क्षीण
ऊँचा लगे सुनने कान –
बहरापन बढ़ा। / लोग होने लगे लकवाग्रस्त,
पीड़ित –
ज्वर के दुःसाध्य
रोगों से वहाँ।' (स्वयंप्रभा – उद्भ्रांत; पृ. 36)

इस तरह कवि ने इस ग्रंथ में मानवों की राक्षसी प्रवृत्तियों को प्रतीकात्मक ढंग से उजागर किया है। उद्भ्रांत जी ने जीवन मूल्यों के महत्व की पुनस्थापना का भी प्रयास अपने इस ग्रंथ के माध्यम से किया है। यह सृष्टि का नियम है कि रोशनी के बाद अँधेरा और अँधेरे के बाद रोशनी का आवागमन होता रहता है। यह एक सनातन चक्र है। मानव जीवन में भी सच और झूठ का ऐसा ही चक्र लगातार चलता रहता है, परंतु सत्य-असत्य का यह चक्र रोका जाना असंभव नहीं है। मनुष्य ने अपने लाखों वर्ष के इतिहास में कुछ जीवन मूल्यों का विकास किया है-सत्य, अहिंसा, करुणा, वसुधैव कुटुंबकम, प्रकृति की सजीवता की मान्यता आदि ऐसे ही सिद्धांत है। जब-जब मनुष्य इन सिद्धांतों के उलट व्यवहार करता है, न केवल प्रकृति का विनाश होता है बल्कि वह अपने विनाश का भी कारण बनता है। किसी मनुष्य का सुर-असुर होना इन जीवन मूल्यों से ही निश्चित होता है। मनुष्य का अनाचरण स्वयं उसके और प्रकृति के विनाश को ही सुनिश्चित करता है। कवि उद्भ्रांत ने इस खंडकाव्य में जीवन मूल्यों के महत्व का पुनर्स्थापन करने का प्रयास किया है। इसे उनकी निम्नलिखित पंक्तियों के माध्यम से देखा जा सकता है –

'आसुरी आचरण, / बढ़ते जा रहे थे।
खुले मदिरालय, / जहाँ मदिरा पियें
फिर माँस भक्षण करें राक्षस। / हो उठें
उन्मत्त औ' अश्लील / अपनी हरकतों में,
नगरवधुएँ / रमण करतीं दानवों संग
द्यूत चारों ओर होता। / यों हुआ अपवित्र
सारा क्षेत्र / असुर-आगमन से।' (स्वयंप्रभा – उद्भ्रांत; पृ. 35-36)

यह सब मनुष्यता के लक्षण नहीं हैं। यह आसुरी वृत्तियाँ हैं, जिनका विकास मनुष्य के भीतर ही संभव है। वर्तमान समय में भी ऐसी ही प्रवृत्तियाँ हमें अपने चारों तरफ दिखाई दे रही हैं। बढ़ता अपराधीकरण इसी आसुरी वृत्ति का ही परिणाम है। ऐसे में कवि का विचार है कि हमें परंपरा से लाए हुए अपने सकारात्मक जीवन मूल्यों की तरफ पलट कर देखना होगा।

यदि हम मनुष्यता और इस सृष्टि को जीवित रखना चाहते हैं, तो हमें जीवन मूल्यों के महत्व को समझने की अत्यंत आवश्यकता है। इस प्रकार कवि ने व्यापक उद्देश्यों को ध्यान में रखते हुए इस खंडकाव्य की रचना की है।

जहाँ तक इस काव्यग्रंथ के नामकरण का प्रश्न है, कवि उद्भ्रांत ने इस खंडकाव्य का शीर्षक 'स्वयंप्रभा' रखा है। इसके पीछे उनकी अपनी एक विशिष्ट सोच है और इस सोच की अपनी एक विशिष्ट परंपरा है। हिंदी साहित्य के इतिहास में द्विवेदी युग ऐसा युग था, जिसके अंतर्गत आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी ने पौराणिक गाथाओं में उपेक्षित किंतु महत्त्वपूर्ण पात्रों पर मौलिक उद्भावना के आधार पर काव्य-सृजन का आग्रह युगीन कवियों से किया था। उनके इसी परामर्श का सम्मान करते हुए मैथिलीशरण गुप्त ने 'साकेत' प्रबंध काव्य की रचना की थी, जिसमें त्रेता युग के नायक राम के छोटे भाई लक्ष्मण की पत्नी उर्मिला की व्यथा-कथा का चित्रण किया गया था। इसी परंपरा की अगली कड़ियों में से एक कड़ी के रूप में हम 'स्वयंप्रभा' को भी देख सकते हैं।

तुलसीदास कृत रामचरितमानस के अध्ययन-मनन के क्रम में कवि उद्भ्रांत को एक विसंगति ने अत्यंत व्यथित कर दिया। विसंगत यह थी कि पूरी रामकथा को महत्त्वपूर्ण दिशा देने वाली स्वयंप्रभा का नामोल्लेख भी तुलसीदास जी ने नहीं किया और दो-दोहों तथा चार चौपाइयों में उस प्रसंग की इतिश्री कर दी। यह स्वयंप्रभा ही थी जिसके मार्गदर्शन के कारण हनुमान, जाम्बवंत, अंगद, नल-नील सहित संपूर्ण वानर समूह समुद्र तट में संपाती से मिल पाता है और संपाती उन्हें न केवल यह बताता है कि माता सीता का हरण दशानन रावण के द्वारा किया गया है बल्कि उन्हें सुदूर और दिव्य-दृष्टि से माता सीता का हाल भी सुनाता है और उस स्थान का संकेत भी करता है जहाँ वे हैं। कवि के अनुसार यही वह बिंदु है, जहाँ से रावण-वध की पृष्ठभूमि तैयार होती है। रामचरितमानस की इस प्रमुख विसंगति को दूर करते हुए कवि उद्भ्रांत ने इस खंडकाव्य की रचना की है। इस विसंगति के कारण जिस पात्र के साथ अन्याय हुआ था वह स्वयंप्रभा थी।

अतः स्वयंप्रभा के संपूर्ण व्यक्तित्व को महत्व देते हुए कवि उद्भ्रांत ने इस खंडकाव्य की रचना की थी। स्वयंप्रभा अपने भक्ति और तपस्या से आत्मा को भी दिव्य तेजमय बना लेती हैं। यही कारण है कि स्वयंप्रभा सम्पूर्ण भुवन में अपनी प्रतिभा से यशस्वी हुई। स्वयंप्रभा के संदर्भ में कहा भी गया है-

'यह अनूठी प्रभा / तुझमें जगमगाती है स्वयं ही
तू स्वयंप्रभा हो गई है-
स्वयंप्रभा ही नाम तेरा / जगत में
विख्यात होगा।' (स्वयंप्रभा-उद्भ्रांत; पृ. 85)

स्वयंप्रभा खंडकाव्य की केंद्र बिन्दु तपस्विनी स्वयंप्रभा की व्यक्तिवाची संज्ञा के अलावा लाक्षणिक और व्यंजक अर्थों में भी प्रयोग में लाया गया है। 'स्वयंप्रभा' के अल्प ज्ञात चरित्र को सिर्फ कथात्मक विस्तार ही नहीं दिया गया है। अपितु वैदिक ऋषि परंपरा में स्त्रियों के अवर्णनीय अवदान को भी उजागर करता है। कवि ने बहुत से प्रसंग को सांकेतिक ढंग से पाठकों के विवेक पर छोड़ दिया है। स्वयंप्रभा अपने काव्यगुणों से ही रूढ़ अवधारणाओं पर प्रहार करते हुए नई जीवन-दृष्टि भी प्रदान करती हैं। इसलिए इस खंडकाव्य का शीर्षक 'स्वयंप्रभा' सर्वथा अर्थ गर्भित है। प्रस्तुत खंडकाव्य में कुल 9 सर्ग हैं-माया, मुमुक्षु, मार्ग, मही, मारुति, माँ, महोदधि एवं महाकाश। खंडकाव्य के पाँचवें सर्ग मारुति में स्वयंप्रभा का आगमन होता है फिर भी इस पूरे खंडकाव्य के केंद्र में 'स्वयंप्रभा' ही है। यद्यपि कवि ने खंडकाव्य को आधुनिक संदर्भों से भी जोड़ा है और इसके अंतर्गत आधुनिक जीवन की मूल्यहीनता और पर्यावरण की उपेक्षा जैसे विषयों को भी महत्व दिया है। फिर भी खंडकाव्य के केंद्र में स्वयंप्रभा ही है। इस तरह निष्कर्ष रूप में यह कहा जा सकता है कि इस खंडकाव्य का नाम 'स्वयंप्रभा' अपने आप में अत्यंत सार्थक नाम है।

शिव-धाम, निवास रामनगर,
स्टेशन रोड, लालचक्की, उल्हास नगर,
जिला ठाणे-421004 (महा.)

विद्यावर्धिनी संचालित,

अण्णासाहेब वर्तक मानव्य, केदारनाथ मल्होत्रा वाणिज्य व ई. एस. अंड्राडिस विज्ञान महाविद्यालय

वसई रोड (प.), जि. पालघर – ४०१२०२

(मुंबई विद्यापीठाशी संलग्न)

मराठी विभाग

आणि

भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद (ICSSR), पश्चिम विभागीय केंद्र, मुंबई

यांच्या संयुक्त विद्यमाने आयोजित

Indian Council of Social Science Research

MAH/MUL/03051/2012
ISSN-2319 9318

विद्यावार्ता

International Peer reviewed Research Journal

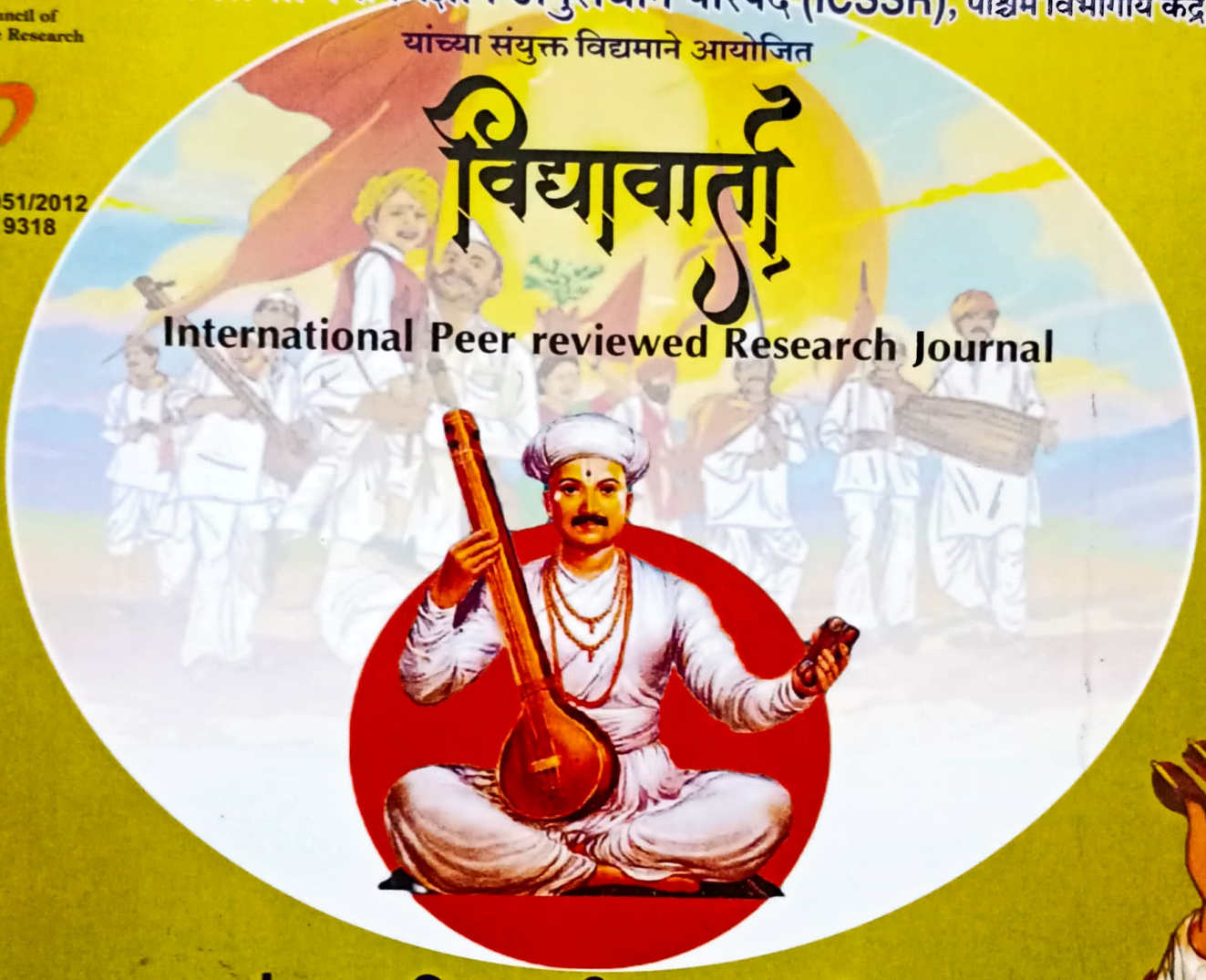

।। संत साहित्याची समकालीनता ।।

एक दिवसीय राष्ट्रीय चर्चासत्र

शनिवार दि. १७ डिसेंबर २०२२

समन्वयक
डॉ. शत्रुघ्न फड
(मराठी विभाग प्रमुख)
९४२२६७०५३०

सहसमन्वयक
डॉ. सखाराम डाखोरे
(सहाय्यक प्राध्यापक)
९८५०११६६४५

प्रा. शैलेश औटी
(सहाय्यक प्राध्यापक)
९८३३४८७४६८

निमंत्रक
डॉ. अरविंद उबाळे
(प्राचार्य)

MAH/MUL/ 03051/2012 ISSN :2319 9318

आंतरविद्याशाखीय बहुभाषिक शोध पत्रिका

विद्यावार्ता™

Special Issue-02
Dec. 2022

विद्यावर्धिनी शिक्षणसंस्था वसई

आणि

भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद (ICSSR),
पश्चिम विभागिय केंद्र, मुंबई

यांच्या संयुक्त विद्यमाने आयोजित एक दिवसीय राष्ट्रीय चर्चासत्र

'संत साहित्याची समकालीनता'

❖ **विद्यावार्ता** या आंतरविद्याशाखीय बहूभाषिक त्रैमासिकात व्यक्त झालेल्या मतांशी मालक, प्रकाशक, मुद्रक, संपादक सहमत असतीलच असे नाही. **न्यायक्षेत्र:बीड**

"Printed by: **Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.** Published by **Ghodke Archana Rajendra** & Printed & published at Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.,At.Post. Limbaganesh Dist,Beed -431122 (Maharashtra) and Editor **Dr. Gholap Bapu Ganpat.**

Reg.No.U74120 MH2013 PTC 251205
Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.
At.Post.Limbaganesh,Tq.Dist.Beed
Pin-431126 (Maharashtra) Cell:07588057695,09850203295
harshwardhanpubli@gmail.com, vidyawarta@gmail.com
All Types Educational & Reference Book Publisher & Distributors / www.vidyawarta.com

INDEX

01) महाराष्ट्रीय संतांचे भाषिक योगदान
प्रा. नेहा सावंत, मुंबई ||11

02) संत साहित्य आणि सामाजिक परिवर्तन
सह. प्रा. प्रज्ञा मनिष पंडित, ठाणे ||19

03) वारकरी संप्रदायातील संत आणि त्यांचे विचार
प्रा.मनिषा प्रकाश ठाकरे, नायगाव (पूर्व) ||26

04) गोमंतकीय संतकवी सोहिरोबानाथ आंबिये
प्रा. वीणा केरीकर, गोवा ||30

05) समाज प्रबोधक एकनाथांची भारूडे
सहा. प्रा. उगले वृषाली सोपान, नाशिकरोड ||35

06) संत नामदेव यांच्या अभंगांचे स्वरूप आणि वैशिष्ट्ये
प्रा. संजय नामदेवराव आठवले, जि. नांदेड ||40

07) संत साहित्यात संत कवयित्रींचे योगदान
सह. प्रा. संतोष लक्ष्मण राणे, ठाणे ||45

08) संत नामदेवांची अध्यात्मिक लोकशाही
सहा.प्रा.सुधीर सैंदाणे, जि. पालघर ||51

09) संत साहित्य : संशोधनाच्या नव्या दिशा
मनोज रामजी मुनेश्वर, औरंगाबाद ||53

10) मध्ययुगीन संतांचा विचार आणि पर्यावरण: एक अभ्यास
मनोरमा राजरत्न बनसोडे(तिजारे) ||56

11) हरिपाठ व विज्ञान : एक अनुबंध
प्रा.डॉ.दत्तात्रय प्र.डुंबरे, श्रीम.मयुरी पवार, जि.पालघर ||59

12) संत साहित्यातील संत कवयित्रींचे योगदान असलेल्या कवयित्री महदंबा, मुक्ताबाई, ...
प्रा. सौ. रिध्दिसिध्दी सुरेश गायकवाड, जिल्हा–पालघर ||68

www.vidyawarta.com/03 — http://www.printingarea.blogspot.com

26) संत साहित्यातील विद्रोह
प्रा. डॉ.राजेंद्र महादू आचार्य, रायगड ||138

27) संत ज्ञानेश्वर ते गाडगे महाराज चार संतांचे सामाजिक प्रबोधन
प्रा. मल्हारी पवार, शिवळे ||143

28) संत साहित्यात संत कवयित्रींचे योगदान
बिन्नर बंडू वसंत, डॉ.इंगळे नंदकुमार ||147

29) संत साहित्य आणि पर्यावरण
रमेश नागेश सावंत, मुंम्बई ||151

30) मराठीतील संत कवयित्रींचे साहित्य
प्रा. डॉ. राजू शंकर शनवार, ठाणे ||156

31) संत साहित्य आणि पर्यावरण
श्री.यशवंत तुकाराम सुरोशे, जि.— ठाणे ||160

32) संत साहित्य आणि समाज प्रबोधन
डॉ. स्नेहा सुवास प्रभु महांबरे, गोवा ||165

33) संत मीराबाईंचे नाव (मीराबाई, मीरांबाई की मीराँबाई?)— समन्वयाची एक दिशा
प्रा.मॅक्सवेल लोपीस ||171

34) संत एकनाथ व संत तुकाराम महाराज यांच्या काव्यातील मन विषयक विचार: एक अभ्यास
प्रा. नामदेव छबुराव तळपे, प्रा. डॉ रमाकांत कराड ||176

35) संत तुकारामांचे अभंग व वर्तमान समाज
डॉ.रविंद्र डाखोरे, जि. अमरावती ||180

36) संत साहित्य आणि समाजप्रबोधन
प्रा. डॉ. मारोती बालासाहेब भोसले, जि. परभणी ||182

37) संतसाहित्य आणि लोकसाहित्य
ज्योनस व्हेलेंटाईन वसईकर, डॉ. शत्रुघ्न फड ||187

38) संत साहित्य आणि पर्यावरण
संदीप देवीदास पगारे, डॉ. तुषार चांदवडकर ||191

39) राष्ट्रसंत तुकडोजी के काव्य में प्रगतिशील चिंतन की अभिव्यक्ति
डॉ. गाडीलोहार बन्सीलाल हेमलाल, नाशिक ||196

www.vidyawarta.com/03 — http://www.printingarea.blogspot.com

उपयोग आपल्या साहित्यात केला असावा असे वाटते. असे हे संत समाजाचे मार्गदर्शक तर होतेच, परंतु ते समाज सुधारकही होते.

संक्षेपात सांगायचे झाले तर संतांच्या काव्यातील आणि साहित्यातील सृष्टी आणि पर्यावरण यांचे दाखले शोधताना एक गोष्ट ठळकपणे जाणवते ती म्हणजे संतांनी दिलेला 'जगा आणि जगू द्या' हा मूलभूत संदेश. आजच्या परिस्थितीत त्याचीच नितांत गरज आहे. खरे तर आपण संतांच्या उपदेशाकडे दुर्लक्ष केल्यामुळे आपल्या जगाची आज ही अवस्था झाली आहे. संतांच्या साहित्यात असलेला पर्यावरणाचे संतुलन राखून त्याचे संवर्धन करण्याचा विचार हा निश्चितच महत्त्वपूर्ण होता. समाजाला पर्यावरणाचे महत्त्व पटवून देणारे संदेश देणारे साहित्यलेखन करणाऱ्या संतांचे आपल्या समाजावर अनंत उपकार आहेत. संतांच्या पर्यावरण विषयक भूमिकेला अनुसरून त्यांच्या उपदेशाचे पालन करून आपण पृथ्वीला आणि पर्यायाने जीवसृष्टीस तापमान वाढीसारख्या संकटांपासून वाचविले पाहिजे. यासाठी संत ज्ञानदेवांची पसायदानातील प्रार्थनेतील विचार समर्पक वाटतात. विश्व कल्याणाचे पसायदान मागताना ज्ञानेश्वर माऊलींनी अशी प्रार्थना केली आहे.

'जे खळांची व्यंकटी सांडो। भूतां परस्परे जडो मैत्र जीवांचे।
दुरितांचे तिमिर जावो । विश्व स्वधर्म सूर्ये पाहो ।
जो जे वांछील तो ते लाहोद्य प्राणीजात ।'

संदर्भ:

१. मराठी विश्वकोश
२. ज्ञानेश्वरी
३. संत तुकाराम गाथा
४. श्रीमत् ग्रंथराज दासबोध
५. गोमंतक (दिवाळी अंक २०११) – लेखक डॉ. वासुदेव सावंत
६. सार्वमतमधील लेख ' संत साहित्य आणि पर्यावरण – लेखक डॉ.अशोक लिंबेकर

❑❑❑

30

मराठीतील संत कवयित्रींचे साहित्य

प्रा. डॉ. राजू शंकर शनवार
सोनुभाऊ बसवंत कला व वाणिज्य महाविद्यालय, शहापूर. ठाणे

संत सज्जनांबद्दल चे एक सूक्ती सुभाषित आहे....
'वदन प्रसादसदनं सदयं हृदयं सुधामुचो वाचः।
करणं परोपकरणं येषां केषां न ते वंद्या :।'

अर्थात... ज्यांचे मुख हे प्रसन्नतेचे आगर, हृदय हे दयेने युक्त, वाणी ही अमृताचा वर्षाव करणारी आणि ज्यांचे शरीर परोपकारासाठीच असते असे ते कोणालाही वंदनीय नाहीत... ते सर्वांना नित्य वंदनीय असतातच.

संस्कार तिथे संस्कृती असे आपण म्हणतो. आपल्या संस्कृतीला दिशा दिली ती आपल्या संत साहित्याने ! आपली मनं घडवली ती संतसाहित्यानं! मराठी संत साहित्याला प्रदीर्घ परंपरा लाभली. म्हणूनच स्वदेश, स्वभाषा जनत आणि संवर्धन झालं. संतसाहित्यात परमेश्वर भेटीची आस आहेय तसा आत्मस्वरूपाचा ध यासही आहे. आत्माविष्काराची उस्फूर्तता आहे, तशी लोककल्याणाची तळमळही आहे. अर्थासाठी आनंदाचे आवार घालून 'हे विश्वाची माझे घर' या जाणिवेने 'अवघाची संसार सुखाचा करीन' ही प्रतिज्ञा आहे. हे साहित्य आपल्याला विश्वात्मकतेकडे घेऊन जाते. विश्वबंधुत्वाच्या नात्याने अखिल मानवजातीशी नाते जोडते. याचमुळे ते कालविशिष्ट असूनही कालातीत ठरले आहे. आज एकविसाव्या शतकातही ते आपणास दिशादर्शक आणि आत्मबोधन करते आजच्या गतिमान आयुष्याला मन:शांतीने दिलासा देऊन विश्वशांतीकडे घेऊन जाते.

संत साहित्याचा अभ्यास मानवी जीवनातल्या अनेक अनुभवांना आणि ज्ञानक्षेत्रांना व्यापणारा आहे.

तत्वज्ञान, अध्यात्म, भाषा, संस्कृती, इतिहास असे अनेक विषय त्याचा आशय होतात. महाराष्ट्र ही संतांची भूमी. महाराष्ट्राला या संतांनी एक अध्यात्मिक व वैचारिक बैठक घालून दिली. भक्तीचा मार्ग सर्वसामान्य जनतेसाठी मोकळा केला. तेराव्या शतकापासून सतराव्या शतकापर्यंत सर्वच संतांनी धर्माच्या व अध्यात्माच्या माध्यमातून समाजोन्नतीचे कार्य केले. ''संतांनी नेहमीच समाजातील सद्गुणांची पाठराखण करत वाईट वृत्तीचा नाश व्हावा, यासाठी जनजागृती केली. सामाजिक विषमता, अंधश्रद्धा या विषयावर समाजाला आपल्या कृतीतून मार्गदर्शन केले. जात, धर्म यांची बंधने गळून पडली व त्यामुळे अठरापगड जातीतील भक्तांची मांदियाळी यावर तयार झाली. संतांनी स्वकर्म सांभाळून भक्ती केली व लोकांना भगवंत पाहण्याची शिकवण दिली.''१

याच काळात स्त्रियांनी देखील आपले आध्यात्मिक रूप प्रकट करताना उज्वल दर्जाचे लेखन केले. संत ज्ञानेश्वरांनी 'दुरितांचे तिमिर जावो । जो जे वांछिल तो ते लाहो ' असे मानवतावादावर आधारित पसायदान सांगितले. समाजात सामाजिक समानता आणि एकात्मता प्रस्थापित होण्यास सुरुवात झाली होती. त्या सामाजिक अवस्थेत स्त्रीचे संतपण आणि वाङ्मय लेखन याला विशेष ऐतिहासिक महत्त्व आहे. बाराव्या शतकाच्या उत्तरार्धात महादंबा या आद्य स्त्री संत व कवयित्री ते सोळाव्या शतकातील समर्थ शिष्या वेणाबाईपर्यंत स्त्री संत दिसून येतात. महदंबा, मुक्ताबाई, जनाबाई, कान्होपात्रा, बहिणाबाई, वेणाबाई आणि चोखियाची महारीण संत सोयराबाई अशा या संत कवयित्री.

महदंबा:—

मराठीत आद्य कवयित्रीचा मान महानुभाव पंथातील महदंबेकडे जातो. सर्व संत स्त्रिया सर्वसामान्य आहेत. त्यांना कुठलीही श्रेष्ठ अशी कुलपरंपरा नव्हती. संपत्ती किंवा प्रापंचिक सुख नव्हते सामाजिक प्रतिष्ठा नव्हती. केवळ कष्ट व हालअपेष्टा यांच्या नशिबी होत्या. महानुभाव पंथाचे संस्थापक चक्रधरस्वामी यांना प्रश्न विचारून त्यांच्याकडून उत्तरे काढून घेणे, हा महादाईसाचा क्रम होता. तिने लिहिलेले वाङ्मय म्हणजे धवळे, मातृकी रुक्मिणीस्वयंवर आणि गर्भकांड ओव्या, धवळे म्हणजे लग्नसमारंभात म्हणावयाची गाणी, धवळ्यावरून तात्कालीन सामाजस्थितीविषयी माहिती मिळते. चक्रधरांच्या निर्वाणानंतर तिने त्यांच्या विरहाने व्याकूळ झालेल्या शिष्यगणांना सावरले. महदंबेला चक्रधरांच्या आणि त्यांच्यानंतर गुरु गोविंदप्रभूंच्या शिष्यगणात महत्त्वाचे स्थान होते.

संत मुक्ताबाई:—

मराठी वाङ्मयातील दुसरी कवयित्री म्हणजे ज्ञानेश्वरांची बहीण मुक्ताबाई. मुक्ताबाईने अध्यात्माचा अभ्यास केला होता. ती ज्ञानी होती, तसेच काव्यात्मकता आणि प्रतिभा यांनी परिपूर्ण होती. वास्तविक मुक्ताबाईचे फक्त पन्नासच अभंग प्रसिद्ध आहेत. ''प्राचीन मराठी कवयित्रींमध्ये सर्वात अधिक प्रगल्भ व्यक्तिमत्व मुक्ताबाईचे असे म्हटले जाते.''२ तसेच ती वयाने सर्वांपेक्षा लहान होती. वयाच्या पंधराव्या वर्षी ती समाधिस्त झाली.

लौकिक जीवन तसेच तीन बंधू सोडून कौटुंबिक नाती, सांप्रदायिक आचारविचार तसेच पारंपारिक स्त्रीजीवनाची कोणतीच बंधने अद्वैतानंदात अखंड रमणाऱ्या मुक्ताबाईच्या मुक्तावस्थेत आड आली नाहीत. पण ती नामदेवांना मात्र उपदेश करताना आढळली. नामदेवांचा अहंकार मुक्ताबाईला जाणवला. निवृत्तीनाथांनी तो सहन केला, मात्र मुक्ताबाई त्यांच्यावर रागावली आणि कडाडली,

अखंड जयाला देवाचा शेजार ।
कारे अहंकार नाही गेला?
मान अपमान वाढविसी हेवा
दिवस असता दिवा हाती घेसी
परब्रम्हासवे नित्य तुझा खेळ
आंधळ्यांचे डोहाळे का बा झाले?
कल्पतरू तळवटी इच्छिली ते गोष्टी ।
अध्यापि नरोटी राहिली का?

दुसरा एक प्रसंग प्रत्यक्ष ज्ञानेश्वरांच्या बाबतीत घडलेला लोकनिंदेने ते व्यथित झाले आणि आत्मभान विसरून झोपडीत गेले आणि दरवाजा लावून अस्वस्थ स्थितीत बसले. कुणीही सांगितले तरी ते दार उघडीनात. तेव्हा मुक्ताबाईने त्यांना पुढील शब्दांत सावध केले. ती म्हणाली:

योगी पावन मनाचा । साही अपराध जनाचा ।।
विश्व रागे झाले वन्ही । संते सुखे व्हावे पाणी ।।
शब्दशस्त्रे झाले क्लेश । संती मानावा उपदेश ।।
विश्वपट ब्रह्म दोरा – ताटि उघडा ज्ञानेश्वरा ।।

अर्थात, ज्ञानेश्वर ताटी म्हणजे दरवाजा उघडून बाहेर आले.मुक्ताबाई चौदा – पंधरा वर्षांची होती तेव्हा वयोवृध्द योगसिद्ध चांगदेवांचे गुरुपद तिच्याकडे आले. ज्ञानाने प्रबुद्ध व वृत्तीने मुक्त अशी संत मुक्ताबाई! प्राचीन मराठी कवयित्रीत ती सर्वश्रेष्ठ मानली जाते.

संत कान्होपात्रा :–

संत जनाबाई नंतर वारकरी संत साहित्यातील एक महत्वाची स्त्री संत कवयित्री कान्होपात्रा. मागळवेढ्यतील संत कान्होपात्रा ही एक सामान्य परंतु अतिशय लावन्यसुंदर व गोड गळा असलेली कवयित्री होय. '' बेदरच्या पातशाहीच्या काळात सन १३८० च्या सुमारास मंगळवेढे येथे कान्हूपत्रा या नावाची एक स्त्री होऊन गेली,श्याम नावाच्या नायकिणीची ही मुलगी.'' ३ समाजात गणिकाची मुलगी म्हणून तिच्याकडे अतिशय वाईट भावनेने बघितले जात होते.त्यामुळे समाजात दुर्लक्षित जीवन जगणे एवढेच तिच्या नशिबी हितेय परंतु केवळ अंत:प्रेरणेने विकसित होवून एक पंढरपूरच्या दिंडीसोबत ती कुतूहल म्हणून पंढरपूरला गेली तेथील संतसहवास आणि भक्तिमय वातावरण पाहून ती विठ्ठलनामात रंगून गेली.

संत कान्होपात्रा यांचे संत साहित्याला जास्त नाहीय परंतु २३ अभंगांचे अतिशय मोलाचे सहकार्य लाभले दिसते. या अभंगातून त्यांनी स्वत:ची यातिहीनता, पांडुरंग दर्शन, संत महात्म्य, नामस्मरण महात्म्य, इ. विषय अतिशय सहज साहित्यात उतरवलेले दिसते. कान्होपात्राची भावपूर्ण विठ्ठलभक्ती पुढील अभंगातून दिसून येते. ती म्हणते,

''नको देवराया अंत आता पाहु । प्राण हा सर्वथा फुटो पाहे ।
हरिणीचे पाडस व्याघ्र धारियले द्य माजलगी जाहले तैसे देवा ।
तुजविण ठाव न दिसे त्रिभुवनी । धावे हो जननी विठाबाई ।
मोकलोनी आस जाहले उदास । घेई कान्होपात्रेस हृदयात ।।''

कान्होपात्रा अतिशय सुंदर असल्याने तिच्या सौंदर्याची कीर्ती बेदरच्या यवन बादशहापर्यंत पोहचली होती. त्यामुळे तिला दरबारात आणण्यासाठी बादशहाने शिपाई पाठवले होते. कान्होपात्राने शिपायांना पाहताच गाभाऱ्यातील विठ्ठल मूर्तीकडे धाव घेऊन चरणांना मिठी मारली आणि तिच्या वाणीतून वरील प्रार्थना बाहेर पडली. ही मनोभावे केलेली प्रार्थना देवानेही ऐकली व तिला अनंतात विलीन करून घेतले.

संत बहिणाबाई:–

वारकरी संत परंपरेतल्या अखेरच्या संत कवयित्री मानल्या जातात. संत बहिणाबाई या तुकारामांच्या शिष्या होत. ''बहिणाबाईचा जन्म भाद्रपद वद्य १३ शके १५५० मध्ये वेरूळजवळील देवगाव रंगारी येथील आहुजी कुलकर्णी आणि जानकी कुलकर्णी यांच्या पोटी झाला. ''४ त्यांचा विवाह तिसऱ्या वर्षी त्यांच्यापेक्षा वयाने मोठे असलेल्या तीस वर्षाच्या रत्नाकर पाठक यांच्याशी झाला. इतर संत कवयित्रींच्या तुलनेत प्रपंच व परमार्थ यांच्या ओढाताणीत त्यांना शारीरिक – मानसिक त्रास झाला. पण त्यांनी वैविध्यपूर्ण अभंगरचना करून संत साहित्यात भर घातली आहे.

संत जनाबाईंच्या काव्यरचना सुबोध आणि रसाळ आहेत. त्यांच्या रचनेत निरनिराळे अर्थालंकार येतात. सर्वच संतमंडळी भक्तिमार्ग अनुसरणारी पण त्यांच्या अभंगात भक्तीसाठी तळमळ हवी, संतसंगती हवी, असे त्यांनी म्हटले आहे. एका अभंग रचनेत भक्तीचे महत्त्व सांगताना त्या म्हणतात –

'बहिणी म्हणे भक्ती विरक्तीचे मूळ ।
चित्त हे निश्चल करी बा रे ।।'

''सद्गुरूंच्या थोरवीचे महत्त्व सांगताना त्या म्हणतात की, ज्ञान प्राप्त होण्यासाठी ''वोळंगावे पाया सद्गुरूंच्या'' म्हणजेच सद्गुरूंच्या पायाशी नम्र व्हावे लागते.''५ बहिणाबाईंनी ज्ञानाबरोबर नामस्मरणालाही महत्त्व दिलेले दिसून येते.

संत वेणाबाई :–

समर्थ रामदासंच्या सांप्रदायात एक अधिकारी व्यक्तिमत्व म्हणजे संत वेणाबाई. वेणाबाईना समर्थकन्या वेणास्वामी असेही संबोधले जाते. त्या रामदासांच्या

मानसकन्या होत्या. त्यांनी समर्थांच्या चरणी राहून अनेक शिष्यगण तयार केले तसेच संप्रदायाचा प्रचार प्रसारासाठी काव्यरचना केली. त्यांचा जन्म इसवी सन १६२७ मध्ये झाला. वयाच्या आठव्या वर्षी काळाच्या रितीप्रमाणे वेणाच्या वडिलांनी तिचे लग्न लावून दिले. विवाहानंतर थोड्याच काळात तिच्या पतीचे निधन झाले. नवरा खाणारी असा दुलौकिक घेऊन वर्षभरात ती माहेरी आली. काळतोंडी आणि पांढऱ्या पायाची असा शिक्का समाजाने तिच्यावर मारला. तिचे वडील गोपाजी देशपांडे यांनी आपल्या या दुर्दैवी मुलीला अक्षर ओळख करून दिली. त्यांना ज्ञात असलेले श्लोक व ओव्या शिकवल्या आणि त्यांचा अर्थही सांगितला.

वेणाबाई रामाच्या भक्त. प्रभू श्रीरामचंद्रांची भक्ती त्या करीत असत. 'सीता स्वयंवर' ही मुख्य रचना होय. 'कौल' व 'रामगृह संवाद' ही दोन अध्ययन काव्य आहेत. तसेच त्यांनी काही स्फुटपर रचाना, आरत्या व अभंगही लिहिले आहेत. त्यांच्या संत साहित्यातून तात्कालीन महाराष्ट्राचे सांस्कृतिक दर्शन घडले गेले आहे.

संत सोयराबाई:—

संत चोखामेळा यांची पत्नी सोयराबाई हिच्या विषयी एक कथा आहे की तिने भुकेल्या ब्राह्मणास दहीभात जेवू घातला. चोखा घरी आले तेव्हा ती हकिगत ऐकून ते घाबरले कारण समाज आता आपला छळ करणार, असे त्यांना वाटले, पण पत्नी सोयराने त्यांना म्हटले,

देहामी विटाळ म्हणती सकळ — आत्मा तो निर्मळ शुद्धबुद्ध ।
देहाची विटाळ देहीच जन्मला — सोवळा तो झाला कवण धर्म ।

सकल संत गाथेमध्ये सोयराबाईचे सुमारे ६२ अभंग आहेत. स्वत:ला ती महारी चोखियाची असे म्हणत असे. तिचा विठ्ठलनामावर इतका विश्वास, की 'नामेंचि तरले वर आणि नारी। म्हणतेसे महारी चोखियाची ।।' प्रपंचाचा अर्थ उलगडून सांगताना ती म्हणते—

अवघे सुखाचे सांगती। दु:ख होता पळती आपोआप ।।
भार्या पुत्र भगिनी माता आणि पिता । हे अवघे सर्वथा सुखानेची ।।
अंतकाळी कोणी न ये बरोबरी। म्हणतसे महारी चोखियाची ।।

अशी ही चोखियाची महारी संत सोयराबाई श्रेष्ठ पदाला पोचली होती.

मराठी साहित्यात संत कवित्रींचे योगदान खूप मोठे आहे. मराठी संत साहित्याला संस्कृत साहित्य आणि लोकसहित्य यांची पार्श्वभूमी असली तरी संत साहित्याने आपापल्यातील नवस्फुरण प्रकट करून अधिक मोठी झेप घेतली आहे. ही परंपरा व नवता याचा शोध हा एक अभ्यासविषय आहे. उदाहरणार्थ गीता, ज्ञानेश्वरी, वाल्मिकी रामायण, भावार्थरामायण, पुराणे व आख्याने. मराठी संतसाहित्याला सातशे वर्षांची परंपरा आहे. धार्मिक जीवनात तांत्रिक मार्गाचा प्रवेश, कर्मकांडांचा अतिरेक, वेद विरोधी प्रवृत्तींची वाढ ही परिस्थिती होती या पार्श्वभूमीवर भक्ती सांप्रदायाची निर्मिती झाली आणि त्यांनी महाराष्ट्रातील विखुरलेल्या समाजाला भक्तीच्या एका सूत्रात गोवले.

संदर्भसूची:—

१) डॉ. सिन्नरकर मंगला, मराठी संतसाहित्य— अभ्यासदिशा, शारदा प्रकाशन, प्र.आ.२०१८ पृ.क्र.१४६

२) बारपांडे मृण्मयी, संत समागम, लोकवाङ्मय गृह, प.आ.२०१८, पृ.क्र.२७

3) जोशी. प्र. न, मराठी वाङ्मयाचा विवेचक इतिहास, प्राचीन काल, पृ. क्र.23

४) मराठी संत कवयित्रींचा इतिहास पृ.क्र १०६

५) बारपांडे मृण्मयी, संत समागम, लोकवाङ्मय ग्रह प.आ.२०१८, पृ.३१

❑❑❑

विद्यावर्धिनी संचालित,
अण्णासाहेब वर्तक मानव्य, केदारनाथ मल्होत्रा वाणिज्य व ई. एस. अंड्राडिस विज्ञान महाविद्यालय
वसई रोड (प.), जि. पालघर – ४०१२०२
(मुंबई विद्यापीठाशी सलग्न)

मराठी विभाग
आणि
भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद (ICSSR), पश्चिम विभागीय केंद्र, मुंबई
यांच्या संयुक्त विद्यमाने आयोजित

Indian Council of Social Science Research

MAH/MUL/03051/2012
ISSN-2319 9318

विद्यावार्ता

International Peer reviewed Research Journal

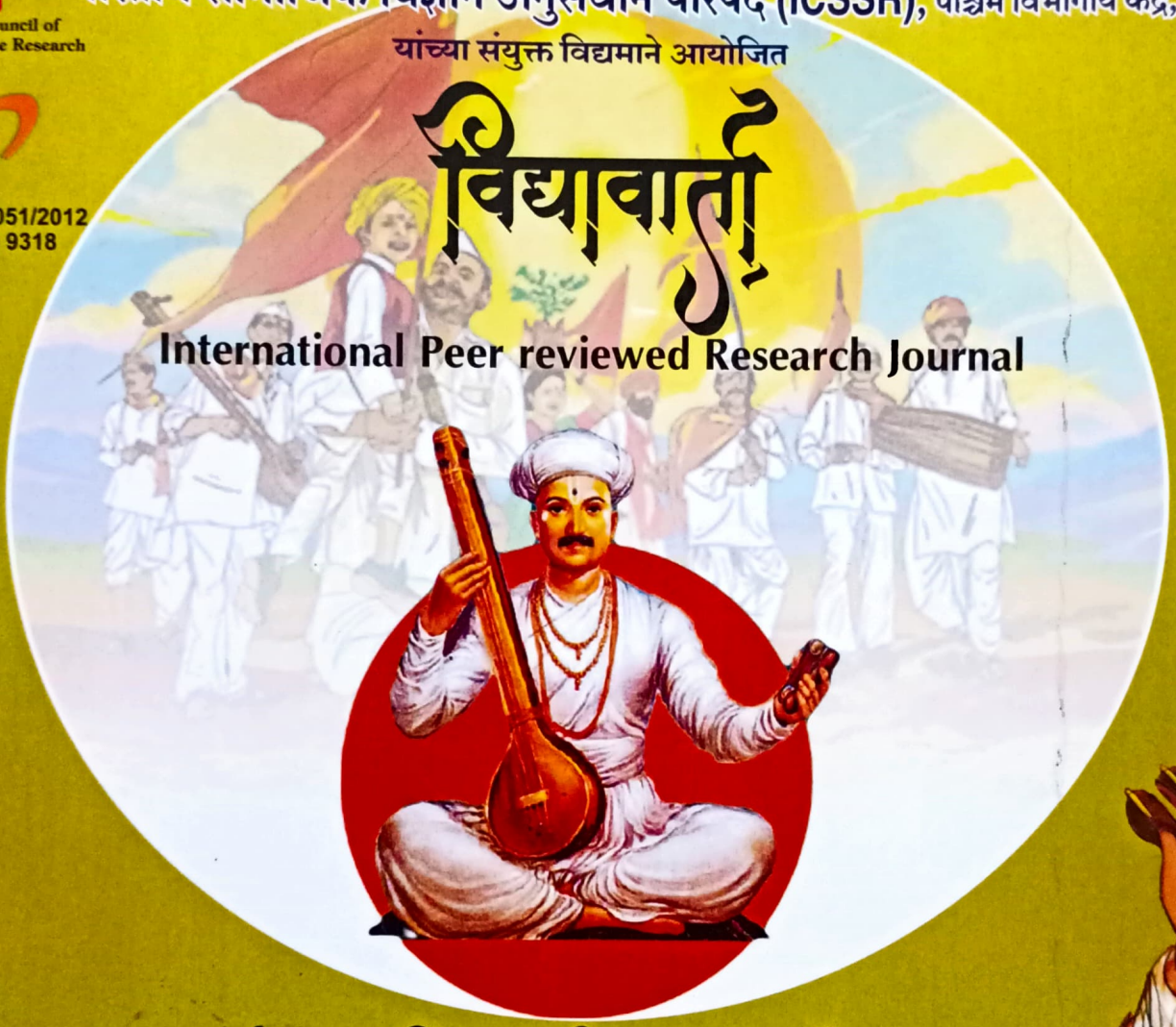

।। संत साहित्याची समकालीनता ।।

एक दिवसीय राष्ट्रीय चर्चासत्र

शनिवार दि. १७ डिसेंबर २०२२

समन्वयक
डॉ. शत्रुघ्न फड
(मराठी विभाग प्रमुख)
९४२२६७०५३०

सहसमन्वयक
डॉ. सखाराम डाखोरे
(सहाय्यक प्राध्यापक)
९८५०११६६४५

प्रा. शैलेश औटी
(सहाय्यक प्राध्यापक)
९८३३४८७४६८

निमंत्रक
डॉ. अरविंद उबाळे
(प्राचार्य)

MAH/MUL/ 03051/2012 ISSN :2319 9318

आंतरविद्याशाखीय बहुभाषिक शोध पत्रिका

विद्यावार्ता™

Special Issue-02
Dec. 2022

विद्यावर्धिनी शिक्षणसंस्था वसई

आणि

भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद (ICSSR),

पश्चिम विभागिय केंद्र, मुंबई

यांच्या संयुक्त विद्यमाने आयोजित एक दिवसीय राष्ट्रीय चर्चासत्र

'संत साहित्याची समकालीनता'

❖ **विद्यावार्ता** या आंतरविद्याशाखीय बहूभाषिक त्रैमासिकात व्यक्त झालेल्या मतांशी मालक, प्रकाशक, मुद्रक, संपादक सहमत असतीलच असे नाही. **न्यायक्षेत्र:बीड**

"Printed by: **Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.** Published by **Ghodke Archana Rajendra** & Printed & published at Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.,At.Post. Limbaganesh Dist,Beed -431122 (Maharashtra) and Editor **Dr. Gholap Bapu Ganpat**.

Reg.No.U74120 MH2013 PTC 251205

Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.
At.Post.Limbaganesh,Tq.Dist.Beed
Pin-431126 (Maharashtra) Cell:07588057695,09850203295
harshwardhanpubli@gmail.com, vidyawarta@gmail.com
All Types Educational & Reference Book Publisher & Distributors / www.vidyawarta.com

INDEX

01) महाराष्ट्रीय संतांचे भाषिक योगदान
प्रा. नेहा सावंत, मुंबई ||11

02) संत साहित्य आणि सामाजिक परिवर्तन
सह. प्रा. प्रज्ञा मनिष पंडित, ठाणे ||19

03) वारकरी संप्रदायातील संत आणि त्यांचे विचार
प्रा.मनिषा प्रकाश ठाकरे, नायगाव (पूर्व) ||26

04) गोमंतकीय संतकवी सोहिरोबानाथ आंबिये
प्रा. वीणा केरीकर, गोवा ||30

05) समाज प्रबोधक एकनाथांची भारूडे
सहा. प्रा. उगले वृषाली सोपान, नाशिकरोड ||35

06) संत नामदेव यांच्या अभंगांचे स्वरूप आणि वैशिष्ट्ये
प्रा. संजय नामदेवराव आठवले, जि. नांदेड ||40

07) संत साहित्यात संत कवयित्रींचे योगदान
सह. प्रा. संतोष लक्ष्मण राणे, ठाणे ||45

08) संत नामदेवांची अध्यात्मिक लोकशाही
सहा.प्रा.सुधीर सैंदाणे, जि. पालघर ||51

09) संत साहित्य : संशोधनाच्या नव्या दिशा
मनोज रामजी मुनेश्वर, औरंगाबाद ||53

10) मध्ययुगीन संतांचा विचार आणि पर्यावरण: एक अभ्यास
मनोरमा राजरत्न बनसोडे(तिजारे) ||56

11) हरिपाठ व विज्ञान : एक अनुबंध
प्रा.डॉ.दत्तात्रय प्र.डुंबरे, श्रीम.मयुरी पवार, जि.पालघर ||59

12) संत साहित्यातील संत कवयित्रींचे योगदान अमलेल्या कवयित्री महदंबा, मुक्ताबाई, ...
प्रा. सौ. रिध्दिसिध्दी सुरेश गायकवाड, जिल्हा–पालघर ||68

www.vidyawarta.com/03 – http://www.printingarea.blogspot.com

26) संत साहित्यातील विद्रोह
प्रा. डॉ.राजेंद्र महादू आचार्य, रायगड ||138

27) संत ज्ञानेश्वर ते गाडगे महाराज चार संतांचे सामाजिक प्रबोधन
प्रा. मल्हारी पवार, शिवळे ||143

28) संत साहित्यात संत कवयित्रींचे योगदान
बिन्नर बंडू वसंत, डॉ.इंगळे नंदकुमार ||147

29) संत साहित्य आणि पर्यावरण
रमेश नागेश सावंत, मुंम्बई ||151

30) मराठीतील संत कवयित्रींचे साहित्य
प्रा. डॉ. राजू शंकर शनवार, ठाणे ||156

31) संत साहित्य आणि पर्यावरण
श्री.यशवंत तुकाराम सुरोशे, जि.— ठाणे ||160

32) संत साहित्य आणि समाज प्रबोधन
डॉ. स्नेहा सुवास प्रभु महांबरे, गोवा ||165

33) संत मीराबाईचे नाव (मीराबाई, मीरांबाई की मीराँबाई?)— समन्वयाची एक दिशा
प्रा.मॅक्सवेल लोपीस ||171

34) संत एकनाथ व संत तुकाराम महाराज यांच्या काव्यातील मन विषयक विचार: एक अभ्यास
प्रा. नामदेव छबुराव तळपे, प्रा. डॉ रमाकांत कराड ||176

35) संत तुकारामांचे अभंग व वर्तमान समाज
डॉ.रविंद्र डाखोरे, जि. अमरावती ||180

36) संत साहित्य आणि समाजप्रबोधन
प्रा. डॉ. मारोती बालासाहेब भोसले, जि. परभणी ||182

37) संतसाहित्य आणि लोकसाहित्य
ज्योनस व्हेलेंटाईन वसईकर, डॉ. शत्रुघ्न फड ||187

38) संत साहित्य आणि पर्यावरण
संदीप देवीदास पगारे, डॉ. तुषार चांदवडकर ||191

39) राष्ट्रसंत तुकडोजी के काव्य में प्रगतिशील चिंतन की अभिव्यक्ति
डॉ. गाडीलोहार बन्सीलाल हेमलाल, नाशिक ||196

www.vidyawarta.com/03 — http://www.printingakea.blogspot.com

त्यामुळेच ते आपल्या कृती आणि उक्तीने समाजाला जागृत करण्याचा प्रयत्न करतात. अशा प्रबोधनकारांपैकीच एक गाडगे महाराज होते. ज्या पद्धतीने संत तुकाराम आणि संत कबीर यांनी अराजकसदृश्य परिस्थितीतही परंपरेला धक्का न लावता समाजात वैचारिक बदल घडवून आणण्याचा प्रयत्न केला, त्या पद्धतीनेच शिक्षणाचे संस्कर न झालेल्या गाडगे महाराजांनी महाराष्ट्रात लोकशिक्षणाचे कार्य समर्थपणे पार पाडले.

आजही समाजातील जाती धर्माच्या भींती नष्ट करण्यासाठी समाजाला अंधश्रद्धेपासून दूर ठेवण्यासाठी गाडगे महाराजांच्या लोकशिक्षणाची आणि संतांच्या प्रबोधनात्मक विचाराची नितांत आवश्यकता आहे; आणि हे संत साहित्यानेच शक्य होऊ शकते.

संदर्भ

१) प्राचीन मराठी वाङ्मयाचा इतिहास — ल. रा. नसिराबादकर.

२) संत सेना महाराज : काव्यदर्शन समीक्षा आणि संहिता — डॉ. राजेंद्र वाटाणे.

३) संत समाज आणि अध्यात्म — वि. शं. चौघुले.

४) तुकाराम — भालचंद्र नेमाडे.

५) लोकोत्तर तुकाराम — डॉ. तानाजी पाटील.

६) एका पथावरील दोन पंथ : भक्ती आणि सूफी — डॉ. अलीम वकील.

७) ज्ञानेश्वरांची जीवननिष्ठा — प्रा. गं. बा. सरदार

❑❑❑

28

संत साहित्यात संत कवयित्रींचे योगदान

बिन्नर बंडू वसंत
संशोधक,
मुंबई विद्यापीठ: मराठी विभाग
गनडे भवन, विद्यानगरी,सांताक्रूझ (पूर्व), मुंबई

डॉ.इंगळे नंदकुमार
मार्गदर्शक

भारताच्या सांस्कृतिक जडणघडणीत स्त्रियांचे योगदान मोठ्य प्रमाणात दिसून येते. संत साहित्यात देखील स्त्रियांची कामगीरी लक्षणीय आहे. संतवाङ्मयाची सुरुवात सुमारे १३ व्या शतकाच्या उत्तरार्धात झाली. त्या काळात यादवांची राजवट सुरू झाली होती. त्यांनी हिंदूंवर अन्याय—अत्याचार करावयास सुरुवात केली. हिंदू समाज अगोदरच रूढी—परंपरा यात जखडलेला होता तसेच समाजात चातुर्वर्ण्यचे मोठ्य प्रमाणात प्राबल्य होते. त्यामुळे सामान्य जनतेवर अन्याय होत होता. सामान्य जनता अन्याय आणि दारिद्र्यात पूर्णपणे भरडली गेले होती. ब्राह्मण,क्षत्रिय,वैश्य या तीनही वर्णांच्या स्वार्थीपणामूळे बहुजन समाज होरपळून निघत होता. समाजातिल राजकीय सत्ता यादवांच्या काळापर्यंत क्षत्रियांकडे,बौद्धिक संस्कृती ब्राह्मणांकडे आणि व्यापारउदीम वैश्यांच्या हाती होती. त्यामुळे सर्वसामान्य जनता सत्ता, ज्ञान व संपत्ती या सर्वांपासून दूर होती. ''अशा दैनिय स्थितीत घरात डांबून ठेवलेल्या व फक्त चूल आणि मूलाचा अधिकार असलेल्या स्त्रियांची अवस्था किती हलाखीची असेल विचार करवत नाही.'' या काळातच संत ज्ञानेश्वरांच्या 'ज्ञानेश्वरी'चा जन्म झाला.तसेच मानवतावादावर पसायदान सांगितले,तर नामदेवांनी अभंग रचना करून भक्तीसोबत ज्ञान दिले. समाजातील

उच्च—नीच, लहान—थोर, ब्राह्मण शूद्र हे सर्व भेद नष्ट करण्याचा विचार मांडूनय स्त्रीयांना ज्ञानाचा, भक्तीचा मार्ग मोकळा केला. त्यामुळे संत साहित्यात संत कवयित्रींचे मोठे योगदान दिसते.त्यांनी परमेश्वराची भक्ती आपल्या साहित्याच्या आधारे आविष्कृत केलेली दिसून येते.घह्मव्या शतकाच्या उत्तरार्धात महदंबा या आद्य संत कवयित्री ते १६ व्या शतकातील समर्थ रामदास शिष्या वेणाबाई पर्यंत स्त्री संत दिसून येतात. महदंबा,मुक्ताबाई,जनाबाई,कान्होपात्रा, बहिणाबाई,आणि वेणाबाई इ.संत कवयित्री होत.

१) महदंबा उर्फ महदाइसा :—

महनुभव पंथातील अतिशय जिज्ञासक व चर्चिक स्त्री संत कवयित्री म्हणजे महदंबा. श्रीनागदेवाचार्यांची ही भगिनी विलक्षण बुद्धिमान होती. श्रीचक्रधारांचे पूर्वाश्रमीचे जीवन लीळाचरित्रात प्रतिबिंब करण्याचे योगदान महदंबेने केले. खरे तर त्यांचे मूळ नाव रूपाइसा परंतु त्यांच्या असाधारण गुणांमुळे चक्रधर स्वामींनी त्यांचे नामकरण 'महदाइसा' असे ठेवले. पुढे केशिराजांनी याच नावाचे संस्कृतीकरण 'महदंबा' असे केले.

महदंबा यांची चरित्रविषयक माहिती लीळाचरित्र, ऋद्धिपूरलीळा यात सापडते. महदंबाने धवळे, मातृकी रुक्मिणी स्वयंवर,गर्भकांड,ओव्या व इतर स्फुट पदे या संत साहित्यात महत्वाचे योगदान दिले आहे. महदंबा यांचे धवळे विशेष प्रसिद्ध आहेत. याच काव्याने त्यांना मराठीत आद्य कवयित्रीचा मान मिळवून दिला आहे. 'धवळे' म्हणजे लग्नप्रसंगी नवऱ्यामुलासंबंधी गावयाची गाणी. महदंबेचे संपूर्ण 'धवळे' सहजसौंदर्याने ओतप्रत भरलेले आहेत. ते साध्या शब्दांनी लिहिलेले एक कथाकाव्य आहे. या कथाकाव्यात प्रारंभापासून ते अंतापर्यंत एक गीतमानता दिसते. त्याची सुरवात अतिशय मोजक्या शब्दांनी केली आहे.

श्री सर्वेस्वराचे शिरी धरकनिया चरण,
मग धवळी गाईन गोविंदूराजा.

असे हे प्रारंभीच परमेश्वराला नमन केले आहे. महदंबेच्या धवळ्यांतून तत्कालीन समाजस्थितीविषयक माहिती मिळते.

'धवळे' इ.स.१२८८ पूर्वी म्हणजेच श्रीप्रभूंच्या देहवसनापूर्वी रचले गेले. 'धवळे' पूर्वार्ध व उत्तरार्ध अशी दोन भागांत आहेत. श्रीप्रभूंच्या वेळी गायले—तो पूर्वार्ध व पुढे त्याच्या देहावसानानंतर म्हाइंभट्ट व लक्ष्मीभट्ट यांच्या आग्रहाखातर गायले— तो उत्तरार्ध. पूर्वार्धात ८४ कडवी आहेत. तर उत्तरार्धात ६४ कडवी आहेत. दोन्हींची संख्या एकूण १४८ एवढी आहे.

महदंबेच्या नावावर 'मातृकी रुक्मिणी स्वयंवर' नावाची दुसरी एक काव्यरचना आहे. त्याची कडवी घघञ एवढी आहेत. धवळ्यांमध्ये शब्दबद्ध केलेली रुक्मिणीस्वयंवराची कथा त्यात थोडक्यात वर्णन केली आहे. ही रचना अतिशय सोपी साधी सरळ आहे.

२) संत कवयित्री मुक्ताबाई :—

संत साहित्याला दुसरे महत्त्वाचे योगदान देणारी स्त्री संत कवयित्री म्हणजेय विठ्ठलपंत आणि रुक्मिणीबाई या अपेगवच्या कुलकर्णी दांपत्याचे कन्यारत्न व संत नृत्तीनाथ, संत ज्ञानदेव, संत सोपनदेव यांची एकुलती एक धाकटी बहीण मुक्ताबाई होय.

''मुक्ताईचा जन्म इ.स. १२७६ चा आणि समाधीचा काळ इ.स. १२९७. अवघ्या अठरा वर्षाच्या आत आपल्या कार्यकर्तुत्वाने भौतिक अस्तित्व संपूनही ती अजरामर झाली. ज्ञानदेव समाधीनंतर ती उदास हाव गेली आणि अन्न पाणी वर्ज्य करून खानदेशात मेहून येथे तिने आपला देह ठेवला''.१

संत मुक्ताबाईची संत साहित्यातील कामगिरी कमी असली तरी ज्ञानदेव गाथेत ४२ अभंगांचे योगदान संत साहित्याला मिळाले आहे. या सर्व अभंगातून त्यांनी नाममहिमा, गुरुमहिमा, परमार्थाचा उपदेश, आत्मस्थितीपर विचार यासारख्या विषयाचे वैविध्य व गहन आशय दिसतो. वैयक्तिक व सामाजिक अनुभवांना विसरून ती फक्त ज्ञानाला सामोरी जाताना दिसते तिच्या काही ओव्यांमधून योगानुभव सुद्धा व्यक्त होतांना दिसतो. स्वत:च्या साधनेबद्दल ती अधिकाराने बोलते.अहंकार झालेल्या नामदेवांची कानउघाडणी करतांना ती कडाडते.

अखंड जयाला देवाचा शेजार ।
कारे अहंकार नाही गेला ?

ज्ञानाशिवाय भक्ती व्यर्थ आहे. ज्ञान झाले नाही तोपर्यंत अहंकार जाणार नाही आणि अहंकार गेल्याशिवाय ज्ञानही होणार नाही.

लोकनिंदेने जेव्हा ज्ञानदेव व्यथित झाले आणि

आत्मभान विसरून झोपडीत जाऊन दरवाजा लावून अस्वस्थ स्थितीत बसले तेव्हा मुक्ताबाईने ज्ञानदेवांना समज देण्यासाठी व समाजहितासाठी संत साहित्यात ताटीचे अभंग रचना केली.

योगी पावन मनाचा । साही अपराध जनाचा ।।
विश्व रागे झाले क्लेश । संते सुखे व्हावे पाणी ।।

अर्थात, ज्ञानेश्वर महाराज झोपडीचा दरवाजा (ताटी) उघडून बाहेर आले.

३) संत कवयित्री जनाबाई :—

संत जनाबाई संत म्हणून कमी आणि 'नामयाची दासी' म्हणून जास्त प्रसिद्ध आहेत. जनाबाई वयाच्या पाचव्या—सहाव्या वर्षापासूनच दामाशेटीकडे वाढली! नामदेवांच्या घरामध्ये चौदा व्यक्ती असून पंधरावी व्यक्ती जनाबाई होती. म्हणून ती आपले स्थान अभंगातून व्यक्त करतांना म्हणते.''नामदेवाच्या घरी चौदाजण स्मरती हरी। पंधरावी ती दासी जनीं ।।'' असा स्वत:चा उल्लेखच साहित्यात केलेला दिसतो. म्हणूनच जनाबाईला नामदेवांनी दासी म्हटले जाते. नामदेवांच्या सहवासात जणीला विठ्ठल भक्तीचा ध्यास लागल्यामुळे ती पांडुरंगाची भक्त झाली.

संत साहित्यात संत जनाबाईने योगदान हे अत्यंत मोलाचे आहे. तिचे साहित्यात जवळजवळ २४६ अभंग उपलब्ध आहेत.स्त्रीमनाचा हळूवरपणा, संत महिमा, हितोपदेश,स्फुट काव्यप्रकार,आख्याने परमार्थजीवन, यासारख्या विषयांतून परमेश्वर प्राप्तीची तळमळ हळुवारपणे हाताळलली दिसून येते.'' नाम विठोबाचे घ्यावे । मग पाऊल टाकावे ।।'' अशी श्रद्धा त्यांचा मनात रुजलेली होती. जनाबाईच्या अभंगगाथेत संतस्तुती नावाच्या प्रकरणात ती म्हणते.''चंदनाच्या संगतीने ज्याप्रमाणे इतर सामान्य झाडे—झुडपे गंधित होतात, त्याप्रमाणे संतसंगाने आपली सामान्य दशा पालटून जीवित धन्य होते. ज्ञानदेवांबद्दल त्यांच्या अभंगातून आतीव आदर व्यक्त झाला आहे.''२

संत जनाबाईच्या अभंगातून भावनांचा लोभासपणा, ओथंबलेला भक्तिभाव तिच्या साहित्यातून दिसून येतो. आपल्या रूपकात्मक ओवी रचनेतून संत जनाबाईंनी प्रपंच आणि परमार्थ यांचा सुंदर मेळ घातलेला दिसतो —

''येग येग विठाबाई । माझे पंढरीचे आई ।।'' किंवा '' विठू माझा लेकुरवाळा । संगे गोपाळांचा मेळा ।।''

अशी संत जनाबाईंनी अभंग रचना संत साहित्यात मानवी मनाला भावसुंदर करून सोडणारी आहे.

४) संत कवयित्री कान्होपात्रा :—

संत जनाबाई नंतर वारकरी संत साहित्यातील एक महत्वाची स्त्री संत कवयित्री कान्होपात्रा. मागळवेढ्यतील संत कान्होपात्रा ही एक सामान्य परंतु अतिशय लावण्यसुंदर व गोड गळा असलेली कवयित्री होय. '' बेदरच्या पातशाहीच्या काळात सन १३८० च्या सुमारास मंगळवेढे येथे कान्हपत्रा या नावाची एक स्त्री होऊन गेली,श्याम नावाच्या नायकिणीची ही मुलगी. ''३ समाजात गणिकाची मुलगी म्हणून तिच्याकडे अतिशय वाईट भावनेने बघितले जात होते.त्यामुळे समाजात दुर्लक्षित जीवन जगणे एवढेच तिच्या नशिबी हितेय परंतु केवळ अंत:प्रेरणेने विकसित होवून एक पंढरपूरच्या दिंडीसोबत ती कुतूहल म्हणून पंढरपूरला गेली तेथील संतसहवास आणि भक्तिमय वातावरण पाहून ती विठ्ठलनामात रंगून गेली.

संत कान्होपात्रा यांचे संत साहित्याला जास्त नाहीय परंतु २३ अभंगांचे अतिशय मोलाचे सहकार्य लाभले दिसते. या अभंगातून त्यांनी स्वत:ची यातिहीनता, पांडुरंग दर्शन, संत महात्म्य, नामस्मरण महात्म्य, इ. विषय अतिशय सहज साहित्यात उतरवलेले दिसते. कान्होपात्राची भावपूर्ण विठ्ठलभक्ती पुढील अभंगातून दिसून येते. ती म्हणते,

'' नको देवराया अंत आता पाहु । प्राण हा सर्वथा फुटो पाहे ।
हरिणीचे पाडस व्याघ्र धारियले । माजलगी जाहले तैसे देवा ।
तुजविण ठाव न दिसे त्रिभुवनी । धावे हो जननी विठाबाई ।
मोकलोनी आस जाहले उदास । घेई कान्होपात्रेस हृदयात ।।''४

कान्होपात्रा अतिशय सुंदर असल्याने तिच्या सौंदर्याची कीर्ती बेदरच्या यवन बदशहापर्यंत पोहचली होती. त्यामुळे तिला दरबारात आणण्यासाठी बादशहाने

शिपाई पाठवले होते. कान्होपात्राने शिपायांना पाहताच गाभाऱ्यातील विठ्ठल मूर्तीकडे धाव घेऊन चरणांना मिठी मारली आणि तिच्या वाणीतून वरील प्रार्थना बाहेर पडली. ही मनोभावे केलेली प्रार्थना देवानेही ऐकली व तिला अनंतात विलीन करून घेतले.

५) संत कवियत्री बहिणाबाई :—

वारकरी संत परंपरेतील 'स्वयंप्रकाशी ' व ' महायोगी ' नावाने प्रसिद्ध असणारी,संत तुकारामांची शिष्या म्हणजे बहिणाबाई.'' बहिणाबाईचा जन्म भाद्रपद वद्य १३ शके १५५० मध्ये वेरूळजवळील देवगाव रंगारी येथील आहुजी कुलकर्णी आणि जानकी कुलकर्णी यांच्या पोटी झाला.''५ त्यांचा विवाह तिसऱ्या वर्षी त्यांच्यापेक्षा वयाने मोठे असलेल्या तीस वर्षाच्या रत्नाकर पाठक यांच्याशी झाला. इतर संत कवयित्रींच्या तुलनेत प्रपंच व परमार्थ यांच्या ओढाताणीत त्यांना शारीरिक—मानसिक त्रास झाला. पण त्यांनी वैविध्यपूर्ण अभंगरचना करून संत साहित्यात भर घातली आहे.

संत जनाबाईंच्या काव्यरचना सुबोध आणि रसाळ आहेत.त्यांच्या रचनेत निरनिराळे अर्थालंकार येतात. सर्वच संतमंडळी भक्तिमार्ग अनुसरणारी पण त्यांच्या अभंगात भक्तीसाठी तळमळ हवी,संतसंगती हवी,असे त्यांनी म्हटले आहे. एका अभंग रचनेत भक्तीचे महत्त्व सांगताना त्या म्हणतात—

' बहिणी म्हणे भक्ती विरक्तीचे मूळ ।
चित्त हे निश्चल करी बा रे ।।'

सद्गुरूंच्या थोरवीचे महत्त्व सांगताना त्या म्हणतात की, ज्ञान प्राप्त होण्यासाठी ''वोळंगावे पाया सद्गुरूंच्या'' म्हणजेच सद्गुरूंच्या पायाशी नम्र व्हावे लागते. बहिणाबाईंनी ज्ञानाबरोबर नामस्मरणालाही महत्त्व दिलेले दिसून येते.

६) संत कवयित्री वेणाबाई :—

समर्थ रामदासंच्या सांप्रदायात एक अधिकारी व्यक्तिमत्व म्हणजे संत वेणाबाई. वेणाबाईंना समर्थकन्या वेणास्वामी असेही संबोधले जाते. त्या रामदासांच्या मानसकन्या होत्या. त्यांनी समर्थांच्या चरणी राहून अनेक शिष्यगण तयार केले तसेच संप्रदायाचा प्रचार प्रसारासाठी काव्यरचना केली. त्यांचा जन्म इसवी सन १६२७ मध्ये झाला. वयाच्या आठव्या वर्षी काळाच्या रितीप्रमाणे वेणाच्या वडिलांनी तिचे लग्न लावून दिले. विवाहानंतर थोड्याच काळात तिच्या पतीचे निधन झाले. नवरा खाणारी असा दुर्लौकिक घेऊन वर्षभरात ती माहेरी आली. काळतोंडी आणि पांढऱ्या पायाची असा शिक्का समाजाने तिच्यावर मारला.तिचे वडील गोपाजी देशपांडे यांनी आपल्या या दुर्दैवी मुलीला अक्षर ओळख करून दिली. त्यांना ज्ञात असलेले श्लोक व ओव्या शिकवल्या आणि त्यांचा अर्थही सांगितला.

वेणाबाई रामाच्या भक्त. प्रभू श्रीरामचंद्रांची भक्ती त्या करीत असत. 'सीता स्वयंवर' ही मुख्य रचना होय. 'कौल' व 'रामगृह संवाद' ही दोन अध्ययन काव्य आहेत. तसेच त्यांनी काही स्फुटपर रचाना,आरत्या व अभंगही लिहिले आहेत. त्यांच्या संत साहित्यातून तात्कालीन महाराष्ट्राचे सांस्कृतिक दर्शन घडले गेले आहे.

संत साहित्यात संत कवयित्रींचे योगदान खूप मोठे आहे. संत साहित्याला संस्कृतसाहित्य आणि लोकसाहित्य यांची पार्श्वभूमी असली तरी संत साहित्याने आपल्यातील नवस्फुरण प्रकट करून अधिक मोठी झेप घेतली आहे. ही परंपरा व नवता याचा शोध हा एक अभ्यासविषय आहे. उदाहरणार्थ ज्ञानेश्वरी,वाल्मिकी रामायण,भावार्थरामायण,पुराणे व आख्याने. संत साहित्यात धार्मिक जीवनात तांत्रिक मार्गाचा प्रवेश, कर्मकांडांचा अतिरेक, वेदविरोधी प्रवृत्तींची वाढ ही परिस्थिती होती. या पार्श्वभूमीवर भक्ती संप्रदायाची निर्मिती झाली आणि त्यात संत साहित्यात विखुरलेल्या समाजाला भक्तीच्या एका सूत्रात माळीप्रमाणे गोवण्याचे काम संत कवित्रींनी केले.

संदर्भसूची :—

१)डॉ.पठाण ताहेर.एच.,डॉ.कदम.न.ब,संतसाहित्य मीमांसा(संपा),शब्दालय प्रकाशन,श्रीरामपूर ,पृ.क्र —२७६.

२) बारपांडे मृण्मयी, संत समागम—लोकवाङ्मय गृह, प.आ.२०१८, पृ.क्र.२६.

३) जोशी प्र.न., मराठी वाङ्मयाचा विवेचक इतिहास, प्राचीन काळ, पृ.क्र.२३.

४) डॉ. सिन्नरकर मंगला, डॉ.दीक्षित अविनाश, प्रा. कासार अरुण (संपा),मराठी संतसाहित्य अभ्यासदिशा,शारदा प्रकाशन,पृ.क्र.१५१.

५) मराठी संत कवयित्रींचा इतिहास, पृ.क्र.१०६.

ISSN 2249-4081

National Registered and Recognized
Research Journal Related to Higher Education for Economics & Commerce

GLOBAL
ECONOMIC RESEARCH

(UGC Approved, Refereed & Peer Reviewed Research Journal)

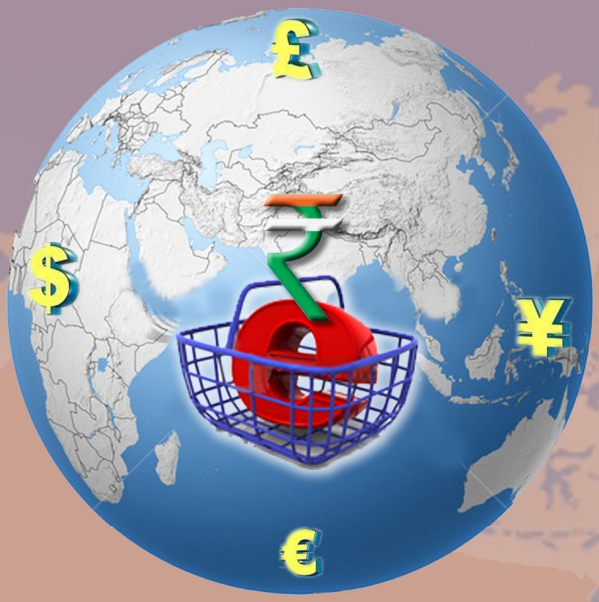

EDITOR IN CHIEF

Dr. Nilam Chhangani

IMPACT FACTOR
6.10

ISSN 2249-4081

UGC Approved National Registered & Recognized
Research Journal Related to Higher Education for Economics & Commerce

GLOBAL ECONOMIC RESEARCH

UGC APPROVED & PEER REVIEWED RESEARCH JOURNAL

Issue - XXIV, Vol. - I
Year - XII, (Half Yearly)
(Oct. 2022 To Mar. 2023)

Editorial Office :
'Gyandev-Parvati',
R-9/139/6-A-1,
Near Vishal School,
LIC Colony,
Pragati Nagar, Latur
Dist. Latur - 413531.
(Maharashtra), India.

Contact : 02382-241913
09423346913 / 09503814000
07276305000/ 09637935252

Website
www.irasg.com

E-mail :
interlinkresearch@rediffmail.com
visiongroup1994@gmail.com
mbkamble2010@gmail.com

Published by :
JYOTICHANDRA PUBLICATION
Latur, Dist. Latur - 413531 (M.S.)India

Price : ₹ 200/-

EDITOR IN CHIEF

Dr. Nilam Chhangani
Head, Dept. of Economics
S. K. N. G. Mahavidyalaya,
Karanja Lad, Dist. Washim (MS) India

MEMBER OF EDITORIAL BOARD

Dr. Vasant K. Bhosale
Prabhani, Dist. Prabhani (M.S.)

Dr. Deelip S. Arjune
Jalna, Dist. Jalna (M. S.)

Dr. Rajendra Gawhale
Khamgaon, Dist. Buldhana (M.S.)

Dr. Arun Tawar
Parbhani, Dist. Parbhani (MS) India

Dr. Balaji G. Kamble
Latur, Dist. Latur (M.S.)

Dr. Santosh T. Kute
Khamgaon, Dist. Buldhana (M.S.)

Dr. R. D. Ganapure
Osmanabad, Dist. Osmanabad (M.S.)

Dr. Vikas V. Sukale
Nanded, Dist. Nanded (M.S.)

Dr. Rajendra Dhane
Dharwad, Dist. Dharwad (Karnataka)

Dr. Balasaheb S. Patil
Panvel, Dist. Raigarh (M.S.)

Dr. Sachin B. Napate
Pune, Dist. Pune (M.S.)

Dr. R. S. Solankar
Omerga, Dist. Osmanabad (M.S.)

Dr. M. Selva Kumar
Sivakashi, Dist. Sivakashi (T.N.)

Dr. Balasaheb S. Patil
Panvel, Dist. Raigarh (MS) India

Dr. Ashok K. Vala
Amreli, Dist. Amreli (Gujrat)

Dr. Suresh B. Dhake
S.N.D.T. University, Mumbai (M.S.)

Dr. Anant B. Narwade
Kalamb, Dist. Osmanabad (M.S.)

Dr. Ganpat Gaikwad
Kolhapur, Dist. Kolhapur (M.S.)

INDEX

Sr. No	Title for Research Paper	Page No.
1	Eco-Friendly Textile Industries -An Overview **Dr. Ritesh Bajranglal Vyas**	1
2	Present status of Indian agriculture sector **Dr. Nilam Chhangani**	6
3	Agricultural sector, Its permarmance and challenges : Some issues **Dr. D. K. Rathod**	13
4	The Role Of Small Scale Industries In Growth And Development Of Entrepreneurship **Dr. Santosh S. Budhwant**	23
5	Russia - Ukraine War : An Opportunity to Indian Agricultural Sector **Macchindra D. Vedapathak**	27
6	कृषि विकास आणि हवामान बदल **डॉ. सुनिता सावरकर**	34
7	नवीन आर्थिक धोरणाचे कृषी क्षेत्रावर झालेले परिणाम **ओमप्रकाश जगनराव झिमटे, डॉ. दिपक राऊत**	42
8	वस्तू आणि सेवा कर : भारतातील महत्वाची कर सुधारणा **डॉ. सुरेश चंद्रकांत मेहेत्रे**	48
9	औष्णिक ऊर्जा प्रकल्पाचा शेती आणि इतर क्षेत्रावर झालेला परिणाम : विशेष संदर्भ सोलापूर औष्णिक ऊर्जा प्रकल्प **रेवप्पा सिध्दाप्पा कोळी, डॉ. राजाराम केरबा पाटील**	54
10	पर्यटनाचे नवीन परिणाम - ग्रामीण पर्यटन **डॉ. विष्णु बळीराम पवार**	61

This document was created with the Win2PDF “Print to PDF” printer available at

https://www.win2pdf.com

This version of Win2PDF 10 is for evaluation and non-commercial use only.
Visit https://www.win2pdf.com/trial/ for a 30 day trial license.

This page will not be added after purchasing Win2PDF.

https://www.win2pdf.com/purchase/

Issue : XXIV, Vol. I
GLOBAL ECONOMIC RESEARCH
IMPACT FACTOR 6.10
ISSN 2249-4081
Oct. 2022 To Mar 2023

The Role Of Small Scale Industries In Growth And Development Of Entrepreneurship

Dr. Santosh S. Budhwant
Assistant Professor
Dept. of Economics,
S.B.College, Shahapur

RESEARCH PAPER - ECONOMICS
4

Introduction:-

Entrepreneurship is the process of creating something new with value by devoting the necessary time and effort, assuming the accompanying financial, psychical, and social risks, and receiving the resulting rewards of monetary and personal satisfaction and independence. Entrepreneur is one who brings land, labour and capital into combination that make their value greater than before, and also one who introduces changes , innovations, and new orderand creates wealth for others, as well as finds better ways to utilize resources. Reduce waste, and produce jobs to others and contributing in the development of the country.

Objective of the Study:-

This research paper intends to study and kept the objective as follows

1) To Study the role of Entrepreneurship in Economic Development
2) To find out growth of small scale Industries in Maharashtra
3) To find out growth the employment generation in Maharashtra

Data and Methodology: -

Thepresent study is based on secondary sources only. The secondary data were gathered from different sources such as internet, books, journals, newspapers related articles, research papers, annual reports etc.

The role of Entrepreneurship in Economic Development:-

The role of entrepreneurship in economic development involves more than just increasing per capita output and income. Entrepreneurship and economic development are intimately related. Entrepreneurial process is a major factor in economic development and the entrepreneur is the key to economic growth. Whatever be the form of economic and political set-up of the country, entrepreneurship is indispensable for economic development. Entrepreneurship is an approach to management that can be applied in start-up situations as well as within more established businesses. The growing interest, in the area of entrepreneurship has developed alongside interest in the changing role of small businesses. Small entrepreneurship has a fabulous potential in a developing country like India. So, statistical data and its analyses of several countries show that small industries have grown faster than large industries over the last couple of decades. Large industries first lost jobs while small industries created new workplaces. The small scale industries, which led to the main source of employment in the country. Proudly powered by MSSIDC

Small Scale Industries Sector:-

Production:-

The small-scale industries sector plays a vital role in the growth of the country. It contributes almost 40% of the gross industrial value added in the Indian economy. It has been estimated that a million Rs. of investment in fixed assets in the small scale sector produces 4.62 million worth of goods or services with an approximate value addition of ten percentage points. The small-scale sector has grown rapidly over the years. The growth rates during the various plan periods have been very impressive. The number of small-scale units has increased from an estimated 0.87 million units in the year 1980-81 to over 3 million in the year 2000. When the performance of this sector is viewed against the growth in the manufacturing and the industry sector as a whole, it instills confidence in the resilience of the small-scale sector.

Employment :-

SSI Sector in Maharashtra creates largest employment opportunities next only to Agriculture. It has been estimated that 100,000 rupees of investment in fixed assets in the small-scale sector generates employment for four persons.

Generation of Employment - Industry Group-wise :-

Food products industry has ranked first in generating employment, providing

employment to 0.48 million persons (13.1%). The next two industry groups were Non-metallic mineral products with employment of 0.45 million persons (12.2%) and Metal products with 0.37 million persons (10.2%).

In Chemicals & chemical products, Machinery parts except Electrical parts, Wood products, Basic Metal Industries, Paper products & printing, Hosiery & garments, Repair services and Rubber & plastic products, the contribution ranged from 9% to 5%, the total contribution by these eight industry groups being 49%.

Exports from Maharashtra:

SSI Sector plays a major role in India's present export performance. The main products exported from the state are Gems and Jewellery, Software, textiles, readymade garments, cotton yarn, metal & metal products agro-based products, engineering items, drugs & pharmaceuticals and plastic & plastic items. To recognise the efforts put up by the exporters and to boost the exports, the State is taking initiatives like giving awards based on export performance and implementing space rent subsidy scheme for Micro and Small Enterprises for participation in international exhibitions. Since 2007-08, the State's share remained at 27 per cent in the total exports from India.

Sr.	Region	No. of SSI Unit	Investments Rs.,000	Employment
1	Mumbai	12962	710682	140103
2	Konkan	13016	271012	144336
3	Nashik	18533	280843	114897
4	Pune	67557	176734	345534
5	Aurangabad	9219	90855	74643
6	Amravati	5978	48498	37015
7	Nagpur	12840	77973	88628
	Total	**140105**	**1656597**	**945156**

(Source: Maharashtra at a glance, Directorate of Industries.)

The above table shows the growth indicators of SSI sectors of Maharashtra in terms of number of SSI, Investments and Employments. The table shows that up to Sept 30, 2012 the total number of SSI units was1.40 lakh.

Conclusion:-

SSI sector has made significant contributions to employment generation and also to rural industrialization. This sector is ideally suited to build on the strengths of our traditional skills and knowledge, by infusion of technologies, capital and innovative marketing practices. So this is the opportune time to set up projects in the small scale sector. It may be said that the outlook is positive, indeed promising, given some safeguards. This expectation is based on an essential feature of the Indian industry and the demand structures.

References :-

1) Maharashtra centre for entrepreneurship Development
2) Maharashtra small scale Industries Development corporation SSI
3) Desai Arvind - Environment and Entrepreneur - A.P.H. Publishing Corporation, New Delhi.2. Ghosh Bishwanath (2003) - Entrepreneurship
4) Development in India -National Publishing House, Jaipur.3. K. Subramanian - Entrepreneurship Development and Economic Development.
5) Shagufta Sayyed (2008) - Entrepreneurship Development and Project Management - Nirali Praksashan, Pune.
6) Taneja Satish &Gupta S.L. - Entrepreneur Development - Galgotitiya Publishing Company, New Delhi.

This document was created with the Win2PDF “Print to PDF” printer available at

https://www.win2pdf.com

This version of Win2PDF 10 is for evaluation and non-commercial use only.
Visit https://www.win2pdf.com/trial/ for a 30 day trial license.

This page will not be added after purchasing Win2PDF.

https://www.win2pdf.com/purchase/

ISSN 2250-169X

International Registered & Recognized
Research Journal Related To Higher Education For All Subjects

VISION

RESEARCH REVIEW

CHIEF EDITOR

DR. BALAJI KAMBLE

IMPACT FACTOR
6.20

ISSN 2250-169X

International Registered & Recognized
Research Journal Related to Higher Education for all Subjects

VISION
RESEARCH REVIEW

UGC APPROVED, REFEREED & PEER REVIEWED RESEARCH JOURNAL

Issue - XXIV, Vol. - II
Year-XII, Bi-Annual(Half Yearly)
(Dec. 2022 To May 2023)

Editorial Office :
'Gyandev-Parvati',
R-9/139/6-A-1,
Near Vishal School,
LIC Colony,
Pragati Nagar, Latur
Dist. Latur - 413531.
(Maharashtra), India.

Contact : 02382 -241913
9423346913 / 7276301000
9637935252 / 9503814000

E-mail :
interlinkresearch@rediffmail.com
visiongroup1994@ gmail.com
mbkamble2010@gmail.com

Published By :
Jyotichandra Publication
Latur, Dist. Latur - 413531. (M.S.)

Price : ₹ 200/-

CHIEF EDITOR

Dr. Balaji G. Kamble
Professor & Head,
Dept. of Economics,
Dr. Babasaheb Ambedkar College,
Latur, Dist. Latur. (M.S.)India.

SPECIAL EDITOR

Dr. E. Sivanagi Reddy
'Sthapathi'
Dept of Archaeology & Museums,
Hyderabad (A.P.)

EXECUTIVE EDITORS

Dr. Sachin Napate
Pune, Dist. Pune .M.S.

Verena Blechinger Talcott
Director, Dept. of History
& Cultural Studies,University of Barlin.
Bariln. (Jermany)

Michael Strayss,
Director,
International Relation & Diplomacy,
Schiller International University,
Paris. (France)

Dr. Deelip S. Arjune
Professor, Head, Dept. of History
J. E. S. Mahavidyalaya,
Jalna, Dist. Jalna (M.S.)

Dr. Nilam Chhangani
Dept. of Economics,
S.K.N.G. College,
Karanja Lad, Dist. Sashim(M.S.)

Dr. Rajendra R. Gawhale
Head, Dept. of Economics,
G. S. College,
Khamgaon, Dist. Buldana (M.S)

DEPUTY EDITORS

Dr. Rajendra Ganapure
Professor,Head, Dept. of Economics,
S. M. P. Mahavidyalaya,
Murum, Dist. Osmanabad (M.S.)

Dr. B. K. Shinde
Professor, Head, Dept. of Economics,
D. S. M. Mahavidyalaya,
Jintur, Dist. Parbhani (M.S.)

Dr. Vijay R. Gawhale
Head, Dept. of Commerce,
G. S. Mahavidyalaya,
Khamgaon, Dist. Buldana (M.S.)

Bhujang R. Bobade
Director, Manuscript Dept.,
Deccan Archaeological and Cultural
Research Institute, Hyderabad. (A.P.)

Dr. Mahadeo S. Kamble
Dept. of History
Vasant Mahavidyalaya,
Kaij, Dist. Beed (M.S.)

Dr. S. R. Patil
Professor, Dept. of Economics,
Swami Vivekanand Mahavidyalaya,
Shirur Tajband, Dist. Latur(M.S.)

CO - EDITORS

Dr. Allabaksha Jamadar
Professor, Head, Dept. of Hindi,
B.K.D. College,
Chakur, Dist. Latur (M.S.)

Dr. Murlidhar Lahade
Dept. of Hindi,
Janvikas Mahavidyalaya,
Bansarola, Dist. Beed.(M.S.)

Dr. Shyam Khandare
Dept. of Sociology,
Gondawana University,
Gadhciroli, Dist. Gadchiroli (M.S.)

Dr. M. Veeraprasad
Dept. of Political Science,
S.K. University,
Anantpur, Dist. Anantpur (A.P.)

INDEX

Sr. No	Title for Research Paper	Page No.
1	Effect of Annona Squamosa L On Root rot Disease of Mango Mangifera indica Caused by Rhizoctonia Solani **Dr. R. G. Pawar**	1
2	Country of Origin – Consumers' perception at the point of purchase- A study of buyer behavior **Dr. Rahul S. Kharabe**	6
3	The Importance of Entrepreneurship in Agriculture in Modern Indian Economy **Dr. Santosh S. Budhwant**	15
4	Study of Effect of Gadolium and Zinc substitution on susceptibility Magnesium ferrites **S. A. Masti**	22
5	A Brief Study of Training for Effective Running **Dr. S. R. Bhosale**	28
6	राजनैतिक समझ विकसित करती हिंदी फ़िल्में **डॉ. शालू देवी**	35
7	कृषी उत्पन्न बाजार समितीचे शेतकऱ्यांच्या विकासातील योगदान **ज्ञानोबा व्यंकटराव मुंढे, डॉ. एल.एच. पाटील**	40
8	ड्रॅगनफ्रुटचे आरोग्यदायी फायदे **डॉ. मिलन गावंडे**	44
9	आचार्य बाळशास्त्री जांभेकर यांची पत्रकारीता **सचिन मदनराव वायकुळे**	49
10	भारतीय संस्कृतीतील भाषिक सौंदर्याचा शोध **डॉ. गौतम झरिबा ढवळे**	54
11	लोकहितवादी आणि स्त्रीवाद **डॉ. सुनिल राठोड**	59

This document was created with the Win2PDF “Print to PDF” printer available at

https://www.win2pdf.com

This version of Win2PDF 10 is for evaluation and non-commercial use only.
Visit https://www.win2pdf.com/trial/ for a 30 day trial license.

This page will not be added after purchasing Win2PDF.

https://www.win2pdf.com/purchase/

Issue : XXIV, Vol. II
VISION RESEARCH REVIEW
IMPACT FACTOR 6.20
ISSN 2250-169X
Dec. 2022 To May 2023

3

The Importance of Entrepreneurship in Agriculture in Modern Indian Economy

Dr. Santosh S. Budhwant
Assistant Professor
Department of Economics
S.B.College, Shahapur

Research Paper - Economics

ABSTRACT

An agriculture in India, being a backbone of Indian economy, have to play a vital role in development of the country. Toady modern techniques are ready to use in agriculture but, only financially strong farmers are using modern techniques in farming and most of the farmers in India are farming with old and traditional ways. It is resulting in decrease in the Gross Domestic Product (GDP) of the nation. Agriculture and entrepreneurship are the two sides of one coins to make over all development of the nation. In India, an agriculture sector is underdeveloped because of lack of entrepreneurship, lack of innovative ideas and techniques, lack of agro based knowledge, etc.In India, lakhs of farmers had committed suicide so far. Marathwada and Vidarbha regionsof Maharashtra state in India scored high number of farmers' suicide cases due to heavy loans. It is very sad and bad situation facing agricultural India. Indian farmer's traditional trend is to be diverted towards modern agriculture and agri-entrepreneurship to reduce agricultural issues in the Indian economy.If he builds and implement proper skills of entrepreneurship; they can be good agripreneur. The researcher tries to focus on the relationship between agriculture and entrepreneur. ***This research study aims to discuss issues, challenges, skills, opportunities pertaining to agricultural entrepreneurship in India.*** *The researcher further suggesting ways for development of agricultural entrepreneurship through encouraging youth of the nation.*

Keywords – Entrepreneurship, Agri-entrepreneurship, Agripreneur, Relationship between Agriculture and Agripreniurship.

I) Introduction:

Agriculture is one of the most important sectors in India where 58% population depend directly & indirectly on agriculture. It's not only supplying the goods but also accounts for high percentage of production and employment.During the period of 1951 nearly more than 70% people of the country were engaged in agriculture and other allied activities but now a days the share of agriculture in GDP is 14%; mostly fallen down. Lakhs of farmers from all over the country are committed suicide so far. Especially in Marathwada and Vidarbha regions of Maharashtra state, the number of farmers' suicide cases is too large. The major reasons behind suicide are inability to repay debts, droughts, no reasonable prices of agricultural productions etc. Still this condition has not been come under the control. It is very sad and bad situation of the farmers in agricultural India. However the available resources are not utilized in agricultural sector, the government policy is not properly that much flexible for this sector. In fact, the total picture of agricultural sector has been charged.

In the past period, it was said that agriculture is a backbone of Indian economy but at present what happened with backbone? How agriculture sector can be boosted? What are the ways to increase a share of agriculture in GDP?In order to find out the answer of all these questions, the researcher wants to focus on the relationship between agriculture and entrepreneur.

Agricultural sector is underdeveloped because of lack of entrepreneurship, lack of innovative ideas and techniques, lack of agro based knowledge, etc. therefore this is very important to make SWOT analysis, regarding agriculture sectors and farmers. so that one farmer can be a good entrepreneur in Indian economy. If the farmer develops good entrepreneurship he will be good agripreneurs. The development of agro based industry, food processing projectsetc. can bring rapid changes in agriculture sector but for that farmers of India should develop entrepreneurship skill within them.

III) Research Methodology:

i) Objectives of the Study:

1. To develop an entrepreneurship management skill among farmers.
2. To bring an awareness of utilization of natural resources in a proper way.
3. To develop an energetic trends towards agriculture among farmers.
4. To understand the technical and general problems of farmers.

ii) Hypothesis:

1. There is a definite relationship between entrepreneurship and farmers.

2. The farmer entrepreneurship has an innovative ideas and techniques to cultivate farm in profitable way.

3. Farmers face various obstacles to become good entrepreneurs and agripreneurs.

iii) Sources of Data:-

This research study is based on the secondary sources of data, such as reference books, magazines, various reports on subject under study, research papers and articles published in national and international publications, newspapers etc.

IV) The relationship between Farmer and Entrepreneurship:

"Today when our farmer is unable to make proper requirements of the country, then only converting an agriculturist into an entrepreneur can create huge income generating opportunities."

Agriculture and entrepreneurship these both are two sides of a coin to make over all development of the country. Entrepreneurship is associated with innovative ideas and opportunities in every field and this is possible for every agriculturist to develop skill with him for the rapid growth of agriculture sector.

"An agri-preneurship is one of the important parts of agricultural industry which includes production, agriculture food, environment and natural resources. Agri-entrepreneurs who would like to avoid low risk situation because of lack of challenges and some time they avoid high risk situation because they want to succeed."Normally agri-entreprenuership can take various ventures like land development, irrigation, fertilizers and seeds, soil conservation, etc.

"An entrepreneur is always an organizer of an economic venture especially one

who organizes, owns, manages and assumes the risk of management. Schumpeter (1961) defines entrepreneur as an innovator who is characterized by potentials likes of doing new things or doing things in innovative way. He is an economic leader with atavistic well power and creative response to situation and act as a chief conducted factor in economic development.[3]".

V) Buildingan Entrepreneurship Skill for Cultivation among Farmers:-

A good farmer always recognizes qualities within him. If he builds a proper skill of entrepreneurship he can be good agripreneur. The researcher has expressed following stages for building the skill of entrepreneurship.

Stage of development	Action to be done by Farmer
Awareness	He examines, what the qualities, capabilities he is having at present
Acceptance	He identifies SWOT, strength and weakness
Vision	In this stage he sets a long-term goals for his farm business.
Business strategy	In order to achieve his goals he develops business strategy.
Learning for experience	Here he implements the plan and learns so many things by experience
Empowerment	He becomes empowered and more competent to overcome his weakness.

Source: Complied by Author

This is an effective and systematic program for inculcating agri-entrepreneurial skills and competency among the farmers. It needs proper implementation to get favorable results. For this purpose, a comprehensive government policy is required to be framed and executed with continuous observation. For awareness at the best level;farmer's agricultural conferences, seminars, workshops etc. have to be organized in rural areas of India. Government should lead over the responsibility of agricultural education on all the levels of education by making arrangement of agricultural subjects or topics in the curriculum or syllabus.In higher education level professional courses in agriculture are to be arranged to motivate the youth towards agri-entrepreneurship.

VI) Challenges Facing Agricultural Entrepreneurship in India:

Now a days, many farmers face all types of obstacles for the development of good entrepreneurship among them.

Some obstacles are given below:-

1. Farmers face poor infrastructure facilities such as poor roads, lack of nearer market facilities, irregular electricity, etc. so that they can not develop their farm business.
2. Training facilities especially in our country have not been reached up to many farmers so that Indian Farmers can not utilize his knowledge and practical skill in cultivation process.
3. Lack of easy market access facilities also a vital cause for poor farm entrepreneurship.
4. In India the farmer does not have his own resources, sufficient funds therefor, he needs a credit.
5. The farmer in India especially from backward region is unable to have quick information from various sources related to his farm business.
6. Bargaining powers plays an important role to get good benefits but here our small scale farmers do not have strong bargaining power and they force to accept lower prices for their product.
7. There are many more challenges like changing atmosphere, poor government policy, etc. also create problem in the development of farm entrepreneurship.

Percentage wise agripreneuship of various sectors.

Sr. No.	Sectors/Agricultural allied activities	Percentage
1	Agri-Input shops	39%
2	Dairy/poultry/pigger/goatary	21%
3	Vateranity clinic	13%
4	Vermin composting	4%
5	Farm machinery units	3%
6	Nursery	3%
7	Seed processing and marketing	3%
8	Others	14%

Source:- Indian history of agribusiness professionals, New Delhi.

VII) Opportunities for Agri-Entrepreneurship in India:-

India has 52% cultivable land out of total 11% land in the world.In India even though share of agriculture is declining in GDP, the Indian agriculture sector is at 3rd rank after China and United States. In the livestocksector, India has 16% of cattle, 57% buffalo, 17% goats and 5% of sheep, which implies that Indian farmers still have many opportunities in agriculturalentrepreneurship.

Sr. No.	Food grains/oil seeds/pulses	Scope for allied activities
1	Vegetables	Seed processing
2	Fruits	Food processing
3	Agro forestry	Logistic
4	Animal husbandry	Poultry farm
5	Green house	Cold storage
6	Herbal plantation	Value addition
7	Flori culture	Herbal produce cleaning

Source- Opportunity for agriculture Entrepreneurship, June 2014,

VIII) Suggestions for Effective Agricultural Entrepreneurship Development

1. The Government should organize various workshops at primary and secondary level related to various programme attracting youth generations in farm sector.
2. Institutions of youth revolving loan schemes, which will make a proper finance to youth at subsidized interest rate.
3. Teachers and vocational instructor programme should emphasize on agri-entrepreneual education at secondary and higher secondary level.
4. The farmer should able to access a benefit of credit facilities, information without any obstacles so he will take much initiative in cultivation process.
5. Now-a-days globalization process is very dynamic therefore the Indian farmer should have the approach of 100% commercialization of their business.

References :-

1) Dangwal R.C &Batra G.S., "Concept of Entrepreneurship, Entrepreneurship & SSI, Deep Publication, New Delhi, 2001.
2) Suryavanshisudarshan," Indiansociety of agriculture business professionals,"Opportunity for agriculture Entrepreneurship, June 2014,
3) Dr. Kumar Praveen, " Making a farmer an Entrepreneur" Kurukshetra, Vol-63, Jan 2015.
4) Mittal, Ramesh (2009) Entrepreneurship Development through Agripreneurship in India: Crossing the Boundaries with Agri-Export Zones (AEZ), A Paper presentation in ICARD at Banaras Hindu University, Varanasi – 221005.
5) Pandey, Geeta (2013) Agripreneurship Education and Development: Need of the Day, Asian Resonance, 2(4)155 – 157.
6) Singh, A. P. (2013) Strategies for Developing Agripreneurship among Farming Community in Uttar Pradesh, India, Academicia: An International Multidisciplinary Research Journal, 3(11) 1- 12.
7) Soundarapandian M ,"Agricultural Entrepreneurship Rural Entrepreneurship" Kanishaka Publication New Delhi.
8) Sah, Pooja, Sujan, D. K. and Kashyap, S. K. (2009) Role of Agripreneurship in the Development of Rural Area, Paper presentation in ICARD at Banaras Hindu University, Varanasi – 221005.
9) Kahan David." Entrepreneurship in farming, "Challenges of Entrepreneurship in Agriculture FAOUN Rome 2012, Page no 18 to 20.

This document was created with the Win2PDF “Print to PDF” printer available at

https://www.win2pdf.com

This version of Win2PDF 10 is for evaluation and non-commercial use only.
Visit https://www.win2pdf.com/trial/ for a 30 day trial license.

This page will not be added after purchasing Win2PDF.

https://www.win2pdf.com/purchase/

INTERNATIONAL RESEARCH FELLOWS ASSOCIATION

Impact Factor 6.625 E-ISSN : 2348-7143

INTERNATIONAL RESEARCH FELLOWS ASSOCIATION'S

RESEARCH JOURNEY

International E-Research Journal

Peer Reviewed, Referred & Indexed Journal

Issue -308 January- 2023

Guest Editors:
Dr. Neha Jagtiani,
Principal,
R.D. & S.H. National College & S.W.A. Science College,
Smt. Jotu Kundnani Chowk, Linking Road, Bandra West, Mumbai (M.S.) India

Chief Editor of the Issue:
Dr. Roopa Gokhale-Shahade,
Librarian,
R.D. & S.H. National College & S.W.A. Science College,
Smt. Jotu Kundnani Chowk, Linking Road, Bandra West, Mumbai (M.S.) India

Executive Editor of the Issue:
Dr. Mona Kejariwal,
Incharge, Department of Botany
R.D. & S.H. National College & S.W.A. Science College,
Smt. Jotu Kundnani Chowk, Linking Road, Bandra West, Mumbai (M.S.) India

Co-Editor of the Issue:
Mr. Dinesh Himmatsinghani,
Department of IT
R.D. & S.H. National College & S.W.A. Science College,
Smt. Jotu Kundnani Chowk, Linking Road, Bandra West, Mumbai (M.S.) India

Chief Editor : **Dr. Dhanraj T. Dhangar**

For Details Visit To : www.researchjourney.net SWATIDHAN PUBLICATIONS

INDEX

No.	Title of the Paper	Author's Name	Page No.
01	The Future of E-Commerce in India	Dr. Anita Rani	05
02	The Impact of COVID-19 on Future Employments and Entrepreneurship for Persons with Disabilities in the 21st Century Inclusive Society	Fr. Baiju Thomas	12
03	Yoga As A Therapy	Dr.Chetna Samant Tomar	28
04	The Study of the Application of Vedic Mathematics and its Role in the Development of Mathematics	Swapnil Ramesh Gadhawe	30
05	Strategic Marketing: A Comprehensive Analysis of Literature Citations	Mohammed kabeer A, Dr. Abdul Nasar VP	35
06	Essentials Role and Growth of E-Commerce in Business Environment	Prof. Dere Jayram Damu, Prof. Punde Sunita Shivaji	41
07	A Study on Exploring the Challenges in Implementation of Artificial Intelligence in Business Processes	Mrs. Sangeetha.G	45
08	Current ICT Trends in the Academic Libraries: An Overview	Mr. Santosh B. Bhagwat, Dr. Vandana S. Gavali	49
09	Higher Education System in India : A Study on Academic Libraries Reengineering Methodology	Dr. Vaishali M. Choudhari	54
10	ICT Tools Applications in the College Library for E - Resources Management and Utilization Through Engineering College Students in Maharashtra	Mr. Kishor Manikrao Waghmare, Dr. Amzad Ali, Dr. Santosh Salunkhe	59
11	Advantages And Limitations of Web Based Learning Amongst Undergraduate Students.	Anu T.Thomas	61
12	A Study of Navi Mumbai City's Public Transport Operations (With Special Refernece to Navi Mumbai Municipal Transport)	Ganesh Ashok Tondlekar, Dr. Hemant Bhatti	64
13	Comparative Study of Online and Offline Modes of Education in Higher Education System in India With Special Reference To Library Science Discipline	Dr. Savita Malik	71
14	The Shifting Landscape of Information Retrieval in the Age of Information Technology: With Special Reference to Web-Scale Discovery Services	Apeksha Shrivastava	76
15	Onset of Double Diffusive Convection in A Couple Stress Fluid Saturated Cross-Diffusion Effects on the Rotating Anisotropic Porous Layer	Premila Ambaraya	80
16	A Study of Human Rights	Dr. Pralhad Chengte	94
17	Tribal Women in Jharkhand	Dr. Poonam Sahay, Vinny Kujur	97
18	nancial Strategies and Global Information Technology Companies	Dr. Rajesh U. Chheda	104
19	A Study on Analysis of Financial Sources of Samarthanam Trust: NGO for Disabled Entrepreneurship	Dadapeer N Hanchinamani, Dr. Mallikarjun Naik	110
20	Use of E-Resources in Academic Libraries: A SWOT Analysis	Dr. Nitinkumar M. Patil and Mrs. Ranjana Mhalgi	116
21	Rural Development is A Ray of Light!	Dr. Prakash Laxmanrao Dompale	121

'RESEARCH JOURNEY' International E- Research Journal
Issue - 308: Multidisciplinary Issue
Impact Factor : 6.625 Peer Reviewed Journal
E-ISSN : 2348-7143
Jan. 2023

22	Joyful Learning Environment for CWSN (Children With Special Needs)	Mrs. Gosha Liberhan	128
23	The Changing Role of Library with the Application of Web Resources and its Services	Mr. Pankaj Ramesh Deshmukh	140
24	Good Ambience and Innovative Services Attract the Library Users in Post Covid Era: A Study	Mr. Pankaj Ramesh Deshmukh	144
25	Social and Political Women Empowerment - Issues and Challenges	Dr. Pooja Rani	152
26	I.C.T. Utilization in Academic Libraries in the Age of Technology	Mr. Pankaj Ramesh Deshmukh	157
27	Biodiversity Information System Supports in Maintaining the Ecological Balance Necessary For Human Survival	Ranjan B. Kalbande	161
28	Pandemic, Politics, and Elections: Lessons From South Asia	Mudasir Bashir Bhat	166
29	The Study of the Application of Metric Space in Real Life	Swapnil Ramesh Gadhawe	175
30	Strategic Marketing : A Comprehensive Analysis of Literature Citations	Mohammed kabeer A, Dr. Abdul Nasar VP	182
31	International general of physical education, sports and health Science behind strength training	Dr. Khan.Parvez.Riyasat	188
32	सकारात्मक चिकित्सा के माध्यम से स्नातक छात्रों पर अवसाद, चिंता और सामान्य स्वास्थ्य में वृद्धि के प्रबंधन का वैज्ञानिक विश्लेषण	मदनलाल टेम्भरे	195
33	पौराणिक ग्रंथों के आधुनिक प्रस्तुतिकरण का पाठकों के व्यावहारिक जीवन पर पड़ने वाले प्रभाव-अमिश के उपन्यास शिव रचना त्रय के सन्दर्भ में	ज्योती शर्मा, डॉ. आँचल श्रीवास्तव	204
34	इतिहासाच्या साधनांचे भांडारगृह	डॉ. सीमा परटोले, डॉ. गौतम सोनवणे	208
35	साहित्य संशोधन आणि साहित्य समीक्षा - साम्य भेद	डॉ. मीनाक्षी देव - निमकर	215
36	डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांचे कुपोषणा संदर्भात विचारांची प्रासंगिकता	डॉ. अर्चना मैसारे	219

'RESEARCH JOURNEY' International E- Research Journal
Issue - 308: Multidisciplinary Issue
Peer Reviewed Journal
Impact Factor : 6.625
E-ISSN : 2348-7143
Jan. 2023

इतिहासाच्या साधनांचे भांडारगृह

लेखक १:
डॉ.सीमा नरेश परटोले
सहाय्यक प्राध्यापक,
इतिहास विभाग,
सोनुभाऊ बसवंत कला व
वाणिज्य, महाविद्यालय, शहापूर
जि.ठाणे.

लेखक २:
डॉ.गौतम सोनवणे
सहयोगी प्राध्यापक,
इतिहास विभाग प्रमुख,
सोनुभाऊ बसवंत कला व
वाणिज्य,महाविद्यालय, शहापूर
जि.ठाणे.

सारांश :

प्रस्तुत संशोधनाचे ध्येय इतिहासाच्या साधनांच्या भांडारगृहांचा अभ्यास करणे हे आहे. प्रस्तुत लेखामध्ये इतिहासाची प्राथमिक व दुय्यम साधने या मुख्य प्रकारांचा व ऐतिहासिक साधनांच्या वर्गीकरणाचा थोडक्यात आढावा घेण्यात आला आहे. तसेच प्रस्तुत लेखात वस्तुसंग्रहालये, ग्रंथालये, पुराभिलेखागार, वृत्तपत्र संग्रहण, नाणे संग्रहालय आणि ई-भांडारगृह या इतिहासाच्या साधनांच्या भांडारगृहांचा सविस्तर आढावा घेण्यात आला आहे.

मुख्य शब्द : इतिहासाची साधने, भांडारगृह, ऐतिहासिक संशोधन, इतिहासकार, संशोधक इ.

प्रस्तावना :

गतकालीन मानवी जीवनाच्या समग्र वाटचालीचा कालानुक्रमे, शास्त्रशुद्ध आणि पद्धतशीर अभ्यास करणारे शास्त्र म्हणजे इतिहास होय. इतिहास लेखन कालानुक्रमे, शास्त्रशुद्ध आणि पद्धतशीरपणे करताना इतिहासकार अनेक साधनांचा वापर करतो. तसेच ऐतिहासिक संशोधन करताना संशोधकाला साधनांची गरज भासते. ऐतिहासिक संशोधन व इतिहासलेखनात साधन हे पुरावा म्हणून वापरले जाते, हे पुरावे दृष्टीस पडणारे आणि त्याद्वारे एखाद्या घटनेची माहिती समजून घेऊन घटनेची सत्यता सांगितली जाते. म्हणूनच आधुनिक इतिहास लेखनशास्त्राचे जनक लिओपोल्ड रांके या जर्मन इतिहासकार यांनी साधनांचे महत्व स्पष्ट करताना "**NO SOURCE, NO HISTORY**"(गाठाळ, 2015) असे म्हटले आहे. याचा अर्थ साधनांशिवाय ऐतिहासिक संशोधन व इतिहासलेखन होऊ शकत नाही. इतिहासातील एखाद्या घटनेचे विश्लेषण करून अन्वयार्थ काढण्यासाठी ज्या वस्तू, वास्तू, प्राचीन लेख, कागदपत्रे व उत्खननातील अवशेष यांचा वापर केला जातो, त्यांना ऐतिहासिक साधने असे म्हणतात.

संशोधनाचे ध्येय : प्रस्तुत संशोधनाचे व्यापक ध्येय इतिहासाच्या साधनांच्या भांडारगृहांचा अभ्यास करणे.

संशोधनाची उद्दिष्ट्ये :

1. इतिहासाची प्राथमिक व दुय्यम साधने या संकल्पनांची माहिती मिळविणे.
2. वस्तुसंग्रहालये, ग्रंथालये, पुराभिलेखागार, वृत्तपत्र संग्रहण आणि नाणे संग्रहालय या भांडारगृहांची माहिती मिळविणे.
3. इतिहासलेखनासाठी उपयुक्त असणाऱ्या ई-भांडारगृहांचा शोध घेणे.

ऐतिहासिक साधनांचे प्रकार :

ऐतिहासिक संशोधन व इतिहासलेखनासाठी प्रामुख्याने प्राथमिक साधने, दुय्यम साधने, लिखित साधने, अलिखित साधने, मौखिक साधने, प्रकाशित, अप्रकाशित साधने, आधुनिक साधने आणि तांत्रिक व डीजीटल साधने यांचा वापर केला जातो. ऐतिहासिक साधनांचे प्रामुख्याने दोन प्रकार आहेत, ते पुढीलप्रमाणे:

१. प्राथमिक साधने

एखादी घटना घडत असताना एखाद्या व्यक्तीने जर ती घटना स्वतःच्या डोळ्यांनी पाहिली असेल आणि त्या घटनेची नोंद स्वतः किंवा इतरांना सांगून त्याचवेळी केली असेल तर त्याद्वारे निर्माण होणाऱ्या साधनांना प्राथमिक साधने म्हणतात. या साधनांचे प्रामुख्याने दोन भागात विभाजन केले जाते, ते म्हणजे लिखित व अलिखित साधने होय. लिखित साधनांमध्ये रोजनिशी, आत्मचरित्रे व आठवणी, समकालीन कागदपत्रे, खाजगी पत्रे, गुप्त पत्रव्यवहार, सरकारी व सार्वजनिक कागदपत्रे, जमाखर्च, नकाशे, तक्ते, नाणी इ. चा समावेश होतो. अलिखित साधनांमध्ये प्राचीन कला, प्राचीन वास्तू, पुरातत्वीय अवशेष, नद्या, पर्वत इ. चा समावेश होतो.

२. दुय्यम साधने

एखादी घटना घडून गेल्यानंतर अनेक वर्षांनी ऐकीव माहितीच्या आधारे, स्मरणशक्तीच्या आधारे आणि प्राथमिक साधनांतील मूळ माहितीचे तर्कशुद्ध व शास्त्रीय पद्धतीने विश्लेषण करून लिहिलेले ग्रंथ म्हणजे दुय्यम साधने होय. यांत चरित्र ग्रंथ, बखरी, वंशवेल, कुळकटी, शकावल्या, बाडे, नाटके , कादंबरी, महजर, करीने, ऐतिहासिक काव्य, पोवाडे, म्हणी इ. चा समावेश होतो.

ऐतिहासिक साधनांच्या वरील दोन प्रकारातील विविध साधनांचे वर्गीकरण खालीलप्रमाणे केले जाते.

१. **साधनांच्या निर्मितीचा काळ :** उदा. प्राथमिक व दुय्यम साधने
२. **आशयाधारित साधने :** उदा. धार्मिक ग्रंथ, चरित्र ग्रंथ, प्रवास वर्णने
३. **उद्देशाधारीत साधने :** उदा. हत्यारे, अलंकार, विहार, विविध वास्तू
४. **आधुनिक साधने :** उदा. इंटरनेट वेबसाईटस, अभिलेख, ऑडीओ व व्हिडीओ क्लिप्स

वरील साधनांचा वापर ऐतिहासिक संशोधनात केला जातो. ऐतिहासिक संशोधनात विषयाची निवड साधनांच्या उपलब्धतेवर अवलंबून असते. विषयाच्या निवडीनंतर संशोधनासाठी आवश्यक असलेली साधने कोणत्या ठिकाणी उपलब्ध होतील याचा विचार संशोधकाला करावा लागतो. साधनांच्या संकलनासाठी संशोधकाला ऐतिहासिक संशोधनाची साधने ज्या ठिकाणी संग्रहित व सुरक्षित जतन करून ठेवलेली असतात, त्या भांडारगृहांना भेट द्यावी लागते. ती इतिहासाच्या साधनांची भांडारगृहे पुढीलप्रमाणे आहेत.

१. वस्तुसंग्रहालये :

वस्तुसंग्रहालय या मराठी शब्दाचा संधी विग्रह केल्यास वस्तू + संग्रह + आलय असा होतो. याचाच अर्थ वस्तूसंग्रहालय म्हणजे असे ठिकाण कि जिथे वस्तूंचा संग्रह करून ठेवला जातो. जॉन एम.ए. थॉमसन यांच्या मते, "आम जनतेला सदैव खुली असलेली व जनतेच्या सेवेसाठी आणि विकासासाठी जी केवळ नफा मिळविण्यासाठी उभारलेली नाही अशी कायमस्वरूपी संस्था कार्यरत असते, ती संस्था म्हणजे वस्तुसंग्रहालय होय." (कठारे, साखरे, & पाटील, 2011) कोणत्याही देशाच्या ऐतिहासिक व सांस्कृतिक वारशाचे संग्रह, जतन व संवर्धन करून लोकशिक्षण या उद्देशाने काम करणारी कायमस्वरूपी संस्था म्हणजे वस्तुसंग्रहालय होय. आज वस्तुसंग्रहालये सरकारी, खाजगी संस्था व व्यक्तींच्या मालकीची असलेली दिसून येतात. हि विविध प्रकारची वस्तुसंग्रहालये इतिहासाच्या साधनांची भांडारगृहे बनली आहेत. कारण यात संशोधक, इतिहासकार, वाचक व अभ्यासक यांना इतिहासाच्या अभ्यासासाठी आवश्यक असणारी साधने मोठ्या प्रमाणात उपलब्ध असतात. संशोधक, इतिहासकार व अभ्यासक यांना ही साधने आज अस्तित्वात असलेल्या विविध प्रकारच्या वस्तुसंग्रहालयांतून मिळत असतात.

ऐतिहासिक संग्रहालयांमध्ये दुर्मिळ व महत्वपूर्ण ऐतिहासिक अभिलेख, नाणी, फोटो, शस्त्रास्त्रे, वास्तू, पत्रे, नकाशे, तैलचित्रे यांचा संग्रह असतो. उदा. छत्रपती शिवाजी महाराज वस्तुसंग्रहालय, मुंबई.

पुरातत्वीय कलावशेष, मूर्तीकला, शिल्पकला, वास्तुकला, चित्रकला, संगीत कला, कला क्षेत्राशी संबंधित विविध घटकांचा समावेश कला वस्तूसंग्रहालयामध्ये असतो. उदा. नॅशनल गलरी ऑफ मॉर्डन आर्ट, नवी दिल्ली.

पुरातत्वीय वस्तुसंग्रहालयामध्ये उत्खननामध्ये सापडलेले विविध अवशेष, नाणी, दगडी हत्यारे, ताडपत्रे, ताम्रपट, मानव व प्राणी यांच्या हाडांचे सांगाडे, हस्तिदंत, अलंकार, शिलालेख, शिल्प इ. वस्तू असतात. उदा. आर्किओलॉजिकल म्युझिअम, विजापूर.

मानवाने विज्ञान, तंत्रज्ञान व औद्योगिक क्षेत्रात केलेल्या प्रगती व शोध यांच्याशी संबंधित वस्तूंचा समावेश विज्ञान, तंत्रज्ञान व औद्योगिक वस्तूसंग्रहालयामध्ये असतो. उदा. विश्वेश्वरेय्या संग्रहालय, बंगलोर

बाल वस्तूसंग्रहालयामध्ये इतिहास, संस्कृती, विज्ञानाचे नियम, थोर व्यक्तीचे चित्र, जीव सृष्टीचे वाढ, विकास व नाश यासंबंधीचे नियम, हस्तकला व चित्रकला, मंदिर व किल्ले यांच्या स्थापत्याविषयीची माहिती इ. ची माहिती मिळते. उदा. बालभवन, नवी दिल्ली नैसर्गिक वस्तुसंग्रहालयांमध्ये वन्य वनस्पती व प्राणी, पशुपक्षी, दुर्मिळ वनस्पती व प्राणी यांचा संग्रह आणि निसर्गातील विविध घटकांचे हुबेहूब प्रतिकृतीचे प्रदर्शन केले जाते. उदा. नॅचलर हिस्टरी म्युझिअम, दार्जिलिंग

विज्ञान तंत्रज्ञानामुळे कृषी क्षेत्रात झालेली प्रगती, पिकांवर पडणारे रोग, त्यावरील औषधे व किटकनाशके, सुधारित बी बियाणे, खते, अवजारे, शेतीतील विविध पिके आणि मातीचे नमुने यांचे प्रदर्शन व संग्रह करणारी शेतीविषयक वस्तुसंग्रहालये असतात. उदा. कोईमतूर संग्रहालय.

मानवाला होणारे विविध आजार, त्यावरील प्रतिबंधात्मक उपाय, औषधे व उपचार पद्धती, आरोग्याची काळजी कशी घ्यावी, शरीराची स्वच्छता, लसीकरण, कुटुंबनियोजनाचा कार्यक्रम इ. आरोग्यविषयक घटकांची माहिती देणारी वस्तुसंग्रहालये भारतात विविध ठिकाणी आहेत . उदा. मेडिकल कॉलेज म्युझिअम, गन्तूर .

देशाच्या संरक्षण यंत्रणेत वापरण्यात येणारी विविध शस्त्रास्त्रे व हत्यारे यांचा संग्रह व जतन, संरक्षणविषयक वस्तुसंग्रहालयात केले जाते. उदा. नॅशनल डिफेन्स अकॅडेमी, पुणे.

व्यक्तीविषयक संग्रहालये देशातील थोर व्यक्तीच्या व्यक्तिमत्वाचे विविध पैलू व त्यांचे कार्य सर्वांपर्यंत पोहोचावे यासाठी कार्य करतात. उदा. मणीभवन संग्रहालय, मुंबई.

एखाद्या प्रदेशातील, स्थानिक भागातील परंपरा, सण, उत्सव, लोककला, हस्तकला, व्यवसाय इ. बाबतची माहितीचे प्रादेशिक व स्थानिक वस्तुसंग्रहालयामार्फत प्रदर्शन भरविले जाते. उदा. मध्यवर्ती संग्रहालय, नागपूर.

त्याचप्रमाणे हस्तकला संग्रहालये, मंदिर संग्रहालये, जंगलविषयक संग्रहालये, राजमहालातील संग्रहालये हे सुद्धा वस्तुसंग्रहालयांचे प्रकार आहेत. अशाप्रकारे वस्तुसंग्रहालयामध्ये इतिहासाचे विद्यार्थी, अभ्यासक, संशोधक यांना उपयुक्त असणारी विविध प्रकारची साधने असल्याने आज वस्तुसंग्रहालये संशोधन, लोकशिक्षण व ज्ञानदानाचे माध्यम बनून इतिहासाच्या साधनांचे एक महत्वाचे भांडारगृह बनले आहे.

२. ग्रंथालये :

भारतात प्राचीन काळापासून अस्तित्वात असलेले इतिहासाच्या साधनांचे महत्वाचे भांडारगृह म्हणजे ग्रंथालय होय. ऑक्सफर्ड शब्दकोशातील व्याख्येनुसार, "ग्रंथालय म्हणजे वाचन, अभ्यास आणि संदर्भासाठी उपलब्ध असणाऱ्या पुस्तकांचे स्थान होय" (समेळ, रानडे, & नाबर, 2005). तर एफ. जी. बी. हटिंचग यांच्या

मते, "ग्रंथालय म्हणजे ग्रंथ आणि अभिलेखांच्या इतर प्रकारांचा संग्रह जो वाचकांच्या उपयोगासाठी एखाद्या इमारतीत व्यवस्थितरित्या ठेवण्यात आलेला आहे व जी इमारत विद्या व ज्ञानप्राप्तीचे प्रतिक बनले आहे" (समेळ, रानडे, & नाबर, 2005). याचाच अर्थ ग्रंथालयामध्ये वाचन, लेखन, संदर्भ आणि अभ्यासासाठी मोठ्या प्रमाणात विविध विषयांवरील पुस्तकांचा संग्रह असून ते वाचकांसाठी ज्ञानप्राप्तीचे एक महत्वाचे ठिकाण आहे. परंतु आज या संग्रहाची व्याप्ती वाढली असल्याने ग्रंथालयांमध्ये ज्ञानकोश, विश्वकोश, शब्दकोश, संशोधनपर जर्नल्स, नियतकालिके, मासिके व वृत्तपत्रे यांचा संग्रह असतो. ग्रंथालयातील हा संग्रह विद्यार्थी, अभ्यासक, संशोधक आणि सर्वसामान्य जनता या सर्वांना वाचनासाठी खुला असतो. ग्रंथालय हे आंतरविद्याशाखीय असतात, कारण यात इतिहास, संस्कृती, अर्थशास्त्र, आर्थिक व्यवहार, राज्यशास्त्र, राजकारण, समाजशास्त्र, भूगोल, खगोलशास्त्र, धर्मशास्त्र, विविध कला, पर्यावरण, वातावरण, तत्वज्ञान, मानसशास्त्र, भाषाशास्त्र, मानवशास्त्र, संगणक, तंत्रज्ञान, मुद्राशास्त्र व विविध भाषांशी संबंधित वाङ:मयीन साहित्याचा संग्रह असून तो संबंधित विषयाच्या अभ्यासक व वाचक यांना त्यांच्या आवश्यकतेनुसार उपलब्ध करून देणे, ही ग्रंथालयाचा सर्वेसर्वा या नात्याने ग्रंथपालाची जबाबदारी असते.

आज इतिहासलेखनासाठी आवश्यक असणाऱ्या विविध ग्रंथांच्या हस्तलिखित प्रती, परकीय प्रवाशांची इतिवृत्ते, चरित्रे-आत्मचरित्रे, दैनंदिनी, खाजगी पत्रव्यवहार, परराज्याशी राजांनी केलेला पत्रव्यवहार, समकालीन कागदपत्रे, युद्धमोहिमा, सैनिकी कारवायांशी संबंधित कागदपत्रे, तह-करार यांच्याशी संबंधित कागदपत्रे, व्यापार, शेती व उद्योगधंद्यामधील उत्पादन, नैसर्गिक आपत्ती, धार्मिक विधी, खरेदी विक्री संबंधित कागदपत्रे, शासकीय अभिलेख, सार्वजनिक कागदपत्रे, शेतसारा, खंडणी, विविध प्रकारचे कर व करवसुली, विशिष्ट राजाच्या कालखंडातील कायदे व नियमावली इत्यादी लिखित साधनांचा एकत्रित संग्रह इतिहासाच्या अभ्यासकांना व वाचकांना ग्रंथालय या भांडारगृहातून प्राप्त होतो. म्हणूनच एफ. जी. बी. हटिंचग यांनी ग्रंथालयांना विद्या व ज्ञानप्राप्तीचे प्रतिक मानले आहे (समेळ, रानडे, & नाबर, 2005).

३. अभिलेखागार/ पुराभिलेखागर / दफ्तरखाना

मानवाने आपल्या कार्य कर्तृत्वाचे जे पुरावे मागे ठेवले आहेत, त्या सर्व पुराव्यांचा अभ्यास तत्कालीन मानवाचा इतिहास लिहिताना करावा लागतो. यांत लिखित व अलिखित पुराव्यांचा समावेश होतो. यापैकी लिखित पुरावे हे मानवाला लेखनकला अवगत झाल्यानंतर सुरुवातीला त्याने भूर्जपत्रे, ताडपत्रे, गुहांच्या भिंती, शिळा, मुद्रा, शिक्के, विटा, ताम्रपट इ. चा वापर करून लिहिले. कागदाचा शोध लागल्यानंतर हस्तलिखित स्वरूपातील कागदपत्रे, टंकलिखित कागदपत्रे आणि मुद्रित स्वरूपातील कागदपत्रे ही इतिहासाची लिखित साधने बनली आहेत, यांनाच ऐतिहासिक भाषेत 'अभिलेख/पुराभिलेख' असे म्हटले जाते. अभिलेख/पुराभिलेख म्हणजे प्राचीन काळी कोरलेला लेख होय. म्हणूनच मो.वि.भाटवडेकर यांच्या मराठी पर्यायी शब्दकोशामध्ये अभिलेख या शब्दाचा अर्थ 'इतिहासाचे साधन, ऐतिहासिक कागदपत्रे, ऐतिहासिक महत्वाचा आलेख, ताम्रपट, शिलालेख, सनद' (जाधव & मुजावर, 2022) असा दिला आहे.

पुराभिलेखांची निर्मिती शासन, शासकीय संस्था, खाजगी संस्था, एखादी व्यक्ती यांच्याकडून केली जाते. पुराभिलेख हे इतिहासाचे प्राथमिक साधन आहे. आज पुराभिलेखांमध्ये भूर्जपत्रे, ताडपत्रे, ताम्रपट, हस्तलिखिते, बखरी, विविध ग्रंथ, परकीय प्रवाश्यांचे वृत्तांत, वृत्तपत्रे, व्हिडिओ व ऑडिओ कॅसेट, व्याख्याने, मुलाखती, नकाशा, जमाखर्च, रोजनिशी, चौकशी अहवाल, न्यायालयीन निवाडे इ. चा समावेश होतो. ही सर्व लिखित साधने अभ्यासक, वाचक, संशोधक, विद्यार्थी, व इतिहासकार यांना सहज उपलब्ध व्हावीत म्हणून

त्यांचे काळजीपूर्वक जतन व संवर्धन करणारी शासकीय व खाजगी कायमस्वरूपी संस्था म्हणजे पुराभिलेखागार होय.

भारतात ब्रिटिशांनी १८१८ मध्ये मद्रास येथे पहिल्या पुराभिलेखागाराची स्थापन केली. यानंतर भारतातील विविध प्रांतात विविध प्रकारचे पुराभिलेखागार स्थापन झाले आहेत. यात शासकीय पुराभिलेखागार, राष्ट्रीय पुराभिलेखागार, खाजगी संशोधन संस्थांचे दफ्तरखाने, महाविद्यालयीन स्तराबरील पुराभिलेखागार, विद्यापीठ स्तराबरील पुराभिलेखागार, मंदिरातील दफ्तरखाने, औद्योगिक पुराभिलेखागार, फिल्म संग्रहालये यांचा समावेश होतो. विविध प्रकारच्या पुराभिलेखागारातून शासन, संशोधक व इतिहासकार यांना इतिहासाशी संबंधित कागदपत्रे सहज उपलब्ध होतात. त्यामुळे इतिहासात नवीन ज्ञानाची भर पडते. या पुराभिलेखांद्वारे शासनाने/ विशिष्ट कालखंडातील राजांनी कोणते कार्य व धोरणे राबविले होती यांवर प्रकाश टाकता येतो. पुराभिलेख विद्यमान शासनाला कार्य करण्यासाठी मार्गदर्शक म्हणून काम करतात. म्हणून पुराभिलेखागारातील ऐतिहासिकदृष्ट्या मौल्यवान व दुर्मिळ अभिलेखांचे जतन व संवर्धन करणे हे पुराभिलेखागाराचा प्रमुख असलेल्या मुख्य अभिलेख अधिकारी म्हणजेच अभिलेखापालाचे कर्तव्य असते.

४. वृत्तपत्रे संग्रहण

गोपाळ गणेश आगरकर यांनी वृत्तपत्रांना 'बृहत जिव्हा' असे म्हटले आहे. (कोंडेकर) वृत्तपत्रे ही आधुनिक व समकालीन इतिहासाचे महत्वाचे साधन आहे. या वृत्तपत्रांचे संग्रहण अभिलेखागारात, खाजगी व्यक्ती व संस्था यांच्याकडे असून आज वृत्तपत्रे डिजिटल स्वरुपात सुद्धा संग्रहित केलेली असतात. भारताच्या स्वातंत्र्य आंदोलनाचा इतिहास लिहिताना तत्कालीन विविध वृत्तपत्रे उदा. बेंगॉल गझेट, उर्दू अखबार, प्रजामित्र, कन्नड समाचार, दर्पण, प्रभाकर, केसरी, मराठा, न्यू इंडिया इत्यादी भारतातील विविध भाषांमधील वृत्तपत्रांमधून ब्रिटिशांनी भारतीयांसाठी केलेले कायदे, धोरणे तसेच भारतीयांनी ब्रिटिशांविरुद्ध केलेली आंदोलने व चळवळी यांची माहिती मिळते. त्यामुळे वृत्तपत्रांचे संग्रहण हे इतिहासकार व संशोधक यांच्यासाठी इतिहासाच्या साधनांचे भांडारगृह ठरते.

५. नाणे संग्रहालय

प्राचीन व मध्ययुगीन भारताच्या इतिहासाचे महत्वाचे साधन म्हणजे नाणी होय. वा.सी.बेंद्रे यांच्यामते, "नाणी ही एकप्रकारच्या अविनाशी ऐतिहासिक साधनांपैकी एक आहेत" (सरदेसाई, 2003). प्राचीन काळातील अज्ञात अशा राजाच्या राजवटीची माहिती त्या राजाच्या सापडलेल्या नाण्यांवरून मिळाली आहे. उदा. भारतातील इंडो-ग्रीक राजे, सातवाहन राजे. नाण्यांवरून विशिष्ट कालखंडातील मानवाच्या राजकीय, सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक व आर्थिक जीवनाची माहिती मिळते, म्हणून नाणी हे इतिहासाचे महत्वाचे साधन ठरते.

इतिहासाच्या अभ्यासासाठी नाणी अभ्यासकांना सहज उपलब्ध व्हावीत म्हणू उत्खननात सापडलेल्या नाण्यांचे जतन व संवर्धने करण्याचे काम नाणे संग्रहालय करते. हि नाणी संग्रहालय शासकीय संस्था आणि खाजगी संस्था यांच्याकडून चालविली जातात. भारतातील चेन्नई आणि इरोदे (तामिळनाडू) येथील शासकीय संग्रहालयात नाणे संग्रहालय आहेत. तसेच महाराष्ट्राची राजधानी असलेल्या मुंबईमध्ये भारतीय रिझर्व्ह बँकेचे असून यात भारतातील सुरुवातीच्या पैशांपासून ते मध्याचे कागदी पैसे संग्रहित करण्यात आले आहेत. तसेच नाशिक जवळील अंजनेरी येथील या संस्थेमार्फत नाणे संग्रहालय चालविले जाते, ज्यात प्राचीन भारतातील कुशान, क्षत्रप, गुप्त आणि परमार या विविध राजांची वास्तविक आणि प्रतिकृती नाणी आहेत. तसेच काही

संग्रहालयातून नाणकशास्त्रातील पदव्युत्तर अभ्यासक्रम राबविले जातात. उदा. दिनेश मोदी नाणे संग्रहालय, मुंबई विद्यापीठ .

६. ई-भांडारगृह

आजचे युग हे विज्ञान व तंत्रज्ञान आणि इंटरनेट युग असल्याने आज इतिहासाची साधने व माहिती मोठ्या प्रमाणात ई-भांडारगृहात म्हणजेच इंटरनेटवर डिजिटल स्वरुपात उपलब्ध आहे. त्यामुळे इतिहासाच्या अभ्यासासाठी आवश्यक मौल्यवान व दुर्मिळ ऐतिहासिक माहिती, कागदपत्रे आणि वस्तू यांचे डिजिटल स्वरुपात जतन केले जाते. या मौल्यवान व दुर्मिळ ऐतिहासिक माहिती, कागदपत्रे आणि वस्तू यांचे शासकीय संस्था, स्वयंसेवी संस्था, विद्यापीठे, संग्रहालये, अभिलेखागार, ग्रंथालये, सांस्कृतिक मंडळ आणि व्यावसायिक संस्था यांच्याद्वारे डिजिटल अर्काईव्ह स्वरुपात प्रकाशित केली जातात. त्यामुळे ही माहिती आपण ऑनलाईन व ऑफलाईन पाहू शकतो. आज ई-भांडारगृहात संकेतस्थळे, गुगल पुस्तके, वर्ल्डकॅट, व्हिडिओ व ऑडिओ रेकॉर्डिंग, फोटो, वेब अभिलेखागार, अनिमेशन, 3D मॉडेल्स, चित्रपट, लघुपट, ई-जर्नल्स, युट्युबवरील व्हिडिओ व ऑडिओ रेकॉर्डिंग या स्वरुपात इतिहासाची साधने उपलब्ध आहेत . यापैकी काही साधनांची माहिती थोडक्यात पुढीलप्रमाणे आहे.

I. संकेतस्थळे

आंतरजालावरील विविध संकेतस्थळांवर माहिती डिजिटल स्वरुपात ठेवलेली असते. प्रबंध, शोधनिबंध, ई-जर्नल्स, फोटो, थोर व्यक्तींच्या व्हिडिओ व ऑडिओ रेकॉर्डिंग इ. इतिहासाची साधने डिजिटल स्वरुपात विविध संकेतस्थळांवर आहेत. उदा. विद्यापीठ अनुदान आयोगाचा शोधगंगा हा एक नवीन प्रकल्प असून त्याचे https://shodhganga.inflibnet.ac.in शैक्षणिक संकेतस्थळ आहे . या संकेतस्थळावर विविध विषयांतील एम.फिल आणि पीएच.डी प्रबंधांचे डिजिटल भांडारगृह असून सध्या इतिहासाचे भारतातील विविध विद्यापाठातील एकूण ९४०५ प्रबंध (Home Page) डिजिटल स्वरुपात उपलब्ध आहेत. त्यामुळे इतिहास संशोधकांना आवश्यक प्राथमिक व दुय्यम साधनांचा संदर्भ घेण्यास व संबंधित संशोधनाचा पूर्वाभ्यास करण्यास मदत होते, म्हणून "शोधगंगेला भारतीय प्रबंधांचा खुला खजिना" असे म्हटले जाते (career-vrutantta).

II. गुगल बुक्स

हे ऑनलाईन पुस्तकाचं शोधयंत्र असून याद्वारे इतिहासकार व संशोधक पुस्तके ऑनलाईन वाचू शकतात, खरेदी करू शकतात आणि संबंधित पुस्तकाची थोडक्यात माहिती वाचू शकतात.

III. ई-जर्नल्स

ई-जर्नल्स म्हणजे आंतरजालावर इलेक्ट्रॉनिक स्वरुपात प्रकाशित झालेले शैक्षणिक जर्नल्स होय (Home Page). ई-जर्नल्स हे विशिष्ट विषयांचे आणि आंतरविद्याशाखीय स्वरूपाचे आणि आंतरराष्ट्रीय व राष्ट्रीय स्तरावरील असतात असतात. उदा. Indian Streams Research Journal आणि Indian Journal of Scientific Development and Research (IJSDR) हे अनुक्रमे हे आंतरराष्ट्रीय आणि राष्ट्रीय स्तरावरील ई-जर्नल्स आहेत.

IV. वर्ल्डकॅट

जगभरातील विविध ग्रंथालयातील साहित्य ऑनलाईन स्वरुपात शोधण्यास वर्ल्डकॅट मदत करते. हे जगातील सर्वात मोठे लायब्ररी कॅटलॉग आहे. सध्या वर्ल्डकॅटमध्ये ४०५ दशलक्ष पुस्तके, ४४० दशलक्ष लेख,

२५ दशलक्ष ऑडिओ रेकॉर्डिंग, १० दशलक्ष संगीत स्कोअर, ६ दशलक्ष नकाशे, ३० दशलक्ष प्रबंध उपलब्ध आहेत (Home Page).

या स्वरुपात उपलब्ध असलेल्या माहिती व साधनांचा वापर इतिहासाचा विद्यार्थी, अभ्यासक, संशोधक व इतिहासकार यांना संशोधन व इतिहासलेखानासाठी होतो, म्हणून आज ई-भांडारगृह हे इतिहासाच्या साधनांचे अत्यंत महत्वाचे भांडारगृह बनले आहे .

निष्कर्ष :

इतिहासलेखन आणि ऐतिहासिक संशोधन यांत इतिहासाच्या साधनांच्या भांडारगृहांची भूमिका अत्यंत महत्वाची आहे. वस्तुसंग्रहालये, ग्रंथालये, पुराभिलेखागर, वृत्तपत्र संग्रहण, नाणे संग्रहालय आणि ई-भांडारगृह या भांडारगृहांतील साधनांचा वापर केल्याशिवाय इतिहासलेखन आणि ऐतिहासिक संशोधन पूर्ण होणारच नाही, म्हणून प्रत्येक इतिहासकार आणि इतिहास संशोधक यांना या भांडारगृहांना भेट द्यावीच लागते. या भांडारगृहांतील प्राथमिक आणि दुय्यम साधनांचा वापर करून केलेल्या इतिहासलेखनात वस्तुनिष्ठता, सत्यता आणि विश्वसनीयता अधिक असल्याचे आढळून येते. आजच्या विज्ञान व तंत्रज्ञान आणि इंटरनेट युगात ई- भांडारगृहांतील संकेतस्थळे, गुगल पुस्तके, वर्ल्डकॅट आणि ई-जर्नल्स ही भांडारगृहे इतिहासाच्या साधनांची अत्यंत महत्वाची भांडारगृहे बनली आहेत.

संदर्भ:

1. *career-vrutantta*. (n.d.). Retrieved Nov 23, 2022, from https://www.loksatta.com/career-vrutantta/discover-gangatreasury-of-indian-thesis-is-opened-45304/
2. *Home Page*. (n.d.). Retrieved Nov 19, 2022, from https://shodhganga.inflibnet.ac.in
3. *Home Page*. (n.d.). Retrieved Nov 20, 2022, from https://www.worldcat.org/
4. *Home Page*. (n.d.). Retrieved Nov 19, 2022, from https://en.m.wiktionary.org/wiki/e-journal
5. कठारे, माखरे, & पाटील. (2011). *पुरातत्वविद्या, वस्तुसंग्रहालयशास्त्र आणि पर्यटन*. औरंगाबाद: विद्या बुक्स पब्लिशर्स.
6. कोंडेकर, ए. बाय. (एन. डी.). *आधुनिक भारताचा इतिहास* . निराली पब्लिशर्स.
7. गाठाळ, एस. एस. (2015). *इतिहासलेखनशास्त्र*. औरंगाबाद: कैलास पब्लिकेशन्स.
8. जाधव, अ., & मुजावर, म. (2022). *इतिहासाच्या पद्धती आणि उपयोजन*. (अ. पाटील, & म. शिखरे, संपा.) कोल्हापूर: शिवाजी विद्यापीठ.
9. समेळ, रानडे, & नाबर. (2005). *पुरातत्वशास्त्र, वस्तुसंग्रहालयशास्त्र, ग्रंथालयशास्त्राचे घटक*. मुंबई: मनन प्रकाशन.
10. सरदेसाई,बी. एन. (2003). *इतिहास लेखनशास्त्र*. कोल्हापूर: फडके प्रकाशन.

ISSN 0976-0377
RNI. MAHMUL02805/2010/33461

International Registered & Recognized
Research Journal Related To Higher Education for all Subjects

INTERLINK RESEARCH ANALYSIS

Editor In Chief
Dr. Balaji Kamble

RNI. MAHMUL02805/2010/33461

IMPACT FACTOR 6.20

ISSN 0976-0377

International Registered & Recognized
Research Journal Related to Higher Education for all Subjects

INTERLINK RESEARCH ANALYSIS

UGC APPROVED, REFEREED & PEER REVIEWED RESEARCH JOURNAL

Issue : XXVII, Vol. II
Year - 14 (Half Yearly)
(Jan. 2023 To June 2023)

Editorial Office :
'Gyandeep',
R-9/139/6-A-1,
Near Vishal School,
LIC Colony,
Pragati Nagar, Latur
Dist. Latur - 413531.
(Maharashtra), India.

Contact : 02382 - 241913
09423346913,09637935252,
09503814000,07276301000

Website
www.irasg.com

E-mail :
interlinkresearch@rediffmail.com
visiongroup1994@gmail.com
mbkamble2010@gmail.com
drkamblebg@rediffmail.com

Publisher :
Jyotichandra Publication,
Latur, Dist. Latur.-415331
(M.S.) India

Price: ₹ 200/-

CHIEF EDITOR

Dr. Balaji G. Kamble
Research Guide & Head, Dept. of Economics,
Dr. Babasaheb Ambedkar Mahavidyalaya, Latur, Dist. Latur (M.S.)
Mob. 09423346913, 9503814000

EXECUTIVE EDITORS

Dr. Aloka Parasher Sen
Professor, Dept. of History & Classics,
University of Alberta, Edmonton,
(CANADA).

Dr. Laxman Satya
Professor, Dept. of History,
Lokhevan University, Loheavan,
PENSULVIYA (USA)

Dr. Huen Yen
Dept. of Inter Cultural
International Relation
Central South University,
Changsha City, (CHAINA)

Bhujang R. Bobade
Director, Manuscript Dept.,
Deccan Archaeological and Cultural
Research Insititute,
Malakpet, Hyderabad. (A.P.)

Dr. Omshiva V. Ligade
Head, Dept. of History,
Shivjagruti College,
Nalegaon, Dist. Latur. (M.S.)

Dr. Sadanand H. Gone
Principal,
Ujwal Gramin Mahavidyalaya,
Ghonsi , Dist. Latur. (M.S.)

Dr. G.V. Menkudale
Dept. of Dairy Science,
Mahatma Basweshwar College,
Latur, Dist. Latur.(M.S.)

Dr. Balaji S. Bhure
Dept. of Hindi,
Shivjagruti College,
Nalegaon, Dist. Latur.(M.S.)

DEPUTY-EDITORS

Dr. S.D. Sindkhedkar
Vice Principal
PSGVP's Mandals College,
Shahada, Dist. Nandurbar (M.S.)

Veera Prasad
Dept. of Political Science,
S.K. University,
Anantpur, (A.P.)

Dr. C.J. Kadam
Head, Dept. of Physics
Maharashtra Mahavidhyalaya,
Nilanga, Dist. Latur.(M.S.)

Johrabhai B. Patel,
Dept. of Hindi,
S.P. Patel College,
Simaliya (Gujrat)

CO-EDITORS

Sandipan K. Gaike
Dept. of Sociology,
Vasant College,
Kej, Dist. Beed (M.S.)

Dr. Shivaji Vaidya
Dept. of Hindi,
B. Raghunath College,
Parbhani,Dist. Parbhani.(M.S.)

Ambuja N. Malkhedkar
Dept. of Hindi
Gulbarga, Dist. Gulbarga,
(Karnataka State)

Dr. Shivanand M. Giri
Dept. of Marathi,
B.K. Deshmukh College,
Chakur Dist. Latur.(M.S.)

I N D E X

Sr. No	Title for Research Paper	Page No
1	Recent Trends in human resources Management **Dr. Nagnath M. Adate**	1
2	Impacts of Black Money on Indian Economy **Prachi Anil Katte**	10
3	Impact Of Rubber Production On Growth Of Trade In India **Dr. Santosh S. Budhwant**	15
4	Comparative study of ground and well water quality in Latur Dist. Latur (M.S.) India **Dr. Umakant Pandharinath Kamble**	20
5	आधुनिक युग बोध की अभिव्यक्ती **डॉ. अर्जुन सिताराम पवार**	25
6	रिझर्व बँकेचे पतनियंत्रणाचे धोरण **प्रा. अंगद केशवराव फाजगे**	29
7	कापूस पिक व शेतकरी आत्महत्या - एक विश्लेषणत्मक अभ्यास **ओमप्रकाश जगनराव झिमटे, डॉ. दिपक राऊत**	38
8	क्रीडा शिक्षकाचे सामाजिक योगदान : एक चिकित्सक अभ्यास **डॉ. गोविंद बन्सीधरराव वाकणकर**	48
9	बालकामगारांचे पुनर्वसन आणि शासनाची भूमिका **डॉ. चंद्रशेखर एस. पाटील**	52
10	मादक द्रव्यांचे सेवन आणि सामाजिक समस्या **डॉ. डी. एन. दामावले**	58

This document was created with the Win2PDF “Print to PDF” printer available at

https://www.win2pdf.com

This version of Win2PDF 10 is for evaluation and non-commercial use only.
Visit https://www.win2pdf.com/trial/ for a 30 day trial license.

This page will not be added after purchasing Win2PDF.

https://www.win2pdf.com/purchase/

RNI. MAHMUL02805/2010/33461
Interlink Research Analysis
IMPACT FACTOR 6.20
ISSN 0976-0377
Issue : XXVII, Vol. II, Jan. 2023 To June 2023

Impact Of Rubber Production On Growth Of Trade In India

Dr. Santosh S. Budhwant
Assistant Professor
Department of Economics
S.B.College, Shahapur

3 Research Paper - Economics

Introduction:-

Agriculture & Trade they both are two sides of one coin. However there is a Interdependence between Agriculture & Trade.

Before 19th century as there all the farmers used to cultivate and produce food grains any for their own requirements but at present commercial process in agriculture is very fast.Infact commercialization in agriculture is not a new phenomenon still rapid growth of urbanization, introduction of new technologies LPG, policies, market liberalization etc. have been influenced on commercialization of agriculture.

"Now agriculture has began to be influenced by commercial consideration certain specialized crops began to be grown not only for consumption in the village but also for selling purposes at domestic & international market. Commercial crops like cotton, jute, groundnuts, oilseeds, sugarcane, tobacco & rubber."

Considering to the country like India. Where commercialization process reached at the highest level of development in the plantation of rubber which is produced for sale in market at domestic & international level.

In India Kerala, Karnataka, Tamilnadu.These are the major states of production of rubber having a maximum share in the production of rubber plantation similarly a small cultivation of rubber is also being promoted in some states like Maharashtra, Mizoram, Manipur, Nagaland, & Orissa.

Here in this research paper the researcher wants to highlight that what is trend of rubber production in India? Contribution given by major states in the productionof rubber within the country.

Objectives of the study:-

1) To find the economic importance of rubber production in trade.
2) To recognize a current position of rubber production in the country.
3) To analysis a trade position of rubber in the country.
4) To suggest remedies related to the growth of rubber trade in the country.

Hypothesis:-

1) India plays a pivotal role in the world's production of rubber.
2) Rubber production has a wide scope in a trade at domestic & international market.
3) Kerala state has monopoly in rubber production in the country.

History of Rubber Production in India:-

There are many countries in the world like Thailand, Indonesia, Malaysia, Srilanka, Vietnam who contribute a significant role in the production of rubber. Thailand is world's largest producer & exporter of rubber having 35% share in total world's output of rubber.

"India is also having a historical background in rubber production. Natural rubber was introduced by Britishers in 1873 at botanical gardens, Calcutta. The first commercial havea plantations in India were established at Thattekadu in Kerala in 1902. The economic lite period of rubber trees in plantations is around 32 years. Rubber cannot be planted in all areas."

Now a days in India the plantation of rubber product has been continuously increasingspecially Kerala, Tamilnadu& Karnataka states are having very good & suitable weather condition for the plantation of rubber on large scale.

Economic Importance of Rubber:-

India is the Fourth largest producer of rubber next to Malaysia in the world having 9 % share in the total world's output of rubber. We should strongly notice that India & China both have the capacity to consume the entire indigenous production of natural rubber at country level & world level rubber is considered an important plant not only for the world's economic strategies but also for the use of living of humankind.

Natural latex is a raw material which is useful to produce tyres of motors & vehicles, Kitchenware & housewares. It is said that today a life of people

Rubber trees in India including seeds & plantation are beneficial five year the areaof cultivation will be found double.

Natural Rubber Producing Countries In the world:-

Sr.No	Country	Share of production in Rubber
1	Thiland	35%
2	Indonesia	26%
3	Malaysia	12%
4	India	9%
5	Vietnam	6%
6	China	5%
7	srilanka	1%

Source:– www.Anrpc.org .KCTL Research.

As per above scheduled , it observed that Thailand is the world's largest producer country in rubber production having 35% share in total rubber output of the world followed by Indonesia. However, India is at 4th rank in the rubber thwider scope in our country to increase rubber production.

Rubber Production in India:-

In India there is very good scope for the plantation & production a rubber.During 45 years in the country, the area of production of rubber has increased from 56,000 hector to 3,65,000 hector. Whole the production has grown from 15,800 tons to 5,50,000 tons at an average annual rate of 72%. Kerala is the state in country having almost monopoly in rubber production accounting for 94% of the country's output. Next to Kerala, Karnataka, Mizoram, Thailand, they are also having 2 to 3% share in the rubber production.

Sate wise production of rubber in the country is shown below:-

Sr. No.	State	Total Share in the production of rubber
1	**Kerala**	**94%**
2	**Tamilnadu**	**3%**
3	**Karnataka**	**2%**
4	**Other states**	**1%**

Rubber Consumption in India:-

It shows a tendency of consumption percentage wise and sector wise given below.

Consumption Percentage

Consumption	Percentage
Automotive type sector	50
Bicycle tire tubes	15
Footwear	12
Belts & hoses	06
Latex product	07
Other products	10
Total	**100**

Source: –Rubber Board India.

Import & Export Trends of Rubber Production in India :-

It shows ups & down in the position of Export-Import trade in rubber right from 2004 up to 2010. For 2010 In India Natural rubber production increased by 9% while consumption is extended by 7%.

Natural Rubber Balanced Sheet in India (in tons)

Year	Production	Import	Total Supply	Export	Total
2004	743	73	939	71	939
2005	772	71	966	60	966
2006	861	50	1028	71	1028
2007	811	119	1072	29	1072
2008	881	93	1166	77	1166
2009	820	157	1185	16	1185
2010	895	83	1242	51	1242

Source:-www.anrpc.org.kctl.research.

References :-

1. Dr. Baby K., "commercialization of agriculture rubber plantation,"Kurukshetra, Vol. 63, January – 2015, Page No. 17-18.
2. HameeduShahul M., "Role of rubber producer's societies in Kerala, Volume 2, Feb-2014, Page No. 159,160.
3. Rubber seasonal report, Sep – 2010.
4. ANPRC Bulleting Natural rubber trends and statistic- Vol. 2, No -12, December – 2010.
5. www.onrpc.org.kctl.research.

This document was created with the Win2PDF “Print to PDF” printer available at

https://www.win2pdf.com

This version of Win2PDF 10 is for evaluation and non-commercial use only.
Visit https://www.win2pdf.com/trial/ for a 30 day trial license.

This page will not be added after purchasing Win2PDF.

https://www.win2pdf.com/purchase/

Peer Reviewed Refereed and
UGC Listed Journal No. 47100

ISSN - 2279 - 0489

AN INTERNATIONAL
MULTIDISCIPLINARY
HALF YEARLY
RESEARCH JOURNAL

GENIUS

Volume - XI, Issue - II,
February - July - 2023
English Part - I

IMPACT FACTOR / INDEXING
2020 - 6.538
www.sjifactor.com

Ajanta Prakashan

ISSN - 2279 - 0489

AN INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY
HALF YEARLY RESEARCH JOURNAL

GENIUS

Volume - XI Issue - II February - July - 2023

ENGLISH PART - I

Peer Reviewed Refereed and UGC Listed Journal No. 47100

ज्ञान-विज्ञान विमुक्तये

IMPACT FACTOR / INDEXING
2020 - 6.538
www.sjifactor.com

❖ EDITOR ❖
Asst. Prof. Vinay Shankarrao Hatole
M.Sc (Maths), M.B.A. (Mktg.), M.B.A. (H.R.),
M.Drama (Acting), M.Drama (Prod. & Dir.), M.Ed.

❖ PUBLISHED BY ❖
Ajanta Prakashan
Aurangabad. (M.S.)

The information and views expressed and the research content published in this journal, the sole responsibility lies entirely with the author(s) and does not reflect the official opinion of the Editorial Board, Advisory Committee and the Editor in Chief of the Journal **"GENIUS"**. Owner, printer & publisher Vinay S. Hatole has printed this journal at Ajanta Computer and Printers, Jaisingpura, University Gate, Aurangabad, also Published the same at Aurangabad.

Printed by

Ajanta Computer, Near University Gate, Jaisingpura, Aurangabad. (M.S.)

Pubished by

Ajanta Prakashan, Near University Gate, Jaisingpura, Aurangabad. (M.S.)

Cell No. : 9579260877, 9822620877 Ph. No. : (0240) 2400877

E-mail : ajanta3535@gmail.com, www.ajantaprakashan.com

GENIUS - ISSN 2279 - 0489 - Impact Factor - 6.538 **(www.sjifactor.com)**

EDITORIAL BOARD

Dr. S. Umesha
Dept. Of Studies in Biotechnology, University of Mysore, Manasagangotri, Mysore, India.

Dr. Tharanikkarasu K.
Dept. Of Chemistry, Pondicherry University (Central University), Kalapet, Puducherry, India.

Professor Kaiser Haq
Dept. of English, University of Dhaka, Dhaka 1000, Bangladesh.

Dr. Altaf Husain Pandit
Dept. of Chemistry University of Kashmir, Kashmir, India.

Dr. Deepak Sinkar
Assistant Professor, Department of Visual Art, PLC- State University of Performing and Visual Arts, Rohtak Haryana.

Prof. P. N. Gajjar
Head, Dept. Of Physics, University School of Sciences, Gujarat University, Ahmedabad, India.

Dr. Uday P. Dongare
Head, Dept. Of Physical Education, Shivaji Art's, Commerce & Science College, Kannad, Aurangabad, India.

Roderick McCulloch
University of the Sunshine Coast, Locked Bag 4, Maroochydore DC, Queensland, 4558 Australia.

Dr. Mita Howladar
Assistant Professor, Calcutta Girls B. T. College Kolkata, West Bengal, India.

Brian Schiff
Brussels, Copenhagen, Madrid, Paris.

Dr. Prashant M. Dolia
Dept. Of Computer Science & Applications, Bhavnagar University, India.

Dr. Nicholas Ioannides
Senior Lecturer & Cisco Networking Academy Instructor, Faculty of Computing, North Campus, London Metropolitan University, 166-220 Holloway Road, London, N7 8DB, UK.

Dr. Ritu Sehgal
Assistant Professor, DAV Institute of Engineering and Technology, Jalandhar, Punjab.

Dr. K. B. Laghane
Dean. Faculty of Management Science.
Dean. Faculty of Commerce (Dr. B.A.M.U.)
Head Commerce Dept., Vivekanad College, Samarth Nager, Aurangabad, India.

Prof. Avinashi Kapoor
Head, Dept. Of Electronic Science, Dean, Faculty of Interdisciplinary Sciences, Chairman, Board of Research Studies, South Campus, University of Delhi, New Delhi, India.

Dr. Farhath Ali
Department of Education, Moulana Azad National Urdu University Hyderabad, T.S.

Dr. Hanumanthappa J.
Dept. Of Studies In Computer Science, University of Mysore, Manasagangotri, Mysore-570 006, Karnataka, India.

Dr. Asharf Fetoh Eata
College of Arts or Science Salmau Bin Adbul Aziz University, KAS.

EDITORIAL BOARD

Dr. Kailas Thombre
Research Guide, Dept .of Economics
Deogiri College, Aurangabad, India.

Dr. Isita Lahiri
Dept. of Business Administration,
University of Kalyani, Kalyani West Bengal.

Dr. Nirmala S. Padmavat
Assit. Prof. English Dept. Nutan Mahavidyalaya,
Selu, Dist: Parbhani

Dr. Lalit Gopal
Assistant Professor, Department of Design,
BBK DAV College for Women, Amritsar. (Punjab)

Dr. S. B. Karande
I/C Principal,
Gokhale Education Society's
Shri. Bhausaheb Vartak Arts, Commerce &
Science College, Borivali (West), Mumbai

Dr. M. D. Auti
Vice Principal, Department of Commerce,
Gokhale Education Society's, Shri. Bhausaheb
Vartak Arts, Commerce & Science College,
Borivali (West), Mumbai.

Dr. Mrs. Sushila A. Yadav
Assistant Professor, Department of Sociology,
Gokhale Education Society's,
Shri. Bhausaheb Vartak Arts, Commerce &
Science College, Borivali (West), Mumbai.

Mr. Sachin P. Pawar
Assistant Professor, Department of Commerce,
Gokhale Education Society's,
Shri. Bhausaheb Vartak Arts, Commerce
& Science College, Borivali (West), Mumbai.

Mr. Mrunal B. Khobragade
Assistant Professor, Department of Economics,
Gokhale Education Society's, Shri. Bhausaheb
Vartak Arts, Commerce & Science College,
Borivali (West), Mumbai.

Mrs. Mini Rajan
Assistant Professor, Department of English,
Gokhale Education Society's,
Shri. Bhausaheb Vartak Arts, Commerce
& Science College, Borivali (West), Mumbai.

PUBLISHED BY

Ajanta Prakashan
Aurangabad. (M.S.)

CONTENTS OF ENGLISH PART - I

S. No.	Title & Author	Page No.
1	NEP 2020 and its Selected Aspects Related to Higher Education **Dr. S. B. Karande**	1-9
2	Quality in Higher Education : Need of Hour **Dr. Mahesh Dilip Auti**	10-15
3	Higher Education: Catalyst for Empowerment of women **Dr. Sushila A. Yadav**	16-20
4	Attainment of Higher Education: A Leap towards Women Empowerment in India **Dr. Salma Khan**	21-29
5	Salient Futures of New Education Policy-2020: Higher Education in India **Dr. Ankush Limbaji More**	30-37
6	Higher Education in Maharashtra: Present Scenario, Challenges and Opportunities **Dr. Jayeeta Datta**	38-45
7	Global Education : A challenge for the Indian Education System **Dr. Karuna V. Shinde**	46-49
8	Education Policy and Indian Education Scenario- Vision and Prospects **Dr. Rama Gandotra**	50-53
9	An Empirical Study on Academia-Industry Integration to Enhance Employability of Graduates **Dr. Maulik K Rathod**	54-62
10	New Education Policy 2020 Language: Importance and Functions **Dr. Jayashree L. Kadam**	63-72
11	Higher Education in the Field of Accounting in India **Nitin D. Sawant**	73-80
12	Impact of Library Facility on the Elderly Living in the Old Age Homes of Mumbai **Annu Baranwal** **Shashi Mishra**	81-86
13	A Study of Gender Inequality and Gender Gaps in Education **Gurpinder Kumar**	87-92

CONTENTS OF ENGLISH PART - I

S. No.	Title & Author	Page No.
14	In Vivo Study of Immunomodulatory Effect of Gmelina Arborea Roxb **Dr. Hina Q. Shaikh**	93-100
15	Is Sustainable Development Possible through Higher Education? **Mr. Atul Krishna Ghadge**	101-105
16	National Education Policy 2020: Transforming the Vision for Higher and Teacher Education in India **Mukesh Kumar** **Vijay Singh**	106-113
17	School Education and Higher Education for Sustainability **Neelofar** **Dr. G. Suneetha Bai**	114-120
18	Challenges and Opportunities in Rural Higher Educational Institutions in India **Pawan Kumar** **Dr. Kiran Kumar Pant**	121-125
19	Way Ahead for Higher Education in India with Reference to Perception of Higher Education in NEP 2020 **Sneha Santosh Kumar Mishra**	126-133

5. Salient Futures of New Education Policy-2020: Higher Education in India

Dr. Ankush Limbaji More
Professor & Head of Department UG & PG Department of Economics,
Sonubhau Baswant College of Arts & Commerce Shahapur, Dist. Thane. (M.S.)

Introduction

On July 29, 2020, Union Cabinet approved the National Education Policy (NEP) 2020, which is the first education policy of the 21st century and has replaced the 34 year old National Policy on Education (NPE), 1986. The foundational pillars of this educational policy are Access, Equity, Quality, Affordability and Accountability and align to the 2030 agenda for sustainable development. The policy aims to transform India into an energetic knowledge society and global knowledge superpower by making school and college education more holistic, flexible, multidisciplinary, suited to 21st century needs and aimed at bringing out the unique capabilities of each student.

The new policy is drafted on the recommendations made by a panel headed by former Indian Space Research Organization (ISRO) chief Mr K Kasturirangan, who had submitted the draft of the new policy to Human Resource Development Minister (Former) Mr Ramesh Pokhriyal 'Nishank' in May 2019. Over two lakh suggestions and objections were received to the draft policy by the Ministry. Union Cabinet also approved changing the name of Ministry of Human Resource Development (MHRD) to Ministry of Education.

Vision of New Education Policy-2020

This policy envisions an education system rooted in Indian ethos that contributes directly to transforming India, that is Bharat, sustainably into an equitable and vibrant knowledge society, by providing high-quality education to all, and thereby making India a global knowledge superpower.

The vision of the Policy is to instill among the learners a deep-rooted pride in being Indian, not only in thought, but also in spirit, intellect, and deeds, as well as to develop knowledge, skills, values, and dispositions that support responsible commitment to human rights, sustainable development and living, and global well-being, thereby reflecting a truly global citizen.

Higher Education in India &SalientFutures of New Education Policy-2020

1. Increase GER to 50 % by 2035

NEP 2020 aims to increase the Gross Enrolment Ratio in higher education including vocational education from 26.3% (2018) to 50% by 2035. 3.5 Crore new seats will be added to Higher education institutions.

2. Holistic Multidisciplinary Education

The policy envisages a broad-based multi-disciplinary holistic education at the undergraduate level for integrated, rigorous exposure to science, arts, humanities, mathematics and professional fields having imaginative and flexible curricular structures, creative combinations of study, integration of vocational education and multiple entry/exit points. A holistic and multidisciplinary education will help develop well-rounded individuals who possess critical 21st century capacities in fields across the arts, humanities, languages, sciences, social sciences, and professional, technical, and vocational fields; an ethic of social engagement; soft skills, such as communication, discussion and debate; and rigorous specialization in a chosen field or fields. Such a holistic education shall be, in the long term, the approach of all undergraduate programmes, including those in professional, technical, and vocational disciplines.

The undergraduate degree will be of either 3 or 4-year duration, with multiple exit options within this period, with appropriate certifications- a certificate after completing 1 year in a discipline or field including vocational and professional areas, or a diploma after 2 years of study, or a Bachelor's degree after a 3-year programme. The 4-year multidisciplinary Bachelor's programme shall be the preferred option since it allows the opportunity to experience the full range of holistic and multidisciplinary education in addition to a focus on the chosen major and minors as per the choices of the student.

An Academic Bank of Credit (ABC) shall be established which would digitally store the academic credits earned from various recognized HEIs so that the degrees from an HEI can be awarded taking into account credits earned.

Model public universities for holistic and multidisciplinary education, Multidisciplinary Education and Research Universities (MERUs) will be set up and will aim to attain the highest standards for multidisciplinary education across India.

A number of initiatives will be taken to ensure optimal learning environments are created that are engaging and supportive, and enable all students to succeed. All institutions and faculty will have the autonomy to innovate on matters of curriculum, pedagogy, and assessment within a

broad framework of higher education qualifications that ensures consistency across institutions and programmes and across the ODL, online, and the traditional 'in-class' modes. HEIs shall move to a criterion-based grading system that assesses student achievement based on the learning goals for each programme, and also move away from high-stakes examinations towards more continuous and comprehensive evaluation.

Universities and colleges will set up high-quality support centres and will be given adequate funds and academic resources to encourage and support students from socio-economically disadvantaged backgrounds. Professional academic and career counselling will be available to all students, as well as counsellor to ensure physical, psychological and emotional well-being.

3. Rationalized Institutional Architecture

A new vision and architecture for higher education has been envisaged with large, well-resourced, vibrant multidisciplinary institutions. Higher Education Institutions will be transformed into large multidisciplinary universities, colleges, and HEI clusters/Knowledge Hubs, each of which will aim to have 3,000 or more students. A university will mean a multidisciplinary institution of higher learning that offers undergraduate and graduate programmes, with high quality teaching, research, and community engagement. The definition of university will allow a spectrum of institutions that range from Research intensive Universities, Teaching-intensive Universities and Autonomous degree granting Colleges (ACs). The system of affiliation will be phased out over 15 years and a stage-wise mechanism for granting graded autonomy to colleges, through a transparent system of graded accreditation, will be established. Over a period of time, it is envisaged that every college would develop into either an Autonomous degreegranting College, or a constituent college of a university.

4. National Research Foundation (NRF)

A new entity will be set up to catalyze and expand research and innovation across the country. The overarching goal of the NRF will be to enable a culture of research to permeate through our universities, helping to develop a culture of research in the country through suitable incentives for and recognition of outstanding research, and by undertaking major initiatives to seed and grow research at State Universities and other public institutions where research capability is currently limited. The NRF will competitively fund research in all disciplines. Successful research will be recognized, and where relevant, implemented through close linkages with governmental agencies as well as with industry and private/philanthropic organizations.

5. Financial Support for Students

Efforts will be made to incentive the merit of students belonging to SC, ST, OBC, and other SEDGs. The National Scholarship Portal will be expanded to support, foster, and track the progress of students receiving scholarships. Private HEIs will be encouraged to offer larger numbers of free ships and scholarships to their students.

6. Open and Distance Learning

Open and distance learningwill be expanded, thereby playing a significant role in increasing the Gross Enrolment Ratio to 50%. Measures such as online courses and digital repositories, funding for research, improved student services, credit-based recognition of MOOCs, etc., will be taken to ensure it is at par with the highest quality in-class programmes.

7. Internationalization of Education

Internationalization of education will be facilitated through both institutional collaborations, and student and faculty mobility and allowing entry of top world ranked Universities to open campuses in our country.

8. Motivated, Energized and Capable Faculty

NEP 2020 recognizes that the success of higher education institutions is the quality and engagement of its faculty. HEIs will have clearly defined, independent, and transparent processes and criteria for faculty recruitment. Faculty will be given the freedom to design their own curricular and pedagogical approaches within the approved framework. Excellence will be further incentive through appropriate rewards, promotions, recognition, and movement into institutional leadership. Faculty not delivering on basic norms will be held accountable.

9. Effective Governance and Leadership in HEIs

Through a suitable system of graded accreditation and graded autonomy, and in a phased manner over a period of 15 years, all HEIs in India will aim to become independent self-governing institutions pursuing innovation and excellence.

Measures will be taken at all HEIs to ensure leadership of the highest quality and promote an institutional culture of excellence. Institutional governance based on autonomy-academic, administrative and financial -is envisioned with each higher education institution having an Board of Governors. All leadership positions and Head of institutions will be offered to persons with high academic qualifications and demonstrated administrative and leadership capabilities along with abilities to manage complex situations.

10. Regulation

There will be a single overarching umbrella body for promotion of higher education- the Higher Education Commission of India (HECI)- with independent bodies for standard setting- the General Education Council; funding-Higher Education Grants Council (HEGC); accreditation- National Accreditation Council (NAC); and regulation- National Higher Education Regulatory Council (NHERC). Regulation will be 'light but tight' to ensure financial probity and public-spiritedness to eliminate conflicts of interest with transparent self-disclosure as the norm not an inspectorial regime. The regulatory body will function through a faceless intervention through technology for regulation & will have powers to penalize HEIs not conforming to norms and standards. Public and private higher education institutions will be governed by the same set of norms for regulation, accreditation and academic standards.

11. Teacher Education

The 4-year integrated stage-specific, subject- specific Bachelor of Education offered at multidisciplinary institutions would be the way forward. A new and comprehensive National Curriculum Framework for Teacher Education, NCFTE 2021, will be formulated by the NCTE in consultation with NCERT. By 2030, the minimum degree qualification for teaching will be a 4-year integrated B.Ed. degree that teaches a range of knowledge content and pedagogy and includes strong practicum training in the form of student-teaching at local schools.Stringent action will be taken against substandard stand-alone Teacher Education Institutions (TEIs).

12. National Mission for Mentoring

A National Mission for Mentoring shall be established, with a large pool of outstanding senior/retired faculty – including those with the ability to teach in Indian languages-who would be willing to provide short and long-term mentoring/professional support to university/college teachers.

13. Professional Education

All professional education will be an integral part of the higher education system.Stand-alone technical universities, health science universities, legal and agricultural universities, or institutions in these or other fields, will aim to become multi-disciplinary institutions.

14. Technology in Education

An autonomous body, the National Educational Technology Forum (NETF), will be created to provide a platform for the free exchange of ideas on the use of technology to enhance learning, assessment, planning, administration. Appropriate integration of technology intoall levels of education will be done to improve classroom processes, support teacher professional

development, enhance educational access for disadvantaged groups and streamline educational planning, administration and management. Technology-based education platforms, such as DIKSHA/SWAYAM, will be better integrated across school and higher education. HEIs will play an active role in conducting research on disruptive technologies and in creating instructional materials and courses including online courses in cutting-edge domains.

15. Online Education and Digital Education

A comprehensive set of recommendations for promoting online education consequent in the recent rise in epidemics and pandemics in order to ensure preparedness with alternative modes of quality education whenever and wherever traditional and in-person modes of education are not possible, has been covered. A dedicated unit for the purpose of orchestrating the building of digital infrastructure, digital content and capacity building will be created in the MHRD to look after the e-education needs of both school and higher education.

16. Adult Education

The policy aims to achieve 100% youth and adult literacy by 2030.

17. Promotion of Indian Languages

To ensure the preservation, growth, and vibrancy of all Indian languages, several initiatives are envisaged. More HEIs, and more programmes in higher education, will use the mother tongue/local language as a medium of instruction, and/or offer programmes bilingually, in order to increase access and GER and also to promote the strength, usage, and vibrancy of all Indian languages. An Indian Institute of Translation and Interpretation (IITI) will be established. Sanskrit and all Indian language institutes and departments across the country will be significantly strengthened. National Institute (or Institutes) for Pali, Persian and Prakrit will be set up. Efforts to preserve and promote all Indian languages including classical, tribal and endangered languages will be undertaken.

18. Financing Education

Education is a public service and must not be a commercial activity or a source of profit. Multiple mechanisms with checks and balances will combat and stop the commercialization of higher education. All education institutions will be held to similar standards of audit and disclosure as a 'not for profit' entity. The Centre and the States will work together to increase the public investment in Education sector to reach 6% of GDP at the earliest.

19. The Central Advisory Board of Education

The Central Advisory Board of Education will be strengthened to ensure coordination to bring overall focus on quality education. The remodeled and rejuvenated CABE shall also be

responsible for developing, articulating, evaluating, and revising thevision of education in the country on a continuous basis, in close collaboration with MHRD and the corresponding apex bodies of States. It shall also create and continuously review the institutional frameworks that shall help attain this vision.

20. Ministry of Education

In order to bring the focus back on education and learning, it may be desirable to re-designate MHRD as the Ministry of Education (MoE).

Conclusion

Education is an essential and indispensable element for the all-round development of any society and country and a comprehensive national education policy is formulated by a nation to fulfill this requirement. The New National Education Policy, 2020, approved by the Government of India, is an important initiative in this direction. The success of this new education policy will depend on how it is implemented. Therefore, it can be said that India is the country with the youngest population and India's future will depend on providing high-quality educational opportunities to these youth.

A New National Education Policy was adopted by the Indian government recently because of the main loopholes which were present in the previous education policy. The new national education policy 2022 will provide a lot of individual attention to the students who have special needs and also education will be provided at all levels through the new educational policy presented by the Government of India. There are different benefits that will be provided to the people who are starting their admissions to Indian schools after the introduction of the National Education Policy 2022. The stages of education in India are also renovated in the new education policy and these new stages are definitely complimenting the latest educational trends around the world.

References

1. Aithal, P. S. & Aithal, Shubhrajyotsna (2019): Analysis of Higher Education in Indian National Education Policy Proposal 2019 and its Implementation Challenges. International Journal of Applied Engineering and Management Letters (IJAEML), 3(2), 1-35. DOI: http://doi.org/10.5281/Zenodo.3271330.
2. Aithal, P. S. & Shubhrajyotsna Aithal (2019): Building World-Class Universities : Some Insights & Predictions. International Journal of Management, Technology, and Social Sciences (IJMTS), 4(2), 13-35. DOI: http://doi.org/10.5281/zenodo.3377097.

3. Bowen, G. A. (2009): Document analysis as a qualitative research method. Qualitative 13 Research Journal, 9(2), 27-40. https://doi:10.3316/QRJ0902027.
4. Draft National Education Policy 2019 (2019): https://innovate.mygov.in/wpcontent/uplo ads/2019/06/mygov15596510111.
5. GOI(1968): National Education Policy, 1968. https://web.archive.org/web/ 20090731002808/http://www.education.nic.in/policy/npe-1968.pdf.
6. GOI (1986): National Education Policy, 1986. https://web.archive.org/web/ 20090619075631/http://education.nic.in/c d50years/g/T/49/0T490401.htm.
7. IGNOU (1985): The Indira Gandhi National Open University Act 1985 (No. 50 of 1985).http://www.ignou.ac.in/userfiles/I GNOU_ACT(Amended%20till%2024_09_1 9).pdf.
8. Kumar, K. (2005): Quality of Education at the Beginning of the 21st Century: Lessons from India. Indian Educational Review, 40(1), 3-28.
9. National Education Policy 2020 (2020): https://www.mhrd.gov.in/sites/upload_file s/mhrd/files/nep/ NEP_Final_English.pdf referred on 10/08/2020.
10. Rizvi, F., & Lingard, B. (2009): Globalizing Education Policy. Routledge.
11. Simão, A. M. V., & Flores, M. A. (2010): Student-centred methods in higher education: Implications for student learning and professional development. The International Journal of Learning, 17(2), 207-218.

CONTACT FOR SUBSCRIPTION

AJANTA ISO 9001 : 2015 QMS/ISBN/ISSN
Vinay S. Hatole
Jaisingpura, Near University Gate, Aurangabad (M.S) 431 004,
Cell : 9579260877, 9822620877 Ph: 0240 - 2400877
E-mail : ajanta3535@gmail.com Website : www.ajantaprakashan.com